

हमफिरे के

एतराफ़ात

मिस्टर हमफिरे

रजवी किताब घर दिल्ली-6

राजसी किताब घर

हमफिरे के एतेराफात

हमफिरे के एतेराफात



मिस्टर हमफिरे

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

उनवान	सफा
हिजाब उठता है.....1	5
हिजाब उठता है.....2	13
हिजाब उठता है.....3	22
हिजाब उठता है.....4	29
हिजाब उठता है.....5	47
हिजाब उठता है.....6	57
हिजाब उठता है.....7	85

(1)

मुद्दतो हुकूमते बर्तानिया अपनी अजीम और मजबूत नौ आबादियों (मकबूजा इलाकों) के बारे में फिक्रमंद रही और उसकी सल्तनत के हुदूब ने इतनी घुसअत इख्तोयार की कि अब वहां सूरज भी गुरुब नहीं होता था लेकिन हिंदुस्तान, चीन और मशिरके युस्ता के ममालिक और दीगर बेशुमार नौ आबादियों के होते हुए भी जजीरए बर्तानिया बहुत छोटा दिखाई देता था। हुकूमते बर्तानिया की साम्राजी पालीसी भी हर मुल्क में एक ही तरह की नहीं है। बाज ममालिक में हुकूमत की बाग डोर ज़ाहिरन वहां के लोगों के हाथ में है लेकिन दर पर्दा पूरा साम्राजी निजाम कार फरमा है और अब इसमें कोई कसर बाकी नहीं है कि वह ममालिक अपनी ज़ाहिरी आज़ादी खोकर बर्तानिया की गोद में चले आयें। अब हम पर लाज़िम है कि हम अपने नौ आबादयाती निजाम पर नज़रे सानी करें और खास तौर से दो बातों पर लाज़मी तवज्जो दें।

१. ऐसी तदबीरें इख्तोयार करें जो सल्तनते इंगलिस्तान की नौ आबादियों में उसके अमल दखल और कब्जे को मजबूत करें।

२. ऐसे प्रोग्राम मुरत्तब करें जिनसे उन इलाकों पर हमारा असर व रुसूख कायम हो जो अभी हमारे नौ आबादयाती निजाम का शिकार नहीं हुए हैं।

इंगलिस्तान की नौ आबादयाती इलाकों की बज़ारत ने इन प्रोग्रामों को अमल लाने के लिये इस बात की ज़रूरत महसूस की कि वह नौ आबादयाती या नीम नौ आबादयाती इलाकों में जासूसी और इत्तेलआत हासिल करने के लिये वफूद रवाना करे। मैंने नौ आबादयाती इलाकों की बज़ारत में मुलाजमेत के शुरू ही से अच्छी कार कर्दगी का मुज़ाहिरा किया। खास तौर पर "ईस्ट इंडिया कंपनी" के कामों की जांच पड़ताल के सिलसिले में अच्छी कार कर्दगी ने मुझे बज़ारते

सुझावों में एक अच्छे मोहदे पर कायम किया। यह कंपनी इंग्लैंड
लिजबर्ली नौदल की थी मगर इकीकत में जम्हूरी का बंदबाग
और इसके कवाम का मकसद हिंदुस्तान में उन सूरतों या उन राज्यों
की सलाह थी जिनके जरिये इस सरजमीन पर मुकम्मल तौर पर
बताविक का असर व मुहूर्त कायम हो सके और परिके दुस्तक पर
उसकी निरपत्त भजभूत की जा सके।

उन दिनों इंग्लिस्तान की हुकूमत हिंदुस्तान से बड़ी मुताबिक
और बकिक थी क्योंकि कौमी, कवायली, मजहबी और सकारण
इस्तेलाफत परिके दुस्तक के रहने वालों को इस बात की फुरसद हो
कहा देते थे कि यह इंग्लिस्तान के जावज असर व रुसूख के
फिलक कोई सुरिस बरपा कर सकें। यही हाल चीन की सरजमीन
का भी था। दुब और कन्कयुशिस जैसे मुर्दा मजहबों के पैरोकारों की
सत्क से भी अंग्रेजों को कोई खतरा नहीं था और हिंद व चीन में
कसरत से आपसी बुनियादी इस्तेलाफत के पैरो नजर यह बात सोच
से परे थी कि यहां के रहने वालों को अपनी आजादी और इस्तिकलाल
की फिक हो। यही वह एक उनवान था जो कभी उनके लिये काबिले
तवज्जोह नहीं रहा। ताहम यह सोचना भी बेवकूफी है कि आइंदा के
पैरो नजर इस्तेलाफत भी इन कौमों को अपनी तरफ मुतावज्जोह नहीं
करने। फिर यह बात सामने आई कि ऐसी तदाबीर इस्तेलाफत की जार्य
जिनसे इन कौमों में बेदारी की सलाहियत खत्म हो जाये। यह तदाबीर
लंबी मुरत के प्रोग्रामों की सूरत में उन सरजमीनों पर जारी हुए जो
तमाम के तमाम इस्तेलाफ, जहालत, बीमारी और मुरबत की बुनियाद
पर कायम थे। हमने इन इलाकों के लोगों पर इन मुसीबतों और बंद
बकियतों को कारिद करते हुए बुद्ध भक्त की इस कहावत को अपनाया
जिसमें कहा गया है-

बीमार को उसके अपने हात पर छोड़ दो और सब का दामन
हथ में न जाने दो विल आखिर वह दवा को पूरी कड़वाहट के
सावजूद पसंद करने लगेगा।

हमने मान्यता दी है कि अपने दूसरे हीसाब वाली सामान्यता के अन्तर्गत ही कार्य करारवादी यह अपने फायदे में समझकर कार्य लिये थे फिर भी जो आबादिवादी इलाकों की सज्जद के नज़रिये का कहना था कि एक सदी के अंदर ही इस सामान्यता का पालन हो सकता है। हमने इसी तरह ईरान से मुस्लिमिक करारवादी पर दखलदारी लिये। हमारे आसुत इस्लामी मुल्कों में उम्मादियों और इसी तरह ईरानियों के बारे अन्तर सर नम अन्तर रहे और बावजूद इसके कि उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के नज़रिये में मुस्लिमिक करारवादी इस्लाम की और एकतरफ़ों के विचार को विचार कर रिश्ता बतानी आम कर की, बावजूदों के लिये ऐश व इस्लाम के सामान्य करारवादी लिये और इस तरह इन हुकूमतों की मुनियादों को किसी हद तक बढ़ने से रोकना हिता दिया फिर भी ताहम उम्मादी और ईरानी सज्जदवादी की कमजोरी को सामने रखते हुए भी ज़ेल में आन लिये जाने वाले बाज बज्जद की बिना पर हम अपने हक में कुछ ज्यादा मुल्मईन नहीं थे और वह अहम तरीन बज्जद यह थे -

१. लोगों में इस्लाम की हकीकी सह का अन्तर व मुल्मईन जिसने उन्हें बहादुर, बेबाक और पुर अज़म बना दिया था और यह कहना बेजा न होगा कि एक आम मुसलमान मजहबी मुनियादों पर एक पादरी का हम पल्ला था। यह लोग किसी सुरत भी अपने मजहब से अलग नहीं होते थे। मुसलमानों में शिया मजहब के पैरोकार जिनका तअल्लुक ईरान की सरजमीन से है, अकीदे और ईमान के ऐतेबार से ज्यादा मोहकम और ज्यादा खतरनाक पाकेंय हुए हैं। शिया सज्जद ईसाईयों को नज़िह और क़फ़िर मुल्मईन समझते हैं। उनके मजहबीक एक ईसाई ऐसी बदनूदार ग़िलाजत की हिसियत रखता है जिसे अपने दर्गियान से हटाना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है। एक टका मने एक मुसलमान शिया से पूछा-

“तुम लोग नकारा को हकारत की निग़ह से क्यों देखते हो, हालांकि यह लोग खुदा, रसूल और रोज़े क़यामत पर ईमान रखते हैं?”

उसने जवाब दिया :

“हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलेहि वसल्लम साहबे इल्म और साहबे हिकमत पैगम्बर थे, और वह चाहते थे कि इस अंदाज से काफिरों पर दबाव डालें कि वह दीने इस्लाम कुबूल करने पर मजबूर हो जायें।”

सियासी मैदान में भी जब कभी हुकूमतों को किसी फर्द या गरोह से खटका होता है तो वह अपने हरीफ पर सख्तियां करती हैं और उसे रास्ते से हटने पर मजबूर करती हैं ताकि बिल आखिर वह अपनी मुखालिफतों से बाज़ आ जाये और अपना सर झुका दे। ईसाईयों के नजिस और नापाक होने से मुराद उनकी ज़ाहिरी नापाकी नहीं बल्कि बातिनी नापाकी है और यह बात सिर्फ ईसाईयों ही तक महदूद नहीं है बल्कि इसमें ज़र तशती भी शामिल हैं जो कौमी ऐतेबार से ईरानी हैं, इस्लाम इन्हें भी नापाक समझता है।

मैंने कहा-

अच्छा! मगर ईसाई तो खुदा रसूल और आखिरत पर ईमान रखते हैं?

उसने जवाब दिया-

हमारे पास उन्हें काफिर और नजिस मानने के लिये दो दलीलें हैं। पहली दलील तो यह है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नहीं मानते, और कहते हैं कि मुहम्मद (नाऊजूबिल्लाह) झूटे हैं, हम भी उनके जवाब में कहते हैं कि तुम लोग नापाक और नजिस हो और यह तअल्लुक अक्ल की बुनियाद पर है। क्योंकि जो तुम्हें दुख पहुंचाये तुम भी उसे तकलीफ दो।

दूसरे यह कि ईसाई अंबियाए मुरसलीन पर झूटी तोहमतें बांधते हैं जो खुद एक बड़ा गुनाह और उनकी बे हुरमती है। मसलन

वह कहते हैं-

हजरत ईसा (नाऊजूबिल्लाह) शराब पीते थे, इसलिये लानते इलाही में गिरफ्तार हुए और उन्हें सूली दी गयी।

मुझे इस बात पर बड़ा ताव आया और मैंने कहा-

“ईसाई हरगिज यह नहीं कहते।”

उसने कहा-

“तुम नहीं जानते, ‘कित्ताबे मुकद्दस’ में यह तमाम तोहमतें बारिद हैं।”

इसके बाद उसने कुछ नहीं कहा और मुझे यकीन था कि वह झूट बोल रहा है। अगरचे मैंने सुना था कि बाज़ अफराद ने पैगम्बरे इस्लाम पर झूट की निसबत दी है लेकिन मैं इससे ज्यादा बहस नहीं करना चाहता था। मुझे खौफ था कि कहीं मेरा भांडा न फूट जाये और लोग मेरी असलियत से वाकिफ न हो जायें।

2. मजहबे इस्लाम तारीखी पस मंजरों की बुनियाद पर एक आजादी पसंद मजहब है और इस्लाम के सच्चे पैरोकार आसानी के साथ गुलामी कुबूल नहीं करते। उनके पूरे वजूद में गुज़िश्ता अजमतों का गुरुर समाया हुआ है यहां तक कि अपने इस कमजोरी और पुर फुतूर दौर में भी वह इससे अलग होने पर तैयार नहीं हैं। हम इस बात पर कादिर नहीं हैं कि तारीखे इस्लाम की मनमानी तफ्सीर पेश करके उन्हें यह बतायें कि तुम्हारी गुज़िश्ता अजमतों की कामयाबी उन हालात पर मुनहसिर थी जो उस ज़माने का तकाज़ा था मगर अब ज़माना बदल चुका है और नये तकाज़ों ने उनकी जगह ले ली है और अब गुज़िश्ता दौर में वापसी नामुमकिन है।

3. हम ईरानी और उस्मानी हुकूमतों की दूर अंदेशियों, होशयारियों और कार्रवाईयों से महफूज़ नहीं थे और हर आन यह खटका था कि

कहीं वह हमारी साम्राजी पालीसियों से बाख़बर होकर हमारे किये के तरे पर पानी न फेर दें। यह दोनों हुकूमतें जैसा कि पहले ब्यान हो चुका है बहुत कमजोर हो चुकी थीं और इनका असर व रुसूख सिर्फ अपनी सरजमीन की हद तक महदूद था। वह सिर्फ अपने ही इलाक़े में हमारे खिलाफ़ असलहा और पैसा जमा कर सकते थे, ताहम उनकी बदगुमानी हमारी आइदा कामयाबियों के लिये अदमे इत्मीनान का सबब थी।

४. मुसलमान उलमा भी हमारी तशवीश का बाइस थे, जामिया अज़हर के मुफ़्ती और ईरान व ईराक़ के शिया मराजेअ हमारे साम्राजी मकासिद की राह में एक अजीम रुकावट थे। यह उलमा जदीद इल्म व तमदुन और नये हालात से यकसर बे ख़बर थे और उनकी तंहा तवज्जोह उस जन्नत के लिये थी जिसका वादा कुरआन ने उन्हें दे रखा था। यह लोग इस कदर तास्सुब पसंद थे कि अपने मोकिफ़ से एक इंच पीछे हटने को तैयार नहीं थे। बादशाह और अमीरों समेत तमाम अफ़राद उनके आगे छोटे थे। अहले सुन्नत हज़रात शियों की निसबत अपने उलमा से इस कदर ख़ौफ़जदा नहीं थे और हम देखते हैं कि उस्मानी सलतनत में बादशाह और शैख़ुल इस्लाम के दर्मियान हमेशा खुशगवार तअल्लुकात बरकरार रहे थे और उलमा का जोर सियासी हुक्काम के जोर के हम पल्ला था लेकिन शियई मुल्कों में लोग बादशाहों से ज़्यादा उलमा का एहतेराम करते थे। मज़हबी उलमा से उनका लगाव एक हकीकी लगाव था लेकिन हुक्काम या सलातीन को वह कुछ ज़्यादा अहमियत नहीं देते थे। बहरहाल सलातीन और उलमा की कदरदानी से मुतअल्लिक़ शिया और सुन्नी नज़रियात का यह फ़र्क़ नीआबादियाती इलाकों की वज़ारत और अंग्रेजी हुकूमत के फ़ितने में कमी का बाइस नहीं थी।

हमने कई बार इन मुल्कों के साथ आपस की पेचीदा दुश्वारियों

को दूर करने के सिलसिले में गुफ्तगू की लेकिन हमेशा हमारी गुफ्तगू ने बदगुमानी की सूरत इस्तेयार की और हमने अपना रास्ता बंद पाया। हमारे जासूसों और सियासी मिम्बरों की दरख्वास्तें भी पुराने मुजाकरात की तरह नाकाम रही लेकिन फिर भी हम ना उम्मीद नहीं हुए क्योंकि हम एक मजबूत और साबिर कल्ब के ममालिक हैं।

मुझे याद है कि एक दफा नौ आबादियाती इलाकों के वजीर ने लंदन के एक मशहूर पादरी और 25 दीगर मजहबी सरबराहों के साथ एक इजलास मुनअकिद किया जो पूरे तीन घंटे तक जारी रहा और जब यहां भी कोई मन चाहा नतीजा न निकल सका तो पादरी ने हाजिरीन से मुख़ातिब होकर कहा-

“आप लोग अपनी हिम्मतें कम न करें, सब और हीसले से काम लें, ईसाईयत तीन सौ साल की जहमतों और भटकने के साथ हज़रत ईसा और उनके पैरोकारों की शहादत के बाद आलमगीर हुई। मुमकिन है आइंदा हज़रत ईसा की नजरे इनायत हम पर हों और हम तीन सौ साल बाद काफ़िरों को निकालने में कामयाब हों। पस हम पर लाज़िम है कि हम अपने आपको पक्के ईमान और पायदार सब से आरास्ता करें और उन तमाम वसायल को इस्तेमाल लायें जो मुसलमान इलाकों में ईसाईयत को फैलाने का सबब हों। अगर इसमें हमें सदियों का अर्सा भी गुजर जाये तो घबराने की कोई बात नहीं। आबा व अजदाद अपनी औलाद के लिये बीज बोते हैं।

एक दफा फिर नौ आबादियाती इलाकों की वज़ारत में रूस, फ्रांस और बर्तानिया के आला रुत्बा नुमाइंदों पर मबनी कांफ्रेंस का इनएकाद हुआ। कांफ्रेंस के शुरका में सियासी वुफूद, मजहबी शख़्सियतें और दीगर मशहूर हरितयां शामिल थीं। हुस्ने इत्तेफ़ाक से मैं भी वजीर से करीबी ताल्लुकात की बिना पर इस कांफ्रेंस में शरीक था। मौजूए गुफ्तगू इस्लामी ममालिक में साम्राजी निज़ाम की तरवीज और इसमें पेश आने वाली दुश्वारियां था।

शुरका का गौर व फ़िक्र इस बात में था कि हम किस तरह

मुस्लिम ताकतों को दरहम बरहम कर सकते हैं और उनके दर्मियान निफाक का बीज बो सकते हैं। गुप्तगू उनके ईमान के तजलजुल के सिलसिले में थी। बाज लोगों का ख्याल था कि मुसलमानों को उसी तरह राहे रास्त पर लाया जा सकता है जिस तरह रयेन कई सदियों के बाद ईसाईयों की आगोश में चला आया था। क्या यह वही मुल्क नहीं था जिसे बहशी मुसलमानों ने फतह किया था? कांफ्रेंस के नतायज ज्यादा बाजेह नहीं थे। मैंने इस कांफ्रेंस में पेश आने वाले तमाम बाकियात को अपनी किताब अजीम मसीह की सम्त एक उड़ान में ब्यान कर दिया है।

हकीकतन मशिरक से मग़रब तक फैलाव रखने वाले अजीम और मजबूत दरख्त की जड़ों को काटना इतना आसान काम नहीं, फिर भी हमें हर कीमत पर इन दुश्वारियों का मुकाबला करना है क्योंकि ईसाई मजहब उसी वक्त कामयाब हो सकता है जब सारी दुनिया इसके कब्जे में आ जाये। हज़रत ईसा ने अपने सच्चे पैरोकारों को इस जहांगीरी की बशारत दी है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कामयाबी उन इज्तेमाई और तारीखी हालात से जुड़ी थी जो उस दौर का तकाज़ा था। ईरान व रोम से जुड़ी मशिरक व मग़रब की सलतनतों का कम होना दर असल बहुत कम अर्से में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कामयाबी का सबब बना। मुसलमानों ने इन अजीम सलतनतों को जेर किया, मगर अब हालात बिल्कुल मुख्तलिफ़ हो चुके हैं और इस्लामी ममालिक बड़ी तेज़ी से रु ब ज़वाल हैं और इसके मुकाबले में ईसाई रोज़ बरोज़ तरक्की की राह पर आगे बढ़ रहे हैं। अब वह वक्त आ गया है कि ईसाई मुसलमानों से अपना बदला चुकार्य और अपनी खोई हुई अजमत दोबारा हासिल करें। इस वक्त सबसे बड़ी ईसाई हुकूमत अजीम बर्तानिया के हाथ में है जो दुनिया के कोने कोने में अपना सिक्का जमाए हुए है और अब चाहता है कि इस्लामी ममलकतों से जंग लड़ने का परचम भी उसी के हाथ में हो।

(2)

सन् 1710 ई० में इंगलिस्तान की नौआबादयाती इलाकों की वजारत ने मुझे मिस्र, ईराक, ईरान, हिजाज और उस्मानी खिलाफत के मर्कज इस्तंबोल की जासूसी पर मामूर किया। मुझे इन इलाकों में वह राहें तलाश करनी थीं जिनसे मुसलमानों को दरहम बरहम करके मुस्लिम ममालिक में साम्राजी निजाम रायज किया जा सके। मेरे साथ नौ आबादियाती इलाकों की वजारत के नौ और बेहतरीन तर्जुबेकार जासूस इस्लामी ममालिक में इस काम पर मामूर थे और बड़ी मेहनत से अंग्रेज साम्राजी निजाम के गलबे और नौआबादयाती इलाकों में अपने असर व नुफूज की मजबूती के लिये सरगर्म अमल थे। इन वुफूद को बड़ी भिक्दार में सरमाया फराहम किया गया था। यह लोग बड़े मुरत्तिब शुदा नक्शे और बिल्कुल नई और ताजा इत्तेलाआत से बाकिफ थे। इनको अमीरों, वजीरों, हुकूमत के आला ओहदेदारों और उलमा व मालदारों के नामों की मुकम्मल फेहरिस्त दी गयी थी। नौआबादयाती इलाकों के मुआविन वजीर ने हमें रवाना करते हुए खुदा हाफिजी के वक्त जो बात कही वह आज भी मुझे अच्छी तरह याद है। उसने कहा था-

“तुम्हारी कामयाबी हमारे मुल्क के मुस्तकबिल की आइनादार होगी लिहाजा अपनी तमाम कुव्वतों को इस्तेमाल में लाओ ताकि कामयाबी तुम्हारे कदम चूमे।”

मैं खुशी खुशी बहरी जहाज के जरिये इस्तंबोल के लिये रवाना हुआ। मेरे जिम्मे अब दो अहम काम थे। पहले तुर्की जुबान पर महारत हासिल करना जो उन दिनों वहां की कौमी जुबान थी। मैंने लंदन में तुर्की जुबान के चंद अलफाज सीख लिये थे। इसके बाद मुझे अरबी जुबान, कुरआन, उसकी तफसीर और फिर फारसी सीखना थी। यहां यह बात भी काबिले जिक्र है कि किसी जुबान का सीखना और अदबी कवायद फसाहत और महारत के एतेबार से इस पर पूरी दस्तरस

रखना दो मुख्तलिफ चीजें हैं मुझे यह जिम्मेदारी सौंपी गयी थी कि मैं इन जुबानों में ऐसी महारत हासिल करूं कि मुझ में और वहां के लोगों में जुबान के एतेबार से कोई फर्क महसूस न हो। किसी जुबान को एक दो साल में सीखा जा सकता है लेकिन उस पर महारत हासिल करने के लिये बरसों का वक्त दरकार होता है। मैं इस बात पर मजबूर था कि इन गैर मुल्की जुबानों को इस तरह सीखूं कि इसके कवायद व रुभूज का कोई नुकता छूट न जाये और कोई मेरे तुर्क ईरानी या अरब होने पर शक न करे।

इन तमाम मुश्किलात के बावजूद मैं अपनी कामयाबी के सिलसिले में खीफ जदा नहीं था क्योंकि मैं मुसलमानों की तबीयत से वाकिफ था और जानता था कि उनकी कुशादा कल्बी, हुस्ने ज़न और मेहमान नवाज तबीयत जो इन्हें कुरआन व सुन्नत से विरसे में मिली थी उन्हें ईसाईयों की तरह बद गुमानी और बुरा समझने पर महमूल नहीं करेगी और फिर दूसरी तरफ से उस्मानी हुकूमत इतनी कमजोर हो चुकी थी कि अब उसके पास इंगलिस्तान और गैर मुल्की जासूसों की कारवाईयां मालूम करने का कोई जरिया नहीं था और ऐसा कोई इदारा मौजूद नहीं था जो हुकूमत को इन गैर जरूरी चीजों से बाख़बर कर सके। फरमां रवा और उसके मुसाहेबीन पूरे तौर पर कमजोर हो चुके थे।

कई महीने के थका देने वाले सफर के बाद आखिरकार हम उस्मानी दारुल खिलाफा में पहुंचे। जहाज से उतरने से पहले मैंने अपने लिये "मुहम्मद" का नाम तजवीज किया और जब मैं शहर की जामा मस्जिद में दाखिल हुआ तो वहां लोगों के इजतेमाआत, नज़म व जव्वल और सफाई सुथराई देखकर खुश हुआ और दिल ही दिल में कहा: आखिर क्यों हम इन पाक दिल अफ़राद से दुश्मनी कर रहे हैं? और क्यों इनसे इनकी आसाइश छीनने पर तुले हुए हैं? क्या हज़रत ईसा ने इस किस्म के नाशाइस्ता कामों की तजवीज दी है? लेकिन फौरन ही मैंने इन शैतानी वसवसों और बातिल ख्यालात को ज़ेहन से

झटक कर इस्तिगफार किया और मुझे ख्याल आया कि मैं तो बर्तानिया उज्जमा की नौ आबादयाली वजारत का मुलाजिम हूँ और मुझे अपने फरायज दयानतदारी से अंजाम देने चाहिये, और मुंह से लगाए हुए सागर को आखिरी घूंट तक पी जाना है।

शहर में दाखिले के फौरन ही मेरी मुलाकात अहले तसन्नून के एक बूढ़े पेशवा से हुई। उसका नाम अहमद आफन्दी था। वह एक बरजरस्ता, साहबे फजल और नेक तबीयत आलिम था। मैंने अपने पादरियों में ऐसी बुजुर्गवार हरती नहीं देखी थी। वह दिन रात इबादत में मशगूल रहता था और बुजुर्गी और बरतरी में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मानिंद था। वह रसूले खुदा को इस्तानियत का मजहरे कामिल समझता था और आप की सुन्नत को अपनी जिन्दगी का असली मकसद बनाये हुए था। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम आते ही उसकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लग जाती थी। शैख के साथ मुलाकात में मेरी एक खुश नसीबी यह भी थी कि उसने मुझसे एक दफा भी मेरे हसब नसब और खानदान के बारे में सवाल नहीं किया और हमेशा मुझे मुहम्मद आफन्दी के नाम से पुकारता था। जो कुछ मैं उससे पूछता था बड़े बकार और शराफत से जवाब देता था और मुझे बहुत चाहता था। खास तौर से जब उसे मालूम हुआ कि मैं परदेसी हूँ और इस उस्मानी सलतनत के लिये काम कर रहा हूँ जो पैगम्बर की जानशीन है तो मुझ पर और भी मेहरबान हो गया (यह वह झूट था जो मैंने इस्तंबोल में अपने कयाम की वजह ब्यान करते हुए शैख के सामने बोला था)।

इसके अलावा मैंने शैख से यह भी कहा था कि मैं बिन मां बाप का एक नौजवान हूँ। मेरे कोई बहन भाई नहीं हैं। मैं बिल्कुल अकेला हूँ लेकिन मेरे वालिदैन् ने विरसे में मेरे लिये बहुत कुछ छोड़ा है। मैंने इरादा किया है कि कुरआन और तुर्की और अरबी जुबान सीखने के लिये इस्लाम के मर्कज यानी इस्तंबोल का सफर इख्तियार करूँ और

फिर दीनी और मानवी सरमाया के हुसूल के बाद दुनियावी कारोबार में पैसा लगाऊँ। शैख अहमद ने मुझे मुबारकबाद दी और चंद वाले कहीं जिन्हें मैं अपनी नोटबुक से यहां नकल कर रहा हूँ-

ऐ नौजवान! मुझ पर तुम्हारा स्वागत और एहतेराम कई वजूहात की बिना पर लाजिम है और वह वजूहात यह हैं-

१. तुम एक मुसलमान हो और मुसलमान आपस में भाई भाई हैं।
२. तुम हमारे शहर में मेहमान हो, और पैगम्बर इस्लाम का इरशाद है- मेहमान को मोहतरम जानो।
३. तुम तालिबे इल्म हो और इस्लाम ने तालिबे इल्म के एहतेराम का हुक्म दिया है।

तुम हलाल रोजी कमाना चाहते हो और इस पर "कारोबार करने वाला अल्लाह का दोस्त है" की हदीस सादिक आती है।

इस पहली मुलाकात ही में शैख ने अपनी अच्छी आदतों की बुनियाद पर मुझे अपना आशिक बना लिया था। मैंने अपने दिल में कहा काश ईसाईयत भी इन खुली हकीकतों से आशना होती लेकिन दूसरी तरफ मैं यह देख रहा था कि इस्लामी शरीअत इतनी बुलंद निगाही और बुलंद मकामी के बावजूद रुब जवाल हो रही थी और इस्लामी हुक्मरानों की नालायकी, जुल्म व सितम, बद अतरवारी और फिर उलमाए दीन का तअस्सुब और दुनिया के हालात से उनकी बेखबरी उन्हें यह दिन दिखा रही थी। मैंने शैख से कहा-

"अगर आपकी इजाजत हो तो मैं आपसे अरबी जुबान और कुरआन मजीद सीखने का ख्वाहिशमंद हूँ।"

शैख ने मेरी हिम्मत अफजाई की और मेरी ख्वाहिश का इस्तिकबाल किया और सूर: हम्द को मेरे लिये पहला सबक करार दिया और बड़ी गर्मजोशी के साथ आयतों की तफसीर व तावील पेश की। मेरे लिये

बहुत से अरबी अल्फाज के तलफ्फूज दुश्वार थे और कभी यह दुश्वारी बहुत बढ़ जाती थी। वह बार बार मुझसे कहता था कि मैं अरबी इवारत इस तरह तुम्हें नहीं सिखाऊंगा तुम्हें हर मुश्किल लफ्ज को दस मर्तबा तकरार करना होगा ताकि अल्फाज तुम्हारे दिमाग में बैठ जायें।

शैख ने मुझे हरूफ को एक दूसरे से मिलाने के तरीके सिखाये। मुझे कुरआन की तजवीद व तफसीर सीखने में दो साल का अर्सा लगा। दर्स शुरू करने से पहले वह खुद भी वुजू करता था और मुझे भी वुजू करने का हुक्म देता था। फिर हम किब्ला रुख बैठ जाते थे और दर्स का आगाज होता था। यह बात भी काबिले जिक्र है कि इस्लाम में बदन के हिस्सों को एक खास तर्तीब से धोने का नाम वुजू है। इब्तेदा में मुंह धोया जाता है फिर पहले सीधे हाथ को उंगलियों और बाद में उलटे हाथ से कोहनी तक धोया जाता है। इसके बाद सर, गर्दन और कानों के पिछले हिस्से का मसह किया जाता है और आखिर में पैर धोए जाते हैं।

वुजू करते वक्त कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना मुस्तहब है। आदावे वुजू से पहले एक खुश्क लकड़ी से दांतों का मिस्वाक जो वहां की रस्म थी मेरे लिये बहुत नागवार थी और मैं समझता था कि यह खुश्क लकड़ी दांतों और मसूढ़ों के लिये इतेहाई नुक्सानदेह है। कभी कभी मेरे मसूढ़ों से खून भी जारी हो जाता था मगर मैं ऐसा करने पर मजबूर था क्योंकि वुजू से पहले मिस्वाक करना सुन्नते मोकिदा है और इसके लिये बहुत सवाब और फज़ीलत ब्यान की गयी है।

मैं इस्तंबोल में कयाम के दौरान रातों को एक मस्जिद में सो रहता था, और इसके बदले वहां के ख़ादिम को जिसका नाम मरवान आंफदी था कुछ रकम दे देता था। वह एक बंद अखलाक गुस्सा वर शख्स था और अपने आपको पैगम्बर इस्लाम के एक सहाबी का हम नाम समझता था और उस नाम पर बड़ा घमंड करता था एक बार उसने मुझसे कहा-

अगर कभी खुदा ने तुम्हें साहवे आलाद किया तो तुम अपने बेटे का नाम भरवान रखना क्योंकि इसका शुमार इस्लाम के अजीम मुजाहिदों में होता है।

रात का खाना मैं खादिम के साथ खाता था और जुमा का तमाम दिन जो मुसलमानों की ईद और छुट्टी का दिन था खादिम के साथ गुजारता था। हफ्ता के बाकी दिन एक बढ़ई की शार्गिंदी में काम करता था और वहां से मुझे एक हकीर सी रकम मिल जाया करती थी। मैं आधा दिन काम करता था क्योंकि शाम को मुझे शैख से दर्स लेना होता था इसलिये मेरी मजदूरी भी आधी होती थी। उस बढ़ई का नाम खालिद था। दोपहर को खाने के वक़्त वह हमेशा फातेहे इस्लाम 'खालिद बिन वलीद', का तजक़िरा करता था और उसके फज़ायल व मनाक़िब बयान करता था और उसे उन असहाय पैग़म्बर में मानता था जिनके हाथों मुख़ालेफीने इस्लाम ने हज़ीमत उठाई। हर बंद हज़रत उमर से उसके ताल्लुकात कुछ ज़्यादा मज़बूत न थे और उसे यह खटक़ा था कि अगर खिलाफ़त उन्हें मिली तो वह उसे ओहदे से हटा देंगे और ऐसा ही हुआ।

लेकिन खालिद बढ़ई अच्छे किरदार का हामिल न था, फिर भी अपने दीगर शार्गिंदों से कुछ ज़्यादा ही मुझ पर मेहरबान था जिसका सबब मुझे अब तक मालूम न हो सका। शायद इसलिये कि मैं बग़ैर हुज्जत के उसके हर काम को बजा लाता था और उससे मज़हबी उमूर या अपने काम के बारे में किसी किस्म का कोई बहस व मुबाहेसा नहीं करता था। कई बार दुकान खाली होने पर मैंने महसूस किया कि वह मुझे अच्छी नज़रों से नहीं देख रहा है। शैख़ अहमद ने मुझसे कहा था कि इग़लाम (बदफ़ेली) इस्लाम में बहुत बड़ा गुनाह है लेकिन फिर भी खालिद मुझसे इस फ़ेल के इतेंकाब पर ज़िद करता था।

वह दीन व दयानत का ज्यादा पाबंद नहीं था और हकीकत में सही अकीदे और सही ईमान का आदमी नहीं था। वह सिर्फ जुमा के जुमा नमाज़ पढ़ने मस्जिद में जाया करता था और बाकी दिनों में उसका नमाज़ पढ़ना मुझ पर साबित नहीं था। बरहहाल मैंने उसकी इस बे शर्माना उकसाने को रद्द किया लेकिन कुछ दिनों बाद उसने यह बुरा काम अपनी दुकान के एक और खूब रू कारीगर के साथ अंजाम दिया जो अभी नौ मुस्लिम था और यहूदियत से इस्लाम में आया हुआ था।

मैं रोज़ाना बड़ई की दुकान में दोपहर का खाना खाकर जुहर की नमाज़ के लिये मस्जिद में चला जाया करता था और वहां नमाज़े अस्र तक रहता था। अस्र की नमाज़ से फारिग होकर शैख अहमद के घर जाया करता था और वहां दो घंटे कुरआन ख्यानी में गुज़ारता था। कुरआन के अलावा अरबी और तुर्की जुबान भी सीखता था और हर जुमा को हफ़्ता भर की कमाई ज़कात के उन्वान से शैख अहमद के हवाले करता था और यह ज़कात हकीकत में शैख से मेरी इरादत और लगाव का एक नज़राना शैख के दर्से कुरआन का एक हकीर सा हक्कुल रहमा था। कुरआन की तालीम में शैख का तर्जें दर्स बे नजीर नौइयत का था। इसके अलावा वह मुझे इस्लामी अहकाम की बुनियादी बातें अरबी और तुर्की जुबान में सिखाता था।

जब शैख अहमद को मालूम हुआ कि मैं ग़ैर शादी शुदा हूं तो उसने मुझे शादी का मशवरा दिया और अपनी एक बेटी मेरे लिये मुन्तख़ब की लेकिन मैंने बड़े मोअद्बाना अंदाज़ से माज़रत चाही और अपने आपको शादी के नाकाबिल ज़ाहिर किया। मैं यह मौकिफ़ इस्तेयार करने पर मजबूर था क्योंकि शैख अहमद अपनी बात पर मुसिर था और हमारे तअल्लुकात बिगड़ने में कोई कसर बाकी नहीं रह गयी थी। शैख अहमद शादी को पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम की सुन्नत समझता था और इस हदीस का हवाला देता था-

“जो कोई मेरी सुन्नत से मुंह फेरे वह मुझसे नहीं है।”

लिहाजा इस बहाने के अलावा मेरे पास और कोई चारा नहीं था मेरे इस मसलेहत आमेज़ झूट ने शैख को मुतमईन कर दिया और फिर उसने शादी से मुतअल्लिक कोई गुफ्तगू नहीं की और हमारी दोस्ती फिर पहली मंजिल पर आ गयी।

दो साल इस्तंबोल में रहने और कुरआन समेत अरबी और तुर्की जुबानों को सीखने के बाद मैंने शैख से वापस वतन जाने की इजाजत चाही लेकिन शैख मुझे इजाजत नहीं देता था और कहता था कि तुम इतनी जल्दी क्यों वापस जाना चाहते हो? यह एक बड़ा शहर है, यहां तुम्हारी जरूरत की हर चीज़ मौजूद है। अल्लाह की मर्जी से इस्तंबोल में दीन और दुनिया दोनों दस्तयाब हैं। शैख ने अपनी गुफ्तगू के दौरान कहा-

“अब जबकि तुम अकेले हो और तुम्हारे मां बाप और बहन भाई कोई नहीं तो फिर तुम इस्तंबोल को अपना मसकन क्यों नहीं बनाते?”

बहरहाल शैख को मेरे वहां रहने पर बड़ा इसरार था। उसे मुझसे उन्स हो गया था मुझे भी उससे बहुत दिलचस्पी थी मगर अपने वतन इंग्लिस्तान के बारे में मुझ पर जो ज़िम्मेदारियां आयद थीं वह मेरे लिये सबसे ज़्यादा अहम थीं और मुझे लंदन जाने पर मजबूर कर रही थीं। मेरे लिये ज़रूरी था कि मैं लंदन जाकर नौआबादयाती इलाकों की वज़ारत को अपनी दो साला कारगुजारी की मुकम्मल रिपोर्ट पेश करूं और वहां से नये अहकामात हासिल करूं।

इस्तंबोल में दो साल की रिहाईश के दौरान मुझे उस्मानी हुकूमत

के हालात पर हर माह एक रिपोर्ट लंदन भेजनी पड़ती थी। मैंने अपनी एक रिपोर्ट में बद किरदार बढ़ई के उस वाक्य को भी लिखा था जो मेरे साथ पेश आया था। नौआबादयाती इलाकों की वजारत ने जवाब में मुझे यह हुक्म दिया। अगर तुम्हारे साथ बढ़ई का यह फेल हमारे लिये मंजिले मकसूद तक पहुंचने की राह को आसान बना देता है तो इस काम में कोई हरज नहीं। जब मैंने यह इबारत पढ़ी तो मेरा सर चकराने लगा और मैंने सोचा कि हमारे अफसरान को शर्म नहीं आती कि वह हुक्मत की मसलेहतों की खातिर मुझे इस बेशर्मी की तरगीब देते हैं। बहरहाल मेरे पास कोई चाराएकार नहीं था और होटों से लगाए हुए इस कड़वे जाम को आखिरी घूंट तक पी जाना था। फिर भी मैंने इस हुक्म का कोई नोटिस नहीं लिया और लंदन के आला ओहदेदारों की इस वे रुखी की किसी से शिकायत नहीं की। मुझे अलविदाअ कहते हुए शैख की आखों में आंसू भर आये और उसने मुझे इन अल्फाज के साथ रुखसत किया।

“खुदा हाफिज बेटे! मुझे मालूम है कि अब जब तुम लौटकर आओगे तो मुझे इस दुनिया में नहीं पाओगे। मुझे न मुलाना इंशाअल्लाह रोजे महशर पैगम्बरे इस्लाम के हुजूर हम एक दूसरे से मिलेंगे।”

दर हकीकत शैख अहमद की जुदाई से मैं एक अर्सा तक गमगीन रहा और उसके गम में मेरी आखें आंसू बहाती रही लेकिन क्या किया जा सकता था, फरायज की अंजाम देही जाती एहसासात से ऊपर है।

(3)

मेरे नौ दीगर साथियों को भी लंदन वापस बुलाया गया था मगर बंद किसमती से उनमें से सिर्फ पांच वापस लौटे थे बाकी मांदा चारा अफराद में से एक मुसलमान हो चुका था और वहीं मिश्र में रिहाईश पजीर था। इस बाकिये को नौआबादयाती इलाकों की वजारत के सेक्रेट्री ने मुझे बताया लेकिन वह इस बात से खुश था कि उस शख्स ने उनके किसी राज को अफशा नहीं किया था। दूसरा जासूस रूसी था और रूस पहुंचकर उसने वहीं बूद व बाश इख्तेयार कर ली थी। सेक्रेट्री उसके बारे में बड़ा फिक्रमंद था। उसे खटका था कि कहीं यह रूसी नजाद जासूस जो अब अपनी सर जमीन में पहुंच चुका है हमारे राज फाश न कर दे। तीसरा शख्स बगदाद के करीब बाकेंय 'अमारा' में हैजा से हलाक हो गया था और चौथे के बारे में कोई इत्तेलाअ मौसूल न हो सकी थी। नौआबादयाती इलाकों की वजारत को उसके बारे में उस वक्त तक इत्तेलाअ रही जब तक वह यमन के पाए तख्त सनआ में रहते हुए मुसलसल एक साल तक अपनी रिपोर्टें में इस वजारत को भेजता रहा लेकिन इसके बाद जब कोई इत्तेलाअ मौसूल न हुई तो बहुत कोशिश के बावजूद नौआबादयाती इलाकों की वजारत को उसका कोई निशान न मिल सका। हुकूमत एक जबरदस्त जासूस की गुमशुदगी के नतायज से अच्छी तरह बाखबर थी। वह हर मुलाजिम के काम की अहमियत को बड़ी बारीकी के साथ जांचती थी और दर हकीकत इस तरह के मुलाजिमीन में से किसी मुलाजिम की गुमशुदगी इस साम्राजी हुकूमत के लिये परेशान कुन थी जो इस्लामी ममालिक में गदर मचाने और उन्हें जेर करने की रकीमों की तैयारी में मसरूफ हो।

हमारा तअल्लुक एक ऐसी कौम से है जो आबादी के ऐतेबार से कम होने के साथ बड़ी अहम जिम्मेदारियों का बोझ सहार रही है और तजरेबाकार अफराद की कमी यकीनन हमारे लिये शदीद नुक्सान का बाइस थी।

सेक्रेट्री ने मेरी आखरी रिपोर्ट के अहम हिस्सों के मुताला के बाद

मुझे उस कांफ्रेंस में शिकत की हिदायत की जिसमें लंदन बुलाये गये पांच जासूसों की रिपोर्टें सुनी जाने वाली थी। उस कांफ्रेंस में जो वजीरे खारिजा की सदारत में हो रही थी नौआबादयाती वजारत के आला ओहदेदार शिकत कर रहे थे, मेरे तमाम साथियों ने अपनी रिपोर्टों के अहम हिस्सों को पढ़कर सुनाया। वजीरे खारिजा नौआबादयाती इलाकों की वजारत के सेक्रेट्री और बाज़ हाजिरीन ने मेरी रिपोर्ट को बड़ा सराहा। ताहम मैं इस मुहासबे में तीसरे नंबर पर था। दो और जासूसों ने मुझसे बेहतर कारकदगी का मुजाहिरा किया था जिन में पहला नंबर जी. बिलकोड, और दूसरा हेनरी फांस का था।

यह बात काबिले जिक्र है कि मैंने तुर्की, अरबी, तजवीदे कुरआन और इस्लामी शरीअत में सबसे ज्यादा महारत हासिल की थी लेकिन उस्मानी हुकूमत के ज़वाल के सिलसिले में मेरी रिपोर्ट ज्यादा कामयाब नहीं थी। जब सेक्रेट्री ने कांफ्रेंस के इखतेताम पर मेरी इस कमजोरी का जिक्र किया तो मैंने कहा-

“इन दो सालों में मेरे लिये दो जुबानों को सीखना, तफ़सीरे कुरआन और इस्लामी शरीअत से आशनाई ज्यादा अहमियत रखती थी और दूसरे कामों पर तवज्जोह देने के लिये मेरे पास ज्यादा वक़्त नहीं था। अगर आप भरोसा करें तो मैं यह कसर आइंदा सफ़र में पूरी कर दूंगा।

सेक्रेट्री ने कहा- इसमें कोई शक नहीं कि तुम अपने काम में कामयाब रहे हो लेकिन हम चाहते हैं कि तुम इस राह में दूसरों से बाज़ी ले जाओ।

उसने यह भी कहा: आइंदा के लिये तुम्हें दो अहम बातों का ख़याल रखना है।

१. मुसलमानों की उन कमजोरियों की निशानदेही करो जो हमें उन तक पहुंचने और उनके मुख़्तलिफ़ ग़रोहों के दर्भियान फूट डालने में कामयाबी फ़राहम करे क्योंकि दुश्मन पर हमारी कामयाबी का राज़ इन मसायल की शनाख़्त पर निर्भर है।

२. उनकी कमजोरियां जान लेने के बाद तुम्हारा दूसरा काम उनमें फूट डालना है। इस काम में पूरी कुव्वत सर्फ़ करने के बाद

तुम्हें यह इत्मीनान हो जाना चाहिये कि तुम्हारा शुमार सफे अव्यल के अंग्रेज जासूसों में होने लगा है और तुम एजाजी निशान के हकदार हो गये हो।

छः माह लंदन में कयाम के बाद मैंने अपने चचा की लड़की मेरी शबी से शादी कर ली जो मुझसे एक साल बड़ी थी। उस वक्त मैं 22 साल और वह 23 साल की थी। मेरी एक दर्मियाना दर्जे की जहीन लड़की थी लेकिन बड़े दिलकश चेहरे की मालिक थी मेरी बीबी का मुझसे दर्मियाना सलूक था और मैंने अपनी जिन्दगी के बेहतरीन दिन उसके साथ गुजारे। शादी के पहले साल ही मेरी बीबी उम्मीद से थी और मैं नये मेहमान का बैचेनी से मुन्तजिर था। लेकिन ऐसे मौके पर मुझे बज़ारत खाना से यह पक्का हुक्म मिला कि मैं वक्त बर्बाद किये बगैर फौरन इराक पहुँचू जो बरसहा बरस से उस्मानी खिलाफत के जेरे इस्तेहसाल था।

हम मियां बीबी जो अपने पहले बच्चे के इंतज़ार में थे इस हुक्मनामा से बहुत गमगीन हुए लेकिन मुल्क व मिल्लत से मुहब्बत, एहसासे जाह तलबी और अपने साथियों से दुश्मनी, तमाम घरेलू आन्साइशात, जज्बात और बच्चे की मुहब्बत पर छा गयी, और मैंने बगैर तरदुद के इस नई मामूरियत को कबूल कर लिया हालांकि मेरी बीबी बार बार यह जोर देती रही कि मैं अपनी रवानगी को बच्चे की पैदाईश तक मुलतवी रखूँ। जब मैं उससे रुखसत हो रहा था तो वह और मैं दोनों बे तहाशा रो रहे थे। उस पर मुझसे ज़्यादा रिक्कत तारी थी और वह कह रही थी मुझे भूल न जाना, खत जरूर लिखते रहना, मैं भी अपने बच्चे के सुनहरे मुस्तकबिल के बारे में तुम्हें लिखती रहूँगी। उसकी बातों ने मेरा दिल परसीज दिया और मुझे इस मंजिल तक पहुंचाया कि मैं अपने सफर को कुछ अर्से तक मुलतवी कर दूँ लेकिन फिर मैंने अपने आप पर काबू पाया और उससे रुखसत होकर नये अहकामात हासिल करने के लिये बज़ारत खाना रवाना हो गया।

समुंद्रों में छः माह के तबील सफर के बाद आखिरकार मैं बसरा पहुंचा। उस शहर में रहने वाले ज़्यादा तर वहीं अतराफ के कबायल

थे जिनमें ईरानी और अरब कौमों के दो अहम बाजू शिया और सुन्नी एक साथ जिन्दगी बसर करते थे। बसरा में ईसाईयों की तादाद बहुत कम थी। अपनी जिन्दगी में यह पहला मौका था कि मैं अहले तशीअ और ईरानियों से मिल रहा था। यहां यह बात नामुनासिब नहीं होगी अगर मैं अहले तशीअ और अहले तसनून के अकायद के बारे में मुस्तसर कुछ कहता चलूं। शिया हजरात, हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामाद और चचा जाद भाई अली बिन अबू तालिब (अलैहिस्सलाम) के मुहिब हैं और उनको हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बरहक जानशीन समझते हैं। उनका ईमान है कि हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नस्से सरीह के जरिये हजरत अली को अपना जानशीन मुन्तखब फरमाया था और आप के ग्यारह फरजंद यके बाद दीगरे इमाम और रसूले खुदा के बरहक जानशीन हैं।

मेरी सोच के मुताबिक हजरत अली और आपके दो बेटों इमाम हसन और इमाम हुसैन की खिलाफत के बारे में शिया हजरात मुकम्मल तौर पर हक बजानिय हैं क्योंकि अपने मुतालआत की बुनियाद पर बाज शवाहिद व इसनाद मेरे इस दावे पर दलालत करते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि हजरत अली ही वह हस्ती थे जो मुमताज सिफात के हामिल थे। और सही तौर पर फौज और इस्लामी हुकूमत की सरबराही के अहल थे। इमाम हसन और इमाम हुसैन की इमामत के बारे में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बहुत सी हदीसें दस्तयाब हैं और अहले सुन्नत को भी इनसे इंकार नहीं है और दोनों फरीक इस पर मुत्तहिद हैं। अलबत्ता मुझे बाकी नौ अफराद की जानशीनी में शक है जो हुसैन बिन अली की औलाद हैं और शिया हजरात उन्हें इमाम बरहक मानते हैं।

यह कैसे मुमकिन है कि पैगम्बरे इस्लाम उन अफराद को इमामत की खबर दें जो अभी पैदा ही न हुए हों? अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बरहक पैगम्बर हों तो गैब की खबर दे सकते हैं जैसा कि हजरत ईसा ने आइंद की खबरें दी हैं लेकिन

हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबूवत ईसाईयों के नज़दीक साबित नहीं है।

मुसलमानों का कहना है कि कुरआन पैगम्बर इस्लाम की नुबूवत पर भरपूर दलील है लेकिन मैंने जितना भी कुरआन पढ़ा मुझे ऐसी कोई दलील नहीं मिली।

इसमें कोई शक नहीं कि कुरआन एक बुलंद पाया किताब है और उसका मकाम तौरात और इंजील से बढ़कर है। कदीम दारस्तानें, इस्लामी अहकाम, आदाब, तालीमात और दीगर बातों ने इस किताब को ज़्यादा मोअतबर और ज़्यादा मुमताज़ बना दिया है लेकिन क्या सिर्फ़ यह खुसूसी फीकियत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई पर दलील बन सकती है? मैं हैरान हूँ कि एक सहारा नशीन जिसे लिखना और पढ़ना भी न आता हो किस तरह एक ऐसी अरफ़अ व आला किताब इंसानियत के हवाले कर सकता है। यह काम तो कोई पढ़ा लिखा और साहबे इस्तेदाद आदमी भी अपनी पूरी होशमंदी के बावजूद अंजाम नहीं दे सकता। फिर किस तरह एक सहाराई अरब बगैर तालीम के एक ऐसी किताब लिख सकता है और जैसा कि मैं पहले भी अर्ज़ कर चुका हूँ 'क्या यह किताब पैगम्बर की नुबूवत पर दलील हो सकती है?'

मैंने इस बारे में हकीकत जानने के लिये बहुत मुताला किया है। लंदन में जब मैंने एक पादरी के सामने इस मौज़ूअ को पेश किया तो वह भी कोई काबिले इत्मीनान जवाब न दे सका। तुर्की में भी मैंने शैख़ अहमद से कई दफा इस मौज़ू पर बातचीत की मगर वहां भी मुझे इत्मीनान नहीं हुआ। यह बात काबिले ज़िक्र है कि मैं लंदन के पादरी के मुकाबिल शैख़ अहमद से इतनी खुल कर गुफ्तगू नहीं कर सकता था इसलिये कि मुझे खतरा था कि कहीं मेरा पोल न खुल जाये या फिर कम से कम पैगम्बर इस्लाम के बारे में उसे मेरी नीयत पर शक न हो जाये। बहरहाल मैं हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कदर व मंज़िलत की अज़मत और बुजुर्गी का कायल हूँ। बेशक आप का शुमार उन बा फज़ीलत अफ़राद में होता है जिनकी कोशिशें तरबियत बशर के लिये नाकाबिले इंकार हैं और तारीख़ इस

बात पर शाहिद है लेकिन फिर भी मुझे उनकी रिसालत में शक है। फिर भी अगर उन्हें पैगम्बरे इस्लाम तसलीम न भी किया जाये तो भी उनकी बुजुर्गी उन अफराद से बढ़कर है जिन्हें हम उजीम समझते हैं। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तारीख के होशमंद तरीन अफराद से ज्यादा होशमंद थे।

अहले सुन्नत कहते हैं : हजरत अबू बकर, उमर और उसमान सलीम आरा की बुनियाद पर हजरत अली से ज्यादा खिलाफत के काम के हकदार थे। इस तरह उन्होंने खुलफा के इन्तेखाब में कौले पैगम्बर को भुला कर बराहे रास्त इकदाम किया। इस तरह के इख्तेलाफात अक्सर अदयान, बिलखुसूस ईसाईयत में पाए जाते हैं लेकिन शिया सुन्नी इख्तेलाफ का नाकाबिले समझ पहलू इसका बरकरार या मुसलसल जारी रहना है जो हजरत अली और हजरत उमर के गुजरने के बाद सदियों बाद भी अब तक उसी जोर व शोर से बाकी है। अगर मुसलमान हकीकतन अक्ल से काम लेते तो गुजरी तारीख और भूले जमाने के बजाए आज के बारे में सोचते। एक दफा मैंने शिया सुन्नी इख्तेलाफात के मौजूअ को अपनी नौआबादयाती इलाकों की वजारत के सामने पेश किया और उनसे कहा-

“मुसलमान अगर जिन्दगी के सही मफहूम को समझते तो इन इख्तेलाफात को छोड़ बैठते और वहदत व इत्तेहाद की बात करते।”

अचानक सदरे जलसा ने मेरी बात काटते हुए कहा-

‘तुम्हारा काम मुसलमानों के दर्मियान इख्तेलाफ की आग भड़काना है न यह कि तुम उन्हें इत्तेहाद और एक जेहती की दावत दो।’

ईशक जाने से पहले सेक्रेट्री ने अपनी एक बैठक में मुझसे कहा :

हमफिरे! तुम जानते हो कि जंग और झगड़े इंसान के लिये एक फितरी अमर हैं और जब से खुदा ने आदम को खलक किया और उसके सुल्ब से हाबील और काबील पैदा हुए इख्तेलाफ ने सर उठाया और अब इसको हजरत ईसा की वापसी तक इसी तरह जारी रहना है। हम इंसानी इख्तेलाफात को पांच बातों पर तक्सीम कर सकते हैं।

१. नसली इख्तेलाफात।
२. कबायली इख्तेलाफात।
३. जमीनी इख्तेलाफात।
४. कीमी इख्तेलाफात।
५. मजहबी इख्तेलाफात।

इस सफर में तुम्हारा अहम तरीन काम मुसलमानों के दर्मियान इख्तेलाफात के मुख्तलिफ पहलुओं को समझना और उन्हें हवा देने के तरीकों को सीखना है। इस सिलसिले में जितनी भी मालूमात हासिल हो सके तुम्हें उसकी इत्तेला लंदन के हुक्काम तक पहुंचाना है। अगर तुम इस्लामी ममालिक के बाज़ हिस्सों में सुन्नी शिया फसाद बरपा कर दो तो गोया तुम ने हुक्मते बर्तानिया की अजीम खिदमत की है।

जब तक हम अपने भकबूजा इलाकों में निफाक, तिफरका, फसाद और इख्तेलाफ की आग को हवा नहीं देंगे पुर सकून और खुशहाल नहीं हो सकते। हम उस वक्त तक उस्मानी सल्तनत को शिकस्त नहीं दे सकते जब तक उसके हुक्मत में शहर शहर, गली गली कितना व फसाद बरपा न कर दें। इतने बड़े इलाके पर अंग्रेजों की मुख्तसर सी कौम सिवाए इस हथकंडे के और किस तरह छा सकती है।

पस ऐ हमकिरे तुम्हें चाहिये कि तुम पहले अपनी पूरी कुव्वत सर्फ करके हंगामे, शोर शराबे फूट और इख्तेलाफात की कोई राह निकालो और फिर वहां से अपने काम का आगाज करो। तुम्हें मालूम होना चाहिये कि इस वक्त उस्मानी और ईरानी हुक्मते कमजोर हो चुकी हैं। तुम्हारा फर्ज है कि तुम लोगों को उनके हुक्मरानों के खिलाफ भड़काओ। तारीखी हकायक की बुनियाद पर हमेशा इंकैलाबात हुक्मरानों के खिलाफ अवाम की शोरिश से वजूद में आये हैं। जब कभी किसी इलाके के अवाम में फूट और इन्तेशार पड़ जाये तो कब्जा करने की राह बड़ी आसानी से हमवार हो सकती है।

(4)

बसरा पहुंचकर मैं एक मस्जिद में दाखिल हुआ। मस्जिद के पेश इमाम अहले सुन्नत के मशहूर आलिम शैख उमर ताई थे। मैंने उन्हें देखकर बड़े अदब से सलाम किया लेकिन शैख इस्तेदाई लम्हा से ही मुझ पर शक हुआ और मेरे हसब नसब और पिछली ज़िन्दगी के बारे में मुझसे सवालालत करने लगा। मेरा ख्याल है कि मेरे चेहरे और लहजे ने उसे शक में डाल दिया था लेकिन मैंने बड़ी तरकीब से अपने आपको उसकी गिरफ्त से बचा लिया और शैख के जवाब में कहा-

मैं तुर्की में वाक़ेय "आगदीर" का रहने वाला हूँ और मुझे कुस्तुनतुनिया के शैख अहमद की शार्गिदी का शर्फ़ हासिल है। मैंने वहाँ खालिद बढई के पास भी काम किया है।

मुख्तसर यह कि तुर्की में जो कुछ मैंने सीखा था वह सब उससे ब्यान किया। मैंने देखा कि शैख मौजूद लोगों में से किसी को आंख के ज़रिये इशारा कर रहा है। मालूम होता था कि वह जानना चाहता है कि मुझे तुर्की आती भी है कि नहीं। उस शख्स ने आंखों से हामी मरी। मैं दिल में बहुत खुश हुआ कि मैंने किसी हद तक शैख का दिल जीत लिया है लेकिन कुछ ही देर बाद मुझे अपनी गलतफ़हमी का एहसास हुआ और मैंने महसूस किया कि शैख का शुबहा अभी अपनी जगह बाकी है और वह मुझे उरमानियों का जासूस समझता है। मशहूर था कि शैख बसरा के गवर्नर का सख्त मुखालिफ़ था जिसे उरमानियों ने मोअय्यन किया था।

बहरहाल मेरे पास इसके सिवा कोई रास्ता नहीं था कि मैं शैख उमर की मस्जिद से इलाक़े के एक ग़रीब नवाज़ मुसाफ़िर खाना में मुन्तकिल हो जाऊँ। मैंने वहाँ एक कमरा किराए पर लिया। मुसाफ़िरखाना का मालिक एक अहमक आदमी था जो हर सुबह सवेरे मुसाफ़िरों को परेशान किया करता था। अजान के बाद अंधेरे

मैं मेरा दरवाजा जोर जोर से पीटता था और मुझे नमाज के लिये जमाता था और फिर सूरज निकलने तक कुरआन पढ़ने पर मजबूर करता था। जब मैं उससे कहता कि कुरआन पढ़ना वाजिब नहीं है फिर क्यों तुम्हें इस काम में इतना इसरार है? तो वह कहता कि तुलूअ आफताब से पहले की नींद गरीबी और बद बख्ती लाती है और इस तरह उस मुसाफिरखाना के तमाम मुसाफिर बदबख्ती का शिकार हो जायेंगे। मुझे उसकी बात माननी पड़ी क्योंकि वह मुझे वहां से निकल जाने की धमकी देता था। हर रोज सुबह मैं नमाज के लिये उठता था और फिर एक घंटा या इससे भी ज्यादा वक्त तक कुरआन की तिलावत करता था।

मेरी मुश्किल यहीं खत्म नहीं हुई। एक दिन मुसाफिर खाने के मालिक मुरशिद आफंदी ने आकर कहा, जब से तुमने इस मुसाफिरखाने में रिहाईश इस्तेयार की है मुसीबतों ने मेरा घर देख लिया है और इसकी वजह तुम और तुम्हारी लाई हुई नहूसत है इसलिये कि तुम ने अभी तक शादी नहीं की है और किसी को अपना शरीक हयात नहीं बनाया है तुम्हें या शादी करनी होगी या फिर यहां से जाना होगा।

मैंने कहा- आफंदी! मैं शादी के लिये सरमाया कहां से लाऊं? इस दफा मैंने अपने आपको शादी के नाकाबिल जाहिर करने से एहतेराज किया क्योंकि मैं जानता था कि मुरशिद आफंदी टोह लगाए बगैर मेरी बात पर यकीन करने वाला आदमी नहीं था।

मुरशिद आफंदी ने जवाब दिया। ओ नाम के जईफुल ऐतकायद मुसलमान! क्या तुमने कुरआन का मुताला नहीं किया है जहां वह फरमाता है-

“वह लोग जो फकर में मुब्तला हैं खुदा वंदे आलम उन्हें अपनी बुजुर्गी से मालामाल कर देगा।”

मैं हैरान था कि इस नासमझ इंसान से किस तरह पीछा छुड़ाऊं। आखिरकार मैंने उससे कहा, आपका इरशाद बजा है लेकिन मैं रकम

के बगैर कैसे शादी कर सकता हूँ? क्या आप जरूरी अखराजात के लिये मुझे कुछ रकम कर्ज दे सकते हैं? इस्लाम में महर अदा किये बगैर कोई औरत किसी के अक्द में नहीं आ सकती।

आफंदी कुछ देर सोच में पड़ गया और फिर कर्ज हसना की बात करने के बजाए अघानक उसने सर बुलंद किया और ऊंची आवाज़ में धीखा, मुझे कुछ नहीं मालूम या तुम्हें शादी करनी होगी या फिर रजब की पहली तारीख तक कमरा छोड़ना होगा।

उस दिन जमादिउस्सानी की पांचवी तारीख थी और सिर्फ 25 दिन मेरे पास थे।

इस्लामी महीनों के नामों के बारे में भी यहां कुछ तजकिरा ना मुनासिब न होगा।

1. मुहर्रम
2. सफर
3. रबीउल अव्वल
4. रबीउस्सानी
5. जुमादिलउला
6. जुमादिउस्सानी
7. रजब
8. शायान
9. रमज़ान
10. शव्वाल
11. जीकादा
12. ज़िलहिज्जा

हर महीना चांद के आगाज से शुरू होता है और 30 दिन से ऊपर नहीं जाता लेकिन कभी कभी चांद 29 दिन का भी होता है।

मुख्तसर यह कि मुसाफिरखाना के मालिक की सख्तगीरी के सबब मुझे वह जगह छोड़ना पड़ी। मैंने यहां भी एक तरखान की दुकान पर इस शर्त के साथ नौकरी कर ली कि वह मुझे रहने और खाने की सहूलत फराहम करेगा और इसके बदले मजदूरी कम देगा। मैं रजब से पहले ही नई जगह मुन्तकिल हो गया और तरखान की दुकान पर पहुंचा। तरखान अब्दुल रजा निहायत शरीफ और मोहतरम शख्स था और मुझसे अपने बेटों जैसा सुलूक करता था।

अब्दुल रजा ईरानी उल अस्त शिया था, और खुरासान का रहने वाला था। मैंने मौके से फायदा उठाते हुए उससे फारसी सीखना शुरू की। दोपहर के वक्त उसके पास बसरा मैं मुकीम ईरानी जमा होते थे जो सब के सब शिया थे। वहां बैठकर इधर उधर की गुफ्तगू होती थी। कभी सियासत और मइशयत उनवाने कलाम होता और कभी उस्मानी हुकूमत को बुरा भला कहा जाता। खास तौर पर सल्तनते वक्त और इसतंबोल में मुकरर होने वाला खलीफ़े मुस्लेमीन उनकी तनकीद का निशाना होता लेकिन ज्यों ही कोई अजनबी गाहक दुकान में आता वह सबके सब खामोश हो जाते और जाती दिलचस्पी के मुताल्लिक गैर अहम बातें होने लगती।

मुझे मालूम नहीं मैं क्योंकि उनके लिये काबिले एतेमाद था और वह मेरे सामने हर किरम की गुफ्तगू को जायज समझते थे। यह बात मुझे बाद में मालूम हुई कि उन्होंने मुझे आजर बाईजान का रहने वाला ख्याल किया था क्योंकि मैं तुर्की में बात चीत करता था और आजर बाइजानियों की तरह मेरा चेहरा सुर्ख व सफ़ेद था।

उन दिनों जब मैं तरखान का काम करता था मेरी मुलाकात ऐसे शख्स से हुई जो वहां आता जाता था और तुर्की, फारसी और अरबी जुबानों में गुफ्तगू करता था। वह दीनी तालिब इल्मों का लिबास पहनता था। उसका नाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब था। वह एक ऊंचा उड़ने वाला, एक जाह तलब और निहायत गुसीला इंसान था। उसे उस्मानी हुकूमत से सख्त नफरत थी और वह हमेशा उसकी

बुराई करता था लेकिन हुकूमते ईरान से उसको कोई सरोकार नहीं था। तरखान अब्दुल रज़ा से उसकी दोस्ती की वजह मुश्तरक यह थी कि वह दोनों ही उस्मानी खलीफ़ा को अपना सख्त तरीन दुश्मन समझते थे लेकिन मेरे इल्म में यह बात न आ सकी कि उसने अब्दुल रज़ा तरखान से किस तरह दोस्ती बढ़ाई थी जबकि यह सुन्नी और वह शिया था। मुझे यह भी नहीं मालूम हो सका कि उसने फारसी कहाँ से सीखी थी? अलबत्ता बसरा में शिया सुन्नी मुसलमान एक साथ ज़िन्दगी बसर करते थे, और एक दूसरे के साथ उनके रवाबित भी दोस्ताना थे और वहाँ फारसी और अरबी दोनों जुबानें बोली जाती थी ताहम तुर्की समझने वालों की तादाद भी वहाँ कुछ कम न थी।

मुहम्मद अब्दुल क़हाब एक आज़ाद ख़याल आदमी था। उसका ज़ेहन शिया सुन्नी तारसुबात से बिल्कुल पाक था हालाँकि वहाँ के बेश्तर सुन्नी हज़रात शियों के खिलाफ़ थे और बाज़ सुन्नी मुफ़्ती शियों की तक़फ़ीर भी करते थे। शैख़ मुहम्मद के नज़दीक़ हनफ़ी, शाफ़ई, हंबली और मालिकी मक़ातिबे फ़िक्क में से किसी मक़तबे फ़िक्क की कोई ख़ास अहमियत नहीं थी। वह कहता था कि खुदा ने जो कुछ क़ुरआन में कह दिया है बस वही हमारे लिये काफ़ी है।

इन चार मक़ातिबे फ़िक्क की दास्तान भी कुछ यूँ है कि हज़रत पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के सौ साल बाद आलमे इस्लाम में बड़े मर्तबे वाले उलमा का ज़हूर अमल में आया जिनमें से चार अफ़राद अबू हनीफ़ा, अहमद बिन हंबल, मालिक बिन अनस और मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई अहले सुन्नत की पेशवाई के मक़ाम तक पहुँचे। अब्बासी ख़ुलफ़ा का ज़माना था और उन अब्बासी ख़ुलफ़ा ने मुसलमानों पर दबाव डाल रखा था कि वह इन चार अफ़राद के अलावा किसी की तक़लीद न करें अगरचे कोई क़ुरआन व सुन्नत में इनसे बढ़कर महारत क्यों न रखता हो। अब्बासी ख़ुलफ़ा ने इनके अलावा किसी तर्जुमाकार और आला पाया आलिम को इनके मुकाबिल में उभरने नहीं दिया और इसी तरह दर

हकीकत उन्होंने इल्म के दरवाजे को बंद कर दिया, और यह बात अहले सुन्नत व जमाअत के फिक्री जुमूद का बाइस बनी। इसके बरअक्स शिया हजरात ने अहले सुन्नत की इस पाबंदी और जुमूदी कैफियत से फायदा उठाते हुए अपने अकायद व नजरियात को बड़े पैमाने पर फैलाना शुरू किया और दूसरी सदी हिजरी के शुरू में बावजूद इसके कि शिया आबादी अहले सुन्नत के मुकाबिल में दस फीसद थी इनकी तादाद में मुसलसल इजाफा होने लगा और वह अहले सुन्नत के बराबर हो गये और यह एक फितरी काम था क्योंकि शिया हजरात के पास इज्तेहाद का दरवाजा खुला हुआ था और यह बात मुसलमानों की फिक्र की ताजगी, इस्लामी फिक्ह को आगे बढ़ने और नई रीशनी में कुरआन व सुन्नत को समझने का बाइस बनी और उस्ती ने इस्लाम को नये जमानों के तकाजों से हम आहंग किया। इज्तेहाद ही वह बड़ा वसीला था जो फिरकी जुमूद से लड़ता रहा और इसके जरिये इस्लाम ने जिंदगी पाई और फिक्रों में इंकेलाब रूनुमा हुआ। इस्लाम को चार मकातीबे फिक्र में कैद करना, मुसलमानों के लिये जुस्जतू और तलाश के रास्तों को बंद करना और नई बात से उनकी समाअत को रोकना और वक्त के तकाजों से उन्हें बे तवज्जोह रखना दरअसल छिपा हुआ हथियार था जिसने मुसलमानों को आगे बढ़ने से रोक दिया। जाहिर है कि जब दुश्मन के हाथ में नया हथियार हो और आप अपने पुराने जंग जदा हथियार से उसका मुकाबला करेंगे तो यकीनन जल्द या देर आपको नुकसान उठाना पड़ेगा। मैं पेशेनेगोई से काम लेते हुए यह कहूंगा कि अहले सुन्नत के अक्लमंद अफराद बहुत जल्द ही मुसलमानों पर इज्तेहाद का दरवाजा खोल देंगे और यह काम मेरे अदांजे के मुताबिक अगली सदी तक अमल में आयेगा और सौ साल बाद मुसलमानों में इज्तेहाद की हिमायत करने वाले शिया की अक्सरियत और अहले सुन्नत अकलियत में रह जायेंगे।

अब मैं शीख मुहम्मद अब्दुल वहाब के बारे में अर्ज करूं कि यह

शरूख कुरआन व हदीस का अच्छा मुताला रखता था और अपने अफ़कार की हिमायत में बुजुर्गाने इस्लाम के अक़बाल व आरा को बत्तीरे सनद पेश करता था लेकिन कभी कभी उसकी फ़िक्र मशाहीर उलमा के खिलाफ़ होती थी। वह बात बात पर कहता -

पैगम्बरें खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिर्फ़ किताब और सुन्नत को नाकाबिले तग़य्युर उसूल बनाकर हमारे लिये पेश किया और कभी यह नहीं कहा कि सहाबाए किराम और आइम्मा दीन के फ़रमान अटल और नाज़िल की गयी वही हैं। पर हम पर वाज़िब है कि हम सिर्फ़ किताब व सुन्नत की पैरवी करें। उलमा, चार आइम्मा अरबा हत्ता कि सहाबा की राय चाहे कुछ भी क्यों न हो हमें उनके इत्तेफ़ाक़ व इख़्तेलाफ़ पर अपने दीन को इस्तवार नहीं करना चाहिये।

एक दिन उसकी ईरान से आने वाले एक आलिम से खाने के दस्तरख़्वान पर झड़प हो गयी। इस आलिम का नाम शेख़ जब्बाद कुम्मी था और उसे अब्दुल रज़ा तरख़ान ने अपने पास मेहमान बुलाया था। शेख़ जब्बादकुम्मी के मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब से उसूली इख़्तेलाफ़ात थे और उनकी गुफ़्तगू ने जल्द ही तलख़ी और तुरशी का रंग इख़्तेयार कर लिया।

मुझे उनके दर्मियान होने वाली तमाम गुफ़्तगू तो याद नहीं अलबत्ता जो जो हिरसे मुझे याद हैं मैं उनको यहां पेश करना चाहता हूँ:

शेख़ कुम्मी ने इन जुमलों से अपनी गुफ़्तगू का आगाज़ किया और मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब से कहा -

“अगर तुम एक आज़ाद ख़्याल इंसान हो और अपने दावे के मुताबिक़ इस्लाम का काफी मुताला कर चुके हो तो फिर क्या बजह है कि तुम हज़रत अली को वह फज़ीलत नहीं देते जो शिया देते हैं?”

मुहम्मद ने जवाब दिया, “इसलिये कि हज़रत उमर और दीगर अफ़राद की तरह उनकी बातें भी मेरे लिये हुज्जत नहीं हैं। मैं सिर्फ़

किताब व सुन्नत को मानता हूँ।”

कुम्मी: “अच्छा अगर तुम सुन्नत को आमिल हो तो क्या पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह नहीं कहा था “मैं शहरे इल्म हूँ और अली उसका दरवाजा हूँ” और क्या यह कहकर पैगम्बर ने अली और सहाबा के दर्मियान फर्क कायम नहीं किया?”

मुहम्मद : अगर ऐसा ही है तो फिर पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह कहना चाहिये था मैं तुम्हारे दर्मियान दो चीजें छोड़े जाता हूँ एक किताब और एक अली बिन अबू तालिब।

कुम्मी : बेशक यह बात भी पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मुकाम पर कही है - मैंने तुम्हारे दर्मियान एक किताब और अहले बैत को छोड़ा है। बेशक अली अहले बैत के बड़े लोगों में से हैं।

मुहम्मद ने इस हदीस को झुटलाया लेकिन शैख कुम्मी ने उसूलों काफ़ी के इसनाद की बुनियाद पर पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस हदीस को साबित किया और मुहम्मद को खामोश होना पड़ा। अब उसके पास कोई जवाब नहीं था, अचानक उसने शैख पर एतेराज ठोका, पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे लिये सिर्फ़ किताब और अपने अहले बैत को बाकी रखा है तो फिर सुन्नत कहाँ गयी?

कुम्मी ने जवाब दिया सुन्नत इसी किताब की तफ़सीर व तशरीह का नाम है और इसके अलावा कुछ भी नहीं। पैगम्बर खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है अल्लाह की किताब और मेरे अहले बैत यानी किताबे खुदा इस तशरीह व तफ़सीर के साथ जो सुन्नत कहलाती है और इसके बाद सुन्नत की तकरार की जरूरत नहीं रहती।

मुहम्मद ने कहा, अगर आपके दावे के मुताबिक इतरत या अहले बैत ही कलामे इलाही की तफ़सीर हैं तो फिर क्यों मतने हदीस में उसका इजाफ़ा हुआ है।

कुम्मी ने जवाब दिया : जनाबे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की वफात के बाद उम्मत मुहम्मदी को कुरआन समझाने वाले की अशद जरूरत थी क्योंकि कौम अपनी जिन्दगी को अहकामे इलाही पर मुनतबिक करना चाहती थी इसलिये पैगम्बर इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने गैबी इल्म की बुनियाद पर किताबे इलाही को असले साबित और इतरत (अहले बैत) को मुफरिसर व शारेहे किताब बनाकर उम्मत के हवाले किया।

हेरानी के साथ साथ मुझे उनकी गुफ्तगू से बड़ा मजा आ रहा था। मैंने देखा कि मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब उस बूढ़े शैख जवाद कुम्भी के आगे एक ऐसी चिड़िया की मारिंद फड़ फड़ा रहा था जिसे बिजरे में बंद कर दिया गया हो और उसके परवाज की राह बंद हो गयी हो।

मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब से मेल जोल और मुलाकातों के एक सिलसिले के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा की बर्तानवी हुकूमत के मकासिद को अमली जामा पहनाने के लिये यह शख्स बहुत मुनासिब दिखाई देता है। इसकी ऊंचा उड़ने की स्वाहिश जाह तलबी, गुरुर, उलेमा और मशायखे इस्लाम से इसकी दुश्मनी, इस हद तक खुदसरी की खुलफाए राशिदीन भी इसकी तनकीद का निशाना बनें और हकीकत के सरासर खिलाफ कुरआन व हदीस से मतलब निकालना इसकी कमजोरियां थी जिससे बड़ी आसानी से फायदा उठाया जा सकता था।

मैंने सोचा कहां यह मगरूर नौजवान और कहां इस्तंबोल का वह तुर्क बूढ़ा आदमी (अहमद आफंदी) जिसके अफकार व किरदार गोया हजार पहले के अफराद की तसवीर कशी करते थे। उसने अपने अंदर जरा भी तबदीली पैदा नहीं की थी। हनफी मजहब से ताल्लुक रखने वाला वह बूढ़ा आदमी अबू हनीफा का नाम जुवान पर लाने से पहले उठकर वुजू करता था य मसलन सही बुखारी के मुताला को अपना फर्ज समझता था जो अहले सुन्नत के नजदीक हदीसों की निहायत मोअतबर और मुस्तनद किताब है और वहां भी वह वुजू के

बगीर किताब को नहीं छूता था और इसके बिल्कुल बर अक्सर शीख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब अबू हनीफा की सहकीर करता था और उसे नाकाबिले एतेबार समझता था मुहम्मद कहता था मैं अबू हनीफा से ज्यादा जानता हूँ उसका दावा था कि आधी सही बुखारी बिल्कुल लचर और बेहूदा है।

बहर सूरत मैंने मुहम्मद से बहुत गहरे ताल्लुकात कायम कर लिये और हमारी दोस्ती में नाकाबिले जुदाई मजबूती पैदा हो गई। मैं बार बार इसके कानों में यह रस घोलता था कि खुदा ने तुम्हें हजरत अली और हजरत उमर से कहीं ज्यादा सलाहियतों वाला बनाया है और तुम्हें बड़ी फजीलत और बुजुर्गी बख्शी है। अगर तुम जनाब रिसालत मआव के जमाने में होते तो यकीनन उनकी जानशीनी का शर्फ तुम्हें ही मिलता। मैं हमेशा उम्मीद भरे लहजे में उससे कहता -

“मैं चाहता हूँ कि इस्लाम में जिस इंकेलाब को जाहिर होना है वह तुम्हारे ही मुबारक हाथों से अंजाम पजीर हो इसलिये कि सिर्फ तुम ही वह शख्सियत हो जो इस्लाम को जवाल से बचा सकते हो और इस सिलसिले में सबकी उम्मीदें तुम से लगी हैं।

मैंने मुहम्मद के साथ तय कि कि हम दोनों बैठकर उलमा, मुफस्सेरीन, पेशवायाने दीन व मजहब और सहाबा-ए-किराम से हट कर नये अफकार की बुनियाद पर कुरआन मजीद पर गुफ्तगू करें। हम कुरआन पढ़ते और आयात के बारे में इजहारे ख्याल करते। मेरा मंसूबा यह था कि मैं किसी तरह उसे अंग्रेज नौ आबादयाती इलाकों की युजारत के दाम में फंसा दूँ।

मैंने आहिस्ता आहिस्ता उस ऊंची उड़ान वाले खुद परस्त इंसान को अपनी गुफ्तगू की लपेट में लेना शुरू किया और यहां तक कि उसने हकीकत से कुछ ज्यादा ही आजाद ख्याल बनने की कोशिश की।

एक दिन मैंने उससे पूछा, क्या जिहाद वाजिब है?

उसने कहा क्यों नहीं, खुदावंदे आलम फरमाता है काफिरों से

जंग करो।

मैंने कहा, खुदा बंदे आलम फरमाता है काफिरों और मुनाफिकों दोनों से जंग करो और अगर काफिरों और मुनाफिकों से जंग वाजिब है तो फिर पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुनाफिकों से क्यों जंग नहीं की?

मुहम्मद ने जवाब दिया, जिहाद सिर्फ मैदाने जंग ही में नहीं होता, पैगम्बर खुदा ने अपनी रफतार व बातचीत के जरिये मुनाफिकों से जंग की है।

मैंने कहा, फिर इस सूरत में कुफ़ार के साथ जंग भी रफतार व बातचीत के साथ वाजिब है।

उसने जवाब दिया नहीं इसलिये कि पैगम्बर ने जंग के मैदान में उनके साथ जिहाद किया है।

मैंने कहा, कुफ़ार के साथ रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जंग अपने दिफाअ के लिये थी क्योंकि वह उनकी जान के दुश्मन थे।

मुहम्मद ने हां में अपना सर हिलाया और मैंने महसूस किया कि मैं अपने काम में कामयाब हो गया हूं।

एक और दिन मैंने उससे कहा, क्या औरतों के साथ मुतआ जायज़ है?

उसने कहा, हरगिज़ नहीं।

मैंने कहा, फिर क्यों कुरआन ने इसे जायज़ करार देते हुए कहा है, "और जब तुम इनसे मुतआ करो तो उनका महर अदा करो।"

उसने कहा, "हां आयत तो अपनी जगह ठीक है मगर हजरत उमर ने इसे यह कह कर हराम करार दिया कि मुतआ पैगम्बर के जमाने में हलाल था मैं उसे हराम करार देता हूं और अब जो इसका मुरतक़िब होगा मैं उसे सजा दूंगा।"

मैंने कहा, बड़ी अजीब बात है तुम तो हज़रत उमर की पैरवी करते हो और फिर अपने आप को उससे ज़्यादा साहबे अक्ल भी कहते हो। हज़रत उमर को क्या हक़ पहुंचता है कि वह हलाले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हराम करें। तुमने कुरआन को भुलाकर हज़रत उमर की राय को तसलीम कर लिया?

मुहम्मद ने चुप्पी साध ली और खामोशी उसकी रज़ामंदी की दलील थी। इस मौज़ूअ पर उसके ख्यालात दुरुस्त करके मैंने उसके जिन्सी ग़रीज़ा को उभारना शुरू किया। वह एक ग़ैर मुताहिहल शख्स था। मैंने उससे पूछा "क्या तुम मुतआ के ज़रिये अपनी ज़िन्दगी पुर मसरत बनाना चाहते हो?"

मुहम्मद ने रज़ा और रग़बत की अलामत से अपना सर झुका लिया।

मैं अपने फ़रायज़ के इंतेहाई अहम मोड़ पर पहुंच चुका था। मैंने उससे वादा किया कि मैं बहरहाल तुम्हारे लिये इसका इंतेज़ाम करूंगा। मुझे सिर्फ़ इस बात का डर था कि कहीं मुहम्मद बसरा के उन सुन्नियों से खौफ़ज़दा न हो जाये जो इस बात के मुखालिफ़ थे। मैंने उसे इत्मीनान दिलाया कि हमारा प्रोग्राम बिल्कुल छिपा रहेगा यहां तक कि औरत को भी तुम्हारा नाम नहीं बताया जायेगा। इस गुप्तगू के फौरन बाद मैं उस बंद किरदार नसरानी औरत के पास गया जो इंगलिस्तान के नौ आबादयाती इलाकों की बुज़ारत की तरफ़ से बसरा में ज़िस्म फ़रोशी पर मामूर थी और मुस्लिम नौजवानों को बे राह रबी पर उभारती थी। मैंने उससे तमाम वाकियात ब्यान किये। जब वह राज़ी हो गयी तो मैंने उसका आरज़ी नाम "सफ़िया" रखा और कहा कि मैं शैख़ को लेकर उसके पास आऊंगा।

मुकर्ररा दिन मैं शैख़ को लेकर सफ़िया के घर पहुंचा। हम दोनों के सिवा वहां और कोई नहीं था। मुहम्मद ने एक अशरफी महर पर एक हफ़ते के लिये सफ़िया से निकाह किया। मुख्यसर यह कि मैं बाहर और सफ़िया अंदर से मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को अपने

आइंदा के प्रोग्रामों के लिये तैयार कर रहे थे। सफिया ने अहकामे दीन की पामाली और आजादीए राय का पुर कैफ मज़ा मुहम्मद को चखा दिया था।

मैं इस प्रोग्राम के तीसरे दिन फिर मुहम्मद से मिला और हमने एक बार फिर अपनी गुफ्तगू का सिलसिला जारी किया। इस बार गुफ्तगू शराब की हुरमत के मुताल्लिक थी। मेरी कोशिश थी कि मैं उन आयात को रद्द करूं जो मुहम्मद के नज़दीक हुरमते शराब पर दलील थी। मैंने उससे कहा, "अगर मुआविया, यज़ीद, खुलफ़ाए बनू उमैय्या और बनी अब्बास की शराब नोशी हमारे नज़दीक मुसल्लम हो तो क्योंकर हो सकता है कि यह तमाम पेशवायाने दीन व मज़हब गुमराही की जिन्दगी बसर करते हों और तंहा तुम सच्चे रास्ते पर हो? बेशक वह लोग किताबे इलाही और सुन्नते रसूल को हम से ज्यादा बेहतर जानते थे। तब यह बात सामने आती है कि इरशादाते खुदा और रसूल से उन बुजुर्गों ने जो मतलब निकाला था वह शराब की हुरमत नहीं बल्कि उसकी कराहत थी। इसके अलावा यहूद व नसारा की मुकद्दस किताबों में साफ़ तौर से शराब पीने की इजाजत है हालांकि यह भी इलाही अदयान हैं और इस्लाम इन अदयान के पैगम्बरों का मोअतकिद है। यह कैसे मुमकिन है कि शराब अल्लाह के भेजे हुए एक दीन में हलाल और दूसरे में हराम हो? क्या यह सब अदयान सच्चे या खुदाए यकता के भेजे हुए नहीं हैं? हमारे पास तो यह भी रिवायत है कि हज़रत उमर उस वक्त तक शराब पीते रहे जब तक यह आयत नाज़िल नहीं हुई क्या तुम शराब और जुए से अलग नहीं होंगे, अगर शराब हराम होती तो रसूले खुदा हज़रत उमर की शराब नोशी पर हद जारी फ़रमाते मगर आपका उन पर हद जारी न करना इस बात की दलील है कि शराब हराम नहीं है।

मुहम्मद जो बड़े गौर से मेरी गुफ्तगू सुन रहा था अचानक संभला और कहा "रिवायात में है कि हज़रत उमर शराब में पानी मिलाकर पीते थे ताकि उसकी वह कैफ़ियत दूर हो जाये जो नशा पैदा करती

है। वह कहते थे कि शराब की मस्ती हराम है न कि खुद शराब। वह शराब जिससे नशा तारी न हो हराम नहीं है।”

मुहम्मद, हज़रत उमर के इस नज़रिये को इस आयत की रीशनी में दुरुस्त जानता था जिसमें इरशाद होता है शैतन चाहता है कि तुम्हारे दमियान शराब और जुए के ज़रिये अदाबत और दुश्मनी पैदा करे और तुम्हें यादे खुदा और नमाज़ से बाज़ रखे।

अगर शराब में मस्ती और नशा न हो तो पीने वाले पर उसके असरात मुरत्तब नहीं होंगे और इरीलिये वह शराब जिसमें मस्ती नहीं हराम नहीं है।

मैंने मुहम्मद के साथ शराब से मुताल्लिक गुप्तगू को सफ़िया को बताया और उसे ताकीद की कि मौका मिलते ही मुहम्मद को नशे में चूर कर दो और जितना हो सके शराब पिलाओ।

दूसरे दिन सफ़िया ने मुझे इत्तेला दी कि उसने शैख के साथ जी खोलकर शराब नोशी की यहां तक कि वह आपे से बाहर हो गया और चीखने चिल्लाने लगा। रात की आखरी घड़ी में कई मर्तबा मैंने उससे मिलन की और अब उस पर कमज़ोरी का आलम तारी है और चेहरे की चमक खत्म हो चुकी है। खुलासा कलाम यह कि मैं और सफ़िया पूरी तरह मुहम्मद पर छा चुके थे। इस मंज़िल पर मुझे नौआबादयाती इलाकों के वज़ीर की वह सुनहरी बात याद आयी जो उसने मुझे अलविदा कहते वक़्त कही थी। उसने कहा था -

“हमने स्येन को कुफ़ार (मुराद अहले इस्लाम हैं) से शराब और जुए के ज़रिये दोबारा हासिल किया। अब इन्हीं दो ताक़तों के ज़रिये दूसरे इलाकों को भी हिम्मत के साथ वापस लेना है।”

मुहम्मद के साथ मज़हबी गुप्तगू के दौरान एक दिन मैंने रोज़ा के मसले को हवा दी और कहा, “कुरआन कहता है रोज़ा तुम्हारे लिये बेहतर है” उसने यह नहीं कहा कि तुम पर वाजिब है लिहाज़ा इस्लाम में रोज़ा वाजिब नहीं मुस्तहब है।”

इस मौके पर मुहम्मद को गुस्सा आया और उसने कहा तुम मुझे दीन से खारिज करना चाहते हो?

मैंने कहा, "ऐ मुहम्मद! दीन दिल की पाकी, जान की सलामती और एतेदाल का नमा है। यह कैफियात इंसान को दूसरों पर जुल्म व ज्यादाती से रोकती हैं। क्या हजरत ईसा ने यह नहीं कहा कि मजहब इश्क व वारफतगी का नमा है। क्या कुरआन यह नहीं कहता, "यकीन हासिल करने तक अल्लाह की इबादत करो।" अब अगर इंसान यकीने कामिल की मंजिल पर पहुंच जाये खुदा और रोजे कयामत उसके दिल में बैठ जाये, ईमान से उसका दिल भर जाये और वह अच्छे सुलूक का हामिल हो तो फिर रोजे की क्या जरूरत बाकी रह जाती है? इस मंजिल में वह आला तरीन इंसानी मरतबों से जुड़ जाता है।

मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने इस मर्तबा मेरी शदीद मुखालेफत की और अपनी नाराजगी का इजहार किया। फिर एक दफा मैंने उससे कहा नमाज वाजिब नहीं?

उसने पूछा "क्यों?"

मैंने कहा इसलिये कि खुदावंदे आलम ने कुरआन में कहा है कि- "मुझे याद करने के लिये नमाज कायम करो।" पस नमाज मकसद जिक्रे इलाही है और तुम्हें चाहिये कि तुम उसका नाम अपनी जुबान पर जारी रखो।"

मुहम्मद ने कहा, "हां मैंने सुना है कि बाज उलमाए दीन नमाज के वक्त अल्लाह के नाम की तक़रार शुरू करते हैं और नमाज अदा नहीं करते।"

मैं मुहम्मद के इस एतेराफ से बहुत ज्यादा खुश हुआ मगर एहतियातन कुछ देर मैं उसे नमाज पढ़ने की तलकीन भी की जिसका नतीजा यह निकला कि उससे नमाज की पाबंदी छूट गयी। अब वह कभी नमाज पढ़ता और कभी न पढ़ता। खास तौर से सुबह की

नमाज़ गालिबन उसने तर्क ही कर दी थी। हम लोग रात को देर तक जागते जिसकी वजह से सुबह उठने और बुजू करने की उसमें हिम्मत बाकी नहीं रहती थी।

किस्सा मुख्तसर आहिस्ता आहिस्ता मैं मुहम्मद के बदन से ईमान का लिबादा उतारने में कामयाब हो गया। मैं हर रोज उससे अपनी भीठी गुप्तगू का सिलसिला जारी रखता। अंजाम कार एक दिन मैंने गुप्तगू की हुदूद को जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जाते अक़दस तक आगे बढ़ाया। अचानक उसके चेहरे पर तबदीली आई और वह इस मौजूअ पर गुप्तगू के लिये तैयार नहीं हुआ। उसने मुझसे कहा, "अगर तुमने रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखी की तो हमारी तुम्हारी दोस्ती के दरवाजे यहीं से हमेशा के लिये बंद हो जायेंगे।" मैंने अपनी मेहनतों पर पानी फिरते देखा तो फौरन अपना मौजूए गुप्तगू बदल दिया और फिर इस मौजू पर गुप्तगू नहीं की।

उस दिन के बाद से मेरा मकसद मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को रहबरी और पेशवाई की फिक्र देना हो गया। मुझे उसके कल्ब व रूह में उतरकर शिया सुन्नी फिरकों के अलावा इस्लाम में एक तीसरे फिरके की सरबराही की पेश कश को उसके लिये काबिले अमल बनाना था। इस मकसद के हुसूल के लिये जरूरी था कि पहले मैं उसके जेहन को बेजा मुहब्बतों और अंधे तास्सुबात से پاک कर दूं और इस उनवान से उसकी आजाद ख्याली और बुलंद परवाजी को तकवियत पहुंचाऊं। इस काम में सफिया भी मेरी मददगार थी क्योंकि मुहम्मद उसे दीवानों की तरह चाहता था और हर हफ्ता मुतआ की मुदत को बढ़ाता जाता था। मुख्तसर यह कि सफिया ने मुहम्मद से सब्र व करार और उसके तमाम इख्लेयारात छीन लिये थे।

मैंने अपनी एक मुलाकात में मुहम्मद से कहा, "क्या यह दुरुस्त है कि जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम असहाय से दोस्ती थी?"

उसने जवाब दिया, "हां।"

मैंने पूछा "इस्लाम के क़वानीन दायमी (हमेशा के लिये) हैं या बय़सी?"

उसने कहा, "बेशक़ दायमी हैं," इसलिये कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि हलाले मुहम्मद क़यामत तक हलाल और हरामे मुहम्मद क़यामत तक हराम है।"

मैंने बिला ताख़ीर कहा, "पस हमें भी उनकी सुन्नत पर अमल करते हुए एक दूसरे का दोस्त और भाई बनना चाहिये।"

उसने मेरी पेशकश को कबूल किया और उस दिन के बाद से तमाम सफ़र व हज़र में हम एक दूसरे के साथ रहने लगे।

मैं इस कोशिश में था कि जिस पीछे को सींचने में मैंने अपनी ज़वानी के दिन खर्च किये हैं अब जितनी जल्दी हो सकें उसके फलों से फ़ायदा हासिल करूं।

हस्बे मामूल मैं अपनी हर महीने की रिपोर्ट इंग्लिस्तान में नौ आबादयाती इलाकों की बज़ारत को भेजता रहा। रिपोर्ट लिखना अब मेरी आदत में शामिल हो गया था जिसमें कभी मैं कोताही नहीं करता था। वहां से जो जवाबात लिखे जाते थे वह तमाम के तमाम बड़े हौसला अफ़जा और उम्मीद भरे हुआ करते थे। और अपने फ़रायज़ को अंजाम देने में मेरी हिम्मत बढ़ाते थे। मैं और मुहम्मद ने जिस रास्ते को चुना था हम उसे बड़ी तेज़ी से तय कर रहे थे। मैं सफ़र और हज़र में कभी उसको तंहा नहीं छोड़ता था। मेरी कोशिश यही थी कि मैं आज़ाद ख़्याली और मजहबी अफ़ायद में जिद्दत पसंदी की रूह को इसके बजूद में मजबूत करूं। मैं हमेशा उसको यह आस दिलाता रहता था कि एक रौशन मुस्तक़बिल तुम्हारे इंतज़ार में है।

एक दिन मैंने उससे अपना एक झूटा ख़ाब ब्यान किया और

कहा, रात मैंने जनाब खतमी मरतबत को बिल्कुल उसी सरापा के साथ कुर्सी पर बैठे देखा जैसे जाकिरीन और वायेजीन मिम्बरों पर ब्यान करते रहते हैं। बड़े बड़े उलमा और बुजुर्गाने दीन ने जिनसे मेरी कोई वाकफियत नहीं थी चारों तरफ से उनको घेर रखा था। ऐसे मैं मैंने देखा कि अचानक तुम उस भीड़ में दाखिल हो गये तुम्हारे चेहरे से नूर की किरणें फूट रही थी। जब तुम रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पहुंचे तो उन्होंने खड़े होकर तुम्हारी ताजीम की ओर माथा चूमा और कहा, "ऐ मेरे हमनाम मुहम्मद तुम मेरे इल्म के वारिस और मुसलमानों के दीनी और दुनियावी कामों को संवारने में मेरे जानशीन हो।"

वह सुनकर तुमने कहा, "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! लोगों पर अपने इल्म को जाहिर करते हुए मुझे खीफ महसूस होता है।"

जनाबे रिसालत मआब ने फरमाया, "खीफ को अपने दिल में जगह न दो क्योंकि जो कुछ तुम अपने बारे में सोचते हो इससे कहीं ज्यादा साहबे मर्तबा हो।"

मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने मेरे इस मन घड़त ख्याब को सुना तो खुशी से फूला नहीं समाया। वह बार बार मुझसे पूछता था क्या तुम्हारे ख्याब सच्चे होते हैं? और मैं उसे मुसलसल इल्मीनान दिलाता रहा। मैंने महसूस किया कि ख्याब के तजकिरे के साथ ही उसने अपने दिल में नये मज़हब के ऐलान का पक्का इरादा कर लिया है।

(5)

इसी दौरान लंदन से मुझे खत पहुंचा कि मैं फौरन करबला और नजफ के उन मुकद्दस शहरों की तरफ रवाना हो जाऊं जो शियों के लिये किब्लाए आरजू और इल्म व रुहानियत के मरकज हैं। अब सबसे पहले मैं मुकद्दमा के तौर पर उन दोनों मुकद्दस शहरों का एक निहायत मुख्तसर तारीखी पस मंज़र पेश करना चाहता हूं।

अहले तशीअ के पहले इमाम और आमातुल मुरलेमीन के चौथे खलीफा हज़रत अली की तदफीन शहर नजफ की अहमियत का आगाज है और यही से इस बस्ती का वजूद अमल में आता है और यह रोज़ बरोज फैलती चली जाती है ओर यह रिलसिला आज तक जारी है। हज़रत अली की शहादत के वक़्त मर्कजे ख़िलाफ़त यानी कूफ़ा से नजफ़ का फासला छः किलोमीटर था जिसे पैदल एक घंटे में तय किया जा सकता था। आपकी शहादत के बाद जनाब हसनैन आपके जनाजे को पोशीदा तौर पर इस दूर दराज़ इलाक़े में लाये जिसे आज नजफ़ कहा जाता है और रात की तारीकी में आपको दफ़न कर दिया। अब यह शहर बैनुन्नहरैन का सबसे बड़ा इलाका कहलाता है और इसकी आबादी कूफ़ा से कहीं ज़्यादा है। इस जगह अहले तशीअ का होजा-ए-इलमिया कायम है और दुनिया भर के उलमा ने इस शहर में बसेर इख़्तियार किया है। हर साल इसके बाज़ारों, मदरसों और घरों में इजाफ़ा होता चला जा रहा है। शिया उलमा खुसूसी एहतेराम के हामिल हैं। इसतंबोल में रहने वाले उस्मानी खलीफ़ा मुंदरजा ज़ैल वजूहात की बिना पर उनका बड़ा एहतेराम करता था।

१. ईरान का बादशाह शिया मजहब का पैरोकार था और उलमाए नजफ़ की निसबत उस्मानी सलातीन का एहतेराम ईरान और तुर्की के दोस्ताना रवाबित में मजबूती का बाइस था और इस तरह दोनों मुल्कों में जंग का खटका खत्म हो जाता था।

२. नजफ़ के आसपास में बहुत से कबीले आबाद थे जो सबके सब हथियार बंद और सरज़्ती से शिया मराजेअ के पैरोकार थे। उनके

पास फौजी हथियार और फौजी तर्बियत नहीं थी। यह लोग कबायली जिन्दगी के आदी थे लेकिन उलमा की तौहीन बर्दाश्त नहीं कर सकते थे लिहाजा अगर उस्मानियों की तरफ से उलमा की बे एहतेरामी होती तो वह सबके सब उस्मानियों के खिलाफ मुत्ताहिद हो जाते और यह कोई अकलमंदी की बात न थी कि इसतंबोल की खिलाफत ऐसा खतरा अपने लिये मोल लेती।

3. सारी दुनियाए तशीअ में शिया उलमा की मरजिइयत कायम थी लिहाजा अगर उस्मानियों की तरफ से ज़रा बराबर भी उनकी अहानत होती तो ईरान, हिंदुस्तान, अफ्रीका और दुनिया के तमाम मुल्कों के शिया बर भड़क जाते और यह बात तुर्क हुकूमत के हक में न थी।

अहले तशीअ का दूसरा मुकद्दस शहर करबला मोअल्ला है। यह शहर भी हज़रत अली और हज़रत फातिमा के फ़रज़ंद हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के बाद आज तक मुसलसल फैल रहा है। ईराक के लोगों ने इमाम हुसैन को दावत दी कि आप मुसलमानों के अमरे खिलाफत को संभालने के लिये हिजाज़ से कूफा तशरीफ़ लायें लेकिन ज्यों ही आप अपने खानदान के साथ करबला पहुंचे जो कि कूफा से तकरीबन 92 किलोमीटर के फासले पर है ईराक के लोगों का मिजाज बदल गया और वह यज़ीद के हुक्म पर इमाम के खिलाफ लड़ने पर तैयार हो गये।

यज़ीद बिन मुआविया उमवी खलीफा था जिसकी शाम पर हुक्मत थी। उमवी लश्कर हुसैन और उनके घराने से लड़ने लगा और आखिरकार उन सबको कत्ल कर दिया। ईराकियों की यह बुजदिली और यज़ीदी लश्कर की पलीदी और संगदिली इस्लामी तारीख की सबसे ज्यादा शर्मनाक दास्तान है। इस बाकिये के बाद से आज तक दुनिया के तमाम शिया करबला को जियारत, इबादत, रूहानी लगाव और तवज्जोह का मर्कज़ बनाये हुए हैं और हर तरफ से जूक दरजूक यहां पहुंचते हैं। कभी तो इतना मजमा होता है कि तारीखे मसीहियत में कभी ऐसा इज्तेमाअ देखने में नहीं आया। करबला के शहर में भी

शिया उलमा और मराजेअ दीने इस्लाम की तालीम व तरवीज में हमेशा मसरूफ नजर आते हैं। यहाँ के दीनी मदरसे तालिब इल्मों से भरे रहते हैं। करबला और नजफ बिल्कुल एक दूसरे के मुमासिल हैं। दजला व फुरात ईराक के दो बड़े दरिया हैं जिनका सर चश्मा तुर्की का एक कोहिस्तानी इलाका है बेनुन्नहेरेन की खेतियां इसी के दम से आबाद हैं और यहां के लोगों की खुशहाली इन्हीं दरियाओं की बदीलत है।

जब मैं लंदन वापस गया तो मैंने नौआदयाती इलाकों की वजारत को यह पेशकश की कि वह हुक्मते ईराक को अपना फरमाबर्दार बनाने के लिये दजला व फुरात के संगम को कंट्रोल करे और शोरिश और बगावत के मौकों पर उसके रास्ते को तबदील करे ताकि वहां के लोग अंग्रेजों के इस्तेमारी मकासिद को मानने पर मजबूर हो जायें।

मैं एक बरबरी सौदागर के भेस में नजफ पहुंचा और वहां के शिया उलमा से रस्म व राह बढ़ाने के लिये उनकी दरसी मजलिसों और बहस की महफिलों में शिकत करने लगा। महफिलें बेश्तर औकात मुझे अपने अंदर जज्ब कर लेती थीं क्योंकि उनमें कल्ब व जमीर की पाकी हुक्म फरमा थी। मैंने शिया उलमा को इंतेहाई पाक दामन और परहेजगार पाया लेकिन अफसोस कि उनमें जमाने की तबदीली के असरात की कमी थी और दुनिया के इंकलाबात ने उनकी फिक्र में कोई तबदीली पैदा नहीं की थी।

१. नजफ के उलमा और मराजेअ उस्मानी हुक्काम के शदीद मुखालिफ थे इसलिये नहीं कि वह सुन्नी थे बल्कि इसलिये कि वह ज़ालिम थे और अवाम उनसे नाखुश थे और अपनी निजात के लिये उनके पास कोई रास्ता नहीं था।

२. वह लोग अपना तमाम वक्त दर्स व तदरीस और दीनी उलूम व बहसों पर सर्फ करते थे और कुरुने बुस्ता के पादरियों की तरह उन्हें जदीद उलूम से दिलचस्पी नहीं थी और अगर कुछ जानते भी थे तो वह उनके लिये न जानने के बराबर था।

3. उन्हें दुनिया के सियासी वाकियात का बिल्कुल इल्म न था और इस किस्म के मसायल पर सोचना उनके नजदीक बिल्कुल बेकार और बेहूदा था। उन्हें देखकर मैं आप ही आप कहता था वाकई यह लोग कितने बंद बख्त हैं दुनिया जाग चुकी है मगर यह अभी ख्वाबे खरगोश ही में पड़े हैं। शायद कोई तबाह कुन मौज ही इनको इस ख्वाबे गिरां से बेदार करे। मैंने बाज़ उलमा से खिलाफते उस्मानिया के खिलाफ तहरीक चलाने पर गुप्तगू की लेकिन उन्होंने अपनी तरफ से कोई रद्दे अमल जाहिर नहीं किया और ऐसा मालूम होता था कि वह लोग इस किस्म के मसायल से दिलचस्पी नहीं रखते। बाज़ लोग मेरा मजाक उड़ाते थे और मेरी बात का यह मतलब निकालते थे कि मैं दुनिया के हालात को खराब और नजमे आलम को बरहम करना चाहता हूँ। उन उलमा की नज़र में खिलाफत मकदूर व महतूम थी। उनका अकीदा था कि उन्हें ज़हेर मेहदी मौऊद से पहले आले उस्मान के खिलाफ कोई इकदाम नहीं करना चाहिये। मेहदी मौऊद शियों के बारहवें इमाम हैं जो बचपन ही से पर्दे ग़ैबत में चले गये हैं और अभी तक जिन्दा हैं। आखिरी ज़माने में उनका जुहूर होगा और वह उस वक्त दुनिया को अदल व इंसाफ से भर देंगे, जब वह मुकम्मल तीर पर जुल्म व ज़्यादती से भर चुकी होगी।

मैं इस तरह के अकीदा रखने वाले इस्लामी दानिशमंदों के बारे में सख्त हैरान था। उनका अकीदा कशरी ईसाईयों की तरह का अकीदा था जो कयामे अदल के लिये हज़रत ईसा की वापसी को मानते थे। मैंने एक आलिम से पूछा क्या आपका यह अकीदा नहीं है कि अभी से जुल्म व ज़्यादती के खिलाफ लड़ते हुए दुनिया में इस्लाम का बोल बाला किया जाये? बिल्कुल उसी तरह जैसे पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जालिमों के खिलाफ जिहाद किया था?

उन्होंने फरमाया पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खुदा ने इसी काम के लिये मामूर किया था और इसी लिये उनमें इस काम को अंजाम देने की ताकत थी।

मैंने कहा, क्या कुरआन यह नहीं कहता कि "अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो अल्लाह भी तुम्हारा मददगार होगा।" लिहाजा तुम भी अल्लाह की तरफ से जालिमों के खिलाफ तलवार उठाने पर मामूर हो।

आखिरकार चिड़ होकर उसने कहा, तुम एक तिजारत पेशा आदमी हो और इन मौजूआत पर गुप्तगू के लिये सिलसिले इल्म की जरूरत है जिसके लिये तुम मुनासिब नहीं हो।

अब ज़रा नजफ की तरफ आर्य और हज़रत अली के रौजे के बारे में गुप्तगू करें। बड़ी पुर शिकोह और बा अज़मत आरामगाह है। पूरी इमारत बनावट नवकाशी, आईनाकारी और मुख्तलिफ सजावर्हों का बे मिसाल शाहकार है। मजार के आसपास बड़े बड़े पुर शिकोह कमरे, तलाई नाब का अजीम गुंबद और सोने के दो मीनारे एक अजीब मंजर पेश करते हैं। शिया हज़रात हर रोज़ गरोह दर गरोह रौजा की जियारत के लिये हाजिर होते हैं और वहां की नमाजे जमाअत में शिकत करते हैं। वह लोग बड़े वालेहाना अंदाज़ में इख़लास व इरादत का मुजस्समा बनकर जरीह को बोसा देते हैं। दाखिले से पहले आशिकाने इमाम दरवाजे की चीखट पर अपने आपको गिरा देते हैं और बड़े एहतेराम से बारगाह की जमीन को चूमते हैं। फिर इमाम अली पर दुरुद भेजते हैं और दाखिल होने की इजाजत पढ़कर हरम में दाखिल होते हैं। हरम के चारों तरफ एक अजीमुशशान सेहन है जिसमें बहुत से कमरे बने हुए हैं जो उलमाए दीन और जायरीने हरम की रिहाईशगाह हैं।

करबलाए मोअल्ला में दो मशहूर आरमागाहें हैं जो थोड़े से इख़लेलाफ के साथ नजफ में वाक़ेय हज़रत अली की आरामगाह के तर्ज पर बनाई गयी हैं। पहली आरामगाह इमाम हुसैन की और दूसरी हज़रत अब्बास की है। करबला के जायरीन भी नजफ की तरह रोज़ाना हरम में हाजिरी देते हैं और इमाम की जियारत करते हैं। करबला मजमूई तौर पर नजफ से ज़्यादा खुश मंजर है। चारों तरफ

हरे भरे खुशनुमा बागात और उनके दर्मियान दरिया के बहते पानी ने उसकी खूबसूरती में चार चांद लगा दिये हैं।

इन शहरों की वीरानी और आशुफता हाली ने हमारी कामयाबी के मोके फराहम कर रखे थे लोगों की हालते जार को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता था कि उस्मानी हुक्काम ने इन शहरों के रहने वालों के साथ किन किन जुर्मों का इतेंकाब किया और कैसी कैसी ज्यादतियां कीं। यह लोग बड़े नादान, लालची, और खुद सर थे और जो चाहते थे कर गुजरते थे। ऐसा मालूम होता था कि ईराक के लोग उनके जर खरीद गुलाम हैं। पूरी कौम हुक्ूमत से बेजार थी और जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ शिया हजरात अपनी आजादी के छिन जाने के बावजूद हुक्काम के जुल्म व सितम को सब्र व सकून से सह रहे थे और कोई रद्दे अमल जाहिर नहीं कर रहे थे। अहले सुन्नत हजरात का भी यही हाल था। वह लोग अपनी सर जमीन पर तुर्क गवर्नर के तसल्लुत से बहुत नाखुश थे खास तौर पर जबकि उनकी रगों में अरब अशराफियत का खून दौड़ रहा था। इधर खानदाने रिस्सालत से ताल्लुक रखने वाले अफराद हुक्ूमती इंतेंजामात में अपने आपको उस्मानी गवर्नर से ज्यादा हकदार समझते थे।

तमाम बस्तियां वीरान थीं। गर्द व गुबार बस्ती वालों का मुकद्दर बन चुका था। हर तरफ बंद नजमी का दौर दौरा था। रास्तों पर लुटेरे कबिज थे और इस ताक में बैठे रहते थे कि हुक्ूमत की सरपरस्ती से आजाद कोई काफिला वहां से गुजरे और वह उन्हें लूटना शुरू कर दें। लिहाजा बड़े बड़े काफिले सिर्फ उसी वक्त मंजिले मकसूद तक पहुंच सकते थे जब उन्हें हथियार बंद आदमियों के जरिये हुक्ूमत की हिमायत हासिल हो।

दूसरी तरफ कबायली झड़पों में भी इजाफा हो गया था। कोई दिन ऐसा न था जिसमें एक कबीला दूसरे कबीले पर हमला आवर न हो और कतल व गारतगरी का बाजार गर्म न होता हो। रोजाना कई अफराद मौत के घाट उतर जाते थे। नादनी और बे इल्मी ने पूरे

इराक को अजीब तरह अपनी लपेट में ले रखा था। यह बाकेंयात कुरूने पुस्ता में पादरियों के दीर की याद ताजा कर रहे थे। सिर्फ नजफ और करबला के उलमा इस से बचे हुए थे या फिर किसी कदर तालिबे इल्म या वह लोग जिनका इन उलमा से मेल जोल था वरना सबके सब जाहिल थे। मुल्की मईशत का पहिया जाम हो गया था और बीमारी, बेरोजगारी, जहालत और बद बख्तियों ने शिद्दत से मुतवरिसत लोगों का घर देख लिया था। हुकूमत का शीराजा बिखर चुका था। हर तरफ एक हंगमा बपा था। हुकूमत और अवाम के दर्भियान समझौते की कमी थी और वह एक दूसरे को अपना दुश्मन समझते थे। उनका एक दूसरे के साथ तआवुन नहीं था। उलमाए दीन इत्ताही मसायल में इस तरह डूबे थे कि दुनिया की जिन्दगी उनकी नज़रों से ओझल हो गयी थी।

जमीन खुश्क और खेतियां उजाड़ थीं। दजला फुरात के दोनों दरिया खेतों को सैराब करने के बजाए एक आशुफता सर मेहमान की तरह प्यासी जमीनों के बीच से तेजी से गुजर रहे थे। मुल्क की यह आशुफता हाली यकीनन एक इंकैलाब का धमक थी।

मुख्तसर यह कि मैंने करबला और नजफ में चार महीने गुजारे। नजफ में मैं एक ऐसी बीमारी में मुब्तला हुआ कि जीने की आस टूट गयी। तीन हफ्ते तक मेरी बुरी हालत थी। आखिरकर मुझे शहर के एक डाक्टर से रुजूअ करना पड़ा। उसने मेरे लिये कुछ दवायें तजवीज़ की जिनके इस्तेमाल से मैं आहिस्ता आहिस्ता बेहतर होता चला गया। उस साल गर्मी भी बड़ी शदीद और नाकाबिले बर्दाश्त थी और मैंने अपनी बीमारी का तमाम वक्त एक तह खाने में गुजारा जो किसी कदर पुर सुकून और ठंडा था। मेरा मालिके मकान मेरे दिये हुए मुख्तसर पैसे से मेरे लिये दवा दारू और खाने पीने का इंतजाम करता था। वह हजरत अली के जव्वारों की खिदमत को खुदा की नज़दीकी का जरिया समझता था। बीमारी के इक्तेदाई दिनों में मेरी गिज़ा मुर्ग का सूप था लेकिन बाद में डाक्टर की इजाजत से मैंने गोश्त और चावल भी इस्तेमाल करना शुरू किया।

बीमारी से किसी कदर ठीक होने के बाद मैं बगदाद खाना हुआ और वहां जाकर मैंने करबला, नजफ, हुल्ला और बगदाद से मुताल्लिक अपने मुशाहेदात को तकरीबन सौ सफहात पर मुश्तमिल एक रिपोर्ट में नौआबादयाती इलाकों की बजारत के लिये लिख और लंदन भेजने के लिये उसे बगदाद में उस बजारत के नुमाइंदे के सुपुर्द किया और अपने रुकने या लंदन वापस जाने से मुताल्लिक नये अहकामात के इंतैजार में बैठा रहा।

यहां यह बात भी बताता चलूं कि मैं वापसी के लिये बहुत बे करार था क्योंकि अपने देश, खानदान और अजीज व अकारिब से छूटे मुझे एक अर्सा हो चुका था। खास तौर पर रह रहकर रासपोटीन का ख्याल आ रहा था जो मेरी ईराक खानगी के कुछ अर्से बाद ही इस दुनिया में आया था। उस नौ मौलूद की याद मुझे बहुत बेचैन कर रही थी। इसी बाइस मैंने दरख्वास्त में एक मुख्तसर अर्से के लिये वापस लंदन आने की इजाजत चाही थी। मुझे ईराक में तीन साल का अर्सा हो चुका था। बगदाद में नौआबादयाती इलाकों की बजारत के नुमाइंदे का इसरार था कि मैं बार बार उसके पास न जाऊं क्योंकि इस तरह मुमकिन है कि लोग मुझे शक की निगाह से देखने लगे और इसी बात को मद्दे नज़र रखते हुए मैंने दजला के करीब एक मुसाफिरखाने को अपना ठिकाना बनाया। नौआबादयाती इलाका की बजारत के नुमाइंदे ने कहा था कि लंदन से जवाब आते ही मुझे इत्तेला कर दिया जायेगा।

बगदाद में रहने के दौरान मैंने इस शहर का आम हालतों में उस्मानी हुकूमत के पाया-ए-तरज़ कुसतुनतुनिया से मवाज़ना किया तो मुझे उन दोनों में नुमायां फर्क महसूस हुआ जो अरबों की निसबत उस्मानियों की दुश्मनी और बद नीयती को जाहिर करता था। उन्होंने ईराकी शहरों और इराकी आबादियों को सेहत की हिफाजत के तमाम उसूलों के बर खिलाफ गलाजत और गंदगी का मसकन बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

बसरा से करबला और नजफ पहुंचने के चंद माह बाद मुझे शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब का ख्याल आया। मैं उसकी तरफ से बड़ा फिक्रमंद था। मैंने उस पर बड़ी मेहनत की थी लेकिन मुझे उस पर भरोसा नहीं था क्योंकि वह घंचल मिजाज बाकेंय हुआ था। इसके अलावा वह गुस्से का भी बड़ा तेज था और जरा जरा सी बात पर आपे से बाहर हो जाया करता था। इन खुरूसियात के पेशे नजर मुझे धड़का था कि कहीं मेरी मेहनत बेकार न जाये और जिस ख्वाहिश को मैं एक अर्से से अपने सीने में लिये फिर रहा हूँ उस पर पानी न फिर जाये।

जिस दिन मैं बसरा की सप्त रवाना हो रहा था वह तुर्की जाने के लिये ज़िद कर रहा था कि वहां जाकर उस शहर के बारे में मालूमात हासिल करे। मैंने बड़ी सख्ती से उसे उस सफर से रोका और कहा मुझे डर है कि तुम वहां जाकर कोई ऐसी उल्टी सीधी बात न कर बैठो जिससे तुम पर कुफ्र व इलहाद का इल्जाम आयद हो और तुम्हारा खून बेकार जाये लेकिन सच्ची बात यह थी कि मैं नहीं चाहता था कि वहां जाकर वह बाज उलमाए अहले सुन्नत से कोई राब्ता कायम करे। क्योंकि इसमें इस बात का खतरा था कि कहीं वह लोग अपनी मजबूत दलीलों के जरिये दोबारा उसे अपने जाल में न फांस लें और मेरे तमाम मंसूबे धरे के धरे रह जायें।

जब मैंने देखा कि मुहम्मद बसरा से जाने की ज़िद कर रहा है तो मजबूरन मैंने उसे ईरान जाने पर उभारा कि वहां जाकर वह शीराज़ और असफहान की सैर करे।

यहां इस बात की वज़ाहत भी ज़रूरी है कि उन दोनों शहरों के रहने वाले शिया मजहब के पैरोकार हैं और यह बात सोच से बहुत परे थी कि शैख उनके अकायद से मुतारिसर हो। मुझे इस बारे में पूरा इत्मीनान था क्योंकि मैं शैख को अच्छी तरह जानता था।

रुखसत होते हुए मैंने उससे पूछा "तकिया के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?"

उसने कहा, दुरुस्त है क्योंकि पैगम्बर इस्लाम के एक सहाबी अम्मार उन मुशरिकीन के डर से जिन्होंने उनके मां बाप को कत्ल कर दिया था अपने आपको मुशरिक जाहिर करते रहे और खतमी भरतबत ने जनाब अम्मार यासिर की इस बात की तरफ इशारा भी किया है।

मैंने उससे कहा, पस तुम पर भी बाजिब है कि ईरान जाकर तफिया को न भूलो और अपने आप हो खालिस शिया जाहिर करो ताकि एतेराफात से बचे रहो और उलमा की सोहबत भी तुम्हें हासिल रहे और साथ ही साथ ईरानियों के आदाब व रुसूम भी तुम पर खुल जाये। क्योंकि आइंदा चलकर यह मालूमात तुम्हारे बहुत काम आयेगी और तुम्हें अपने मकासिद में बड़ी कामयाबी अता करेंगी।

इस गुफ्तगू के बाद मैंने उसे कुछ रकम जकात के उनवान से दी। जकात एक तरह का इस्लामी टेक्स है जिसे सरमाया दारों से वसूल किया जाता है ताकि इस आमदनी को उम्मत के फलाह व बहबूद पर खर्च किया जाये। जाते हुए मैंने रास्ते ही मैं उसे एक घोड़ा खरीद कर दिया क्योंकि उसे उसकी सख्त जरूरत थी और फिर मैं उससे अलग हो गया और उस दिन से अब तक उसकी कोई खबर नहीं है और नहीं मालूम उस पर क्या बीती होगी। मुझे ज्यादा फिक्र इसलिये भी थी कि हम ने बसरा से निकलते वक्त यह तय किया था कि हमें वापस बसरा ही पहुंचना है और अगर हम में से कोई वहां न पहुंच सके तो अपनी कैफियत अब्दुर रजा तरखान को लिख भेजे ताकि दूसरा उससे बाखबर हो मगर अभी तक उसकी तरफ से कोई इत्तेला नहीं मिली थी।

(6)

कुछ अर्सा इतेजार के बाद बिल आखिर नौआबादयाती इलाकों की बजारात से जरूरी अहकामात बगदाद पहुंचे और मेरी हुक्मत ने मुझे फौरी तौर पर तलब किया। लंदन पहुंचते ही नौआबादयाती इलाकों की बजारात के सेक्रेट्री और आला ओहदेदारों के साथ हम ने एक कमीशन बनाया। मैंने इस जल्से में अपने फरायज, इकदामात और मुतालआत पर मबनी रिपोर्ट को लंदन हुक्काम के सामने पेश किया और उन्हें बैनुन्नहरैन की कैफियत से भी आगाह किया।

ईराक से मुताल्लिक मेरी दी गयी मालूमात और मेरी कारगुजारियों ने सबके दिल जीत लिये थे। पहले भी ईराक से मैंने कई रिपोर्टें उनके यहां रवाना की थीं और इन सब से वह मुतमईन थे। उधर सफिया ने भी एक रिपोर्ट भेजी थी जो पूरी तरह मेरी रिपोर्ट की ताईद करती थी। इसके अलावा मुझे यह बात भी मालूम हुई कि बजारात खाना ने मेरी निगरानी के लिये कुछ मखसूस अफराद को मेरे पीछे लगा रखा था जो सफर व हजर में मुझ पर निगाह रखते थे। उन अफराद ने भी अपनी रिपोर्टों में मेरे तर्ज अमल और दिलचस्पी से खुशी का इजहार किया था और उन रिपोर्टों की तसदीक व ताईद की थी जिन्हें मैंने लंदन भेजा था। इस मर्तबा पूरे तौर पर मैदान मेरे हाथ था और सब मुझसे खुश थे यहां तक कि उस दौर के सेक्रेट्री ने वजीर से मेरी मुलाकात के लिये वक्त लिया और मैं उसके साथ वजीर से मिलने गया। मुझे देखते ही वजीर के चेहरे पर एक तरह की खुशी आ गयी और बड़े पुरतपाक अंदाज में खुश आमदीद कहते हुए उसने मुझसे हाथ मिलाया। यह मुलाकात पहले की बेजान और मुख्तसर मुलाकातों से बिल्कुल मुख्तलिफ थी जो इस बात को जाहिर करती थी कि मैंने उसके दिल में अपने लिये जगह पैदा कर ली है।

वजीर खास तौर से मेरी इस महारत का मुतआरिफ था जिसकी बुनियाद पर मैंने शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को अपने कब्जे में

कर लिया था। मुझे याद है कि उसने अपनी गुप्तगू के दौरान मुझसे कहा था, "मुहम्मद पर गलबानी आदयाती वजारत का सबसे अहम मसला था" उसने बड़ी शिद्दत से यह ताकीद की थी कि मैं मुहम्मद को एक मुनज्जम मंसूबे के तहत उन कामों से आगाह कर दूँ जिन्हें आइंदा चलकर उसे हमारे लिये अंजाम देना है। वह बार बार इस बात का एतेराफ कर रहा था कि अजीम बर्तानिया के लिये मेरी तमाम खिदमात शीख मुहम्मद जैसे शख्स की तलाश और उस पर अपना असर व नुफूज कायम करने के मुकाबले में कुछ भी नहीं। मकबूजा इलाकों के वजीर को जब इस बात का इल्म हो गया कि मैं शीख की गुमशुदगी के बारे में बहुत परेशान हूँ तो उसने निहायत इल्मीनान से जवाब दिया, "परेशान होने की जरूरत नहीं तुमने जो कुछ शीख को पढ़ाया था वह अभी तक उसे याद है और हमारे आदमी असफहान में उससे राबता कायम रखे हुए हैं। उनकी रिपोर्टों से मालूम होता है कि शीख अभी तक अपनी डगर पर कायम है। मैंने आप ही आप कहा, शीख ने अपने इस गुरुर व अहंकार के साथ अंग्रेज जासूस को कैसे इजाजत दी होगी कि वह उसके बारे में मालूमात फराहम कर सकें। इस मौजूअ पर वजीर से बात चीत करते हुए मुझे खौफ महसूस हुआ कि कहीं वह बुरा न मान जाये। बाद में शीख से दोबारा मुलाकात पर मुझे सब कुछ इल्म हो गया और उसने तमाम माजरा कह सुनाया। उसने बताया कि असफहान में उसकी दोस्ती अब्दुल करीम नामी एक शख्स से हुई जो अपने आपको अहले कलम जाहिर करता था और उसी ने शीख पर अपना सिक्का बिठाकर उसके तमाम राज मालूम किये थे। इसके साथ ही सफिया भी कुछ अर्से बाद असफहान आई और उसने मजीद दो महीने के लिये शीख से मुतआ किया। शीराज के सफर में वह इसके साथ नहीं थी बल्कि अब्दुल करीम ने उसे अपने साथ रखा हुआ था। शीराज में अब्दुल करीम ने शीख के लिये सफिया से भी ज्यादा खूबसूरत लड़की का इतेजाम किया था और वह शीराज के एक यहूदी खानदान की हसीन व जमील लड़की थी जिसका नाम आसिया था। अब्दुल करीम असफहान के एक मादर

पिंदर आज़ाद ईसाई का फ़जी नाम था और वह भी आसिया की तरह इंसान में बर्तानिया के मकबूज़ा इलाकों की बज़ारत का एक पुराना मुलाज़िम था।

मुख्तसर यह कि अब्दुल करीम, सफ़िया, आसिया और मैंने मिलकर अपनी रात दिन की कोशिशों से शीख मुहम्मद बिन अब्दुल बहाब को मकबूज़ा इलाकों की बज़ारत की ख्वाहिशात के ऐन मुताबिक डाला और आइंदा की प्लानिंग को रूब अमल लाने की जिम्मेदारी उठाने पर आमादा किया। यहां यह नुक्ता भी काबिले जिक्र है कि वज़ीर से मुलाकात के मौक़े पर सेक्रेट्री के अलावा बज़ारत के दो और आला ओहदेदार भी वहां मौजूद थे जिन्हें उस वक़्त तक मैं नहीं जानता था। वज़ीर ने इजलास के इस्तेताम पर मुझसे कहा, अब तुम इंग्लिस्तान की मकबूज़ा बज़ारत के सबसे बड़े इफ़तेख़ारी निशान के हक़दार हो और यह वह इनाम है जिसे हमारी हुकूमत अव्वल नंबर के जासूस को दिया करती है। खुदा हाफ़जी के मौक़े पर उसने कतई अंदाज़ में कहा मैंने सेक्रेट्री से कह दिया है कि वह तुम्हें हुकूमत के बाज़ पोशीदा और कुछ राजदारांना मसायल से आगाह करे ताकि तुम अपनी जिम्मेदारियों को ज़्यादा बेहतर तरीक़े से अंजाम दे सको।

वज़ीर की खुशनूदी के सबब मेरी दस दिन की छुट्टी मंज़ूर हुई और मुझे अपनी बीबी और एक अदद बच्चे से मिलने का मौक़ा हाथ आया। मेरा लड़का जो अब तीन साल का हो चुका था बिल्कुल मेरा हम शक्ल था और कुछ अल्फ़ाज़ बड़े मीठे अंदाज़ में बोलने लगा था। उसने चलना भी सीख लिया था। मैं हकीकतन अपने दिल के टुकड़े को ज़मीन पर चलता फिरता महसूस कर रहा था। अफ़सोस कि खुशी के यह लम्हात बड़ी तेज़ी से गुज़र रहे थे। बीबी और बच्चे के साथ गुज़रने वाले यह खुशी के लम्हात वाकई नाकाबिले बयान हैं और जिन्दगी की तमाम लज्जतें इसके आगे फीकी हैं। मेरी एक उम्र रसीदा चच्ची थी जिसकी मुझ पर बचपन ही से नवाज़िशत और मेहरबानियां रही हैं। मैं उससे मिलकर किस क़दर खुश हुआ इसका अंदाज़ा किसी को भी नहीं हो सकता। मेरी उससे यह आख़री

मुलाकात थी इसलिये कि दस दिन की छुट्टियों के बाद जब मैं तीसरी मर्तबा अपने राफर पर खाना हुआ तो निहायत अफसोस के साथ मुझे उसकी मौत की इत्तेला मिली।

मेरी दस दिन की यह छुट्टियां पलक झपकते गुजर गयीं। यह एक कड़वी हकीकत है कि ज़िन्दगी के खुशी के लम्हात हमेशा बड़ी तेजी से गुजरते हैं और मुसीबत की घड़ियां अपने दामन में सालों का फासला रखती हैं। लंदन के खुशी के लम्हात में मैंने अपनी नजफ की बीमारी को याद किया जिसका हर लम्हा मेरे लिये एक सदी बन गया था। मैं किसी तरह भी मुसीबत के उन दिनों को भुला नहीं सकता। खुशी के लम्हात को इतना दवाम नहीं कि वह मुसीबतों के दिनों की तकलीफ को यादों के दरीचों में न आने दें।

दस दिनों की छुट्टियां मनाने के बाद आइंदा के प्रोग्राम से बाखबर होने के लिये मैं दिल न चाहते भी वज़ारत खजाना गया। सेक्रेटरी से मुलाकात के मौके पर मैंने उसे हमेशा की तरह खुश व खुर्रम पाया। उसने मुझसे बड़ी गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाया और दोस्ताना लहजे में कहा-

मकबूज़ा उमूर के खुसूसी कमीशन की मर्जी के मुताबिक वज़ीर ने खुद मुझे यह हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें दो अहम राजों से आशना करूं। इन राजों से बाकफियत आइंदा के प्रोग्रामों में तुम्हारे लिये बहुत मुफीद साबित होगी और इन दो बातों से मकबूज़ा इलाकों की वज़ारत के सिर्फ चंद एक मिम्बरान ही बाखबर हैं। यह कह उसने मेरा हाथ थामा और अपने साथ वज़ारत खाना के एक कमरे में ले गया जहां कुछ लोग एक गोल मेज के गिर्द बैठे हुए थे। उन्हें देखकर तअज्जुब से मेरी चीख निकलते निकलते रह गयी क्योंकि उस इजलास के आदमियों की कैफियत कुछ यूं थी।-

१. हू वहू सल्लनते उसमानी का जलालत अफरोज पैकर जो तुर्की और अंग्रेजी जुवानों पर बड़ी महारत से मुसल्लत था।

२. कुसतुनतुनिया के शैखुल इस्लाम की दूसरी हकीकत से

करीब तसवीर।

3. शहंशाहे ईरान का जिन्दा मुजस्सामा।
4. दरबारे ईरान के शिया आलिम की मुकम्मल शबीह।
5. नजफ में शियों के मरजेअ तकलीद का बे मिरल सरापा।

यह आखरी तीन अफराद फारसी और अंग्रेजी जुबानों में गुप्तगू कर रहे थे। सबके नजदीक उनके प्राईवेट सेक्रेट्री बैठे थे, जो उनकी बातों को नोट बनाकर हाजिरीन के लिये उस का तर्जुमा पेश कर रहे थे। जाहिर है कि उन तमाम प्राईवेट सेक्रेट्रियों का किसी जमाने में इन पांच शख्सियतों से बहुत करीब का राब्ता रह चुका था और उनकी मुकम्मल रिपोर्ट के तहत उन पांच हम शबीह अफराद को हु-बहु तमाम आदात व खसायल के साथ जाहिरी और बातिनी एतेबार से असली अफराद की मुकम्मल तसवीर बनाया गया था। यह पांचों सवांगी अपने फरायज और मुकाम व मनसब की बखूबी जानते थे। सेक्रेट्री ने बात शुरू करते हुए कहा, इन पांच अफराद ने असली शख्सियतों का बहरूप भर रखा है और यह बताना चाहते हैं कि वह किस तरह की सोच रखते हैं और आइंदा के बारे में इनका क्या ख्याल है। हमने इसतंबोल, तेहरान और नजफ की मुकम्मल इत्तेलाआत इन्हें फराहम करदी है। अब वह अपने मैकअप को हकीकत पर महमूल किये बैठे हैं और इसी एहसास के साथ अपनी हासिल कर्दा मालूमात से हमारे सवालों का जवाब देते हैं। हमारी जांच पड़ताल के मुताबिक इनके सत्तर फीसद जवाबात हकीकत के ऐन मुताबिक या यूँ कहिये कि असली शख्सियतों के अफकार से मेल नहीं खाते हैं। सेक्रेट्री ने अपनी गुप्तगू के दौरान मुझे मुखातब करके कहा "अगर तुम चाहो तो तुम इनमें से किसी का इम्तेहान ले सकते हो। मिसाल के तौर पर नजफ के शिया मरजेअ तकलीद से जो चाहो पूछ सकते हो। मैंने कहा बहुत अच्छा, और फौरन ही कुछ सवालात पूछ डाले।

मेरा पहला सवाल यह था किब्ला व काबा! क्या आप अपने मुकल्लेदीन को इस बात की इजाजत देते हैं कि वह सुन्नी और

मुतअस्सिब उस्मानी हुकूमत की मुखालिफत पर तैयार और उनके खिल्फाफ ऐताने जंग करें?

नकली या सवांगी मरजेअ तकलीद ने कुछ देर सोचा और कहा, मैं मुतलक जंग की इजाजत नहीं देता क्योंकि वह सुन्नी मुसलमान हैं और कुरआन की आयत कहती है कि तमाम मुसलमान आपस में भाई भाई हैं। सिर्फ इस सूरत में जंग जायज है जब उस्मानी हुक्मरान जुल्म व सितम पर उतर आये। ऐसी हालत में अमर बिल मारुफ (नेकी का हुक्म देना) और नहीं अनिल मुन्कर (बुराई से मना करना) के तहत उनसे जंग लड़ी जा सकती है। वह भी उस वक्त तक जब आसारे जुल्म खत्म न हो जायें और जालिम जुल्म से बाज न आ जाये।

मैंने फिर दूसरा सवाल पूछा, हुजुरे वाला! यहूदियों और ईसाईयों की नजासत के बारे में आपका क्या ख्याल है क्या यह लोग वाकई नापाक हैं?

उसने कहा, हां यह दोनों फिरके पूरे तीर पर नापाक हैं और मुसलमानों को इनसे दूर रहना चाहिये।

मैंने पूछा इसकी वजह क्या है?

उसने जवाब दिया, यह दर असल बराबर के सुलूक का मसला है क्योंकि वह लोग भी हमें काफिर मानते हैं और हमारे पैगम्बर को झुटलाते हैं।

इसके बाद मैंने पूछा पैगम्बरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सफाई से मुताल्लिक इतनी ताकीदात के बाद कि सफाई ईमान की अलामत है फिर क्यों हजरत अली के सेहने मुतहहर और तमाम बाजारों में इस कदर गंदगी फैली रहती है?

मरजेअ तकलीद ने जवाब दिया, बेशक इस्लाम ने सफाई और सुथराई को ईमान की दलील जाना है मगर इसको क्या किया जाये कि उस्मानी हुकूमत के उम्माल की वे तबज्जोही और पानी की कमी ने यह सूरत पैदा की है।

दिलचस्प बात यह थी कि उस बनावटी मरजेअ तकलीद की आमादगी और हाजिर जवाबी नजफ के हकीकी मरजेअ तकलीद के ऐन मुताबिक थी। फकत उस्मानी हुक्मत के उम्माल की ये तवज्जोही की बात उसने अपनी तरफ से इस में मिलाई थी क्योंकि नजफ के आलिम की जुबान से यह जुमला नहीं सुना गया था। बहरहाल मैं उसकी आहंगी और मुशाबहत पर सख्त हैरान था क्योंकि तमाम जबाबात बिल्कुल असली मरजेअ तकलीद के ब्यानात थे जिसे उसने फारसी में पेश किया था और यह नकली मरजेअ भी फारसी ही में गुफ्तगू कर रहा था।

सेक्रेट्री ने मुझसे कहा, "दीगर चार अफराद से भी चाहो तो सवाल कर सकते हो, यह चारों अफराद भी तुम्हें असली शख्सियतों की तरह जवाब देंगे।"

मैंने कहा कि मैं इसतंबोल के शैखुल इस्लाम अहमद आफंदी के अफकार और बयानात से बखूबी वाकिफ हूँ और उसकी बातें मेरे हाकिजे में महफूज हैं। आपकी इजाजत से मैं उसके हम शक्ल से गुफ्तगू करूंगा। इसके बाद मैंने पूछा आफंदी साहब! क्या उस्मानी खलीफा की इताअत वाजिब है?

उसने कहा, हां मेरे बेटे! उसकी इताअत खुदा और उसके रसूल की इताअत की तरह वाजिब है।

मैंने पूछा किस दलील की बुनियाद पर?

उसने जवाब दिया, क्या तुमने यह आयते करीमा नहीं सुनी है कि खुदा, उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और उलुल अम्र की इताअत करो।

मैंने कहा "अगर हर खलीफा उलुल अम्र है तो गोया खुदा ने हमें यजीद की इताअत का भी हुक्म दिया है क्योंकि वह उस वक्त का खलीफा था हालांकि उसने मदीना को लूटने का हुक्म दिया था और नवासे रसूल हजरत इमाम हुनैन को कत्ल किया था। खुदावंद

अलीम किस तरह बलीद की इताअत का हुक्म देगा जबकि वह शराब खोर था।

नकली शैखुल इस्लाम ने जवाब दिया, मेरे बच्चे यजीद अल्लाह की तरफ से मोमिनों का अमीर था लेकिन कत्ले हुसैन में उससे खता हो गयी थी जिसके लिये बाद में उसने तौबा कर ली थी मदीना में कत्ल व गारतगरी का सबब वहां के लोगों की सरकशी और यजीद की इताअत से हटना था जिसमें यजीद का कोई कसूर नहीं था। अब रह गया बलीद तो इसमें शक नहीं कि वह शराब पीता था लेकिन शराब में पानी भिलाकर पीता था ताकि उसकी मरती खत्म हो जाये और वह इस्लाम में जायज़ है।

मैंने कुछ अर्सा पहले इस्तंबोल में हुर्मते शराब से मुताल्लिक मसले को वहां के शैखुल इस्लाम शैख अहमद से दर्याफ्त कर लिया था। उसका जवाब थोड़े से इख्तेलाफ के साथ लंदन के इस नकली शैखुल इस्लाम के जवाब से मिलता जुलता था। मैंने असल से नकल की ऐसी सबाहत तैयार करने की कोशिशों को सराहते हुए सेक्रेट्री से पूछा आखिर इस काम से क्या फायदा हासिल हो सकता है?

उसने जवाब दिया, इस तरह हम बादशाहों और सुन्नी शिया उलमा के अफकार और उनके रुझान से आशनाई हासिल करते हैं। फिर उन मकालमात को परखा जाता है और उनसे नतायज निकाले जाते हैं और फिर हम इलाके के दीनी और सियासी मसायल में दखल अंदाजी करते हैं मसलन अगर हमें यह मालूम हो जाये कि फलां आलिम या फलां बादशाह इलाके की मशिरकी सरहदों में हमसे दुश्मनी पर उतर आया है तो हम उसके अमल को नाकारा बनाने के लिये हर तरफ से अपनी तवानाईयों को इस सप्त में लगा देते हैं लेकिन अगर हमें यह न मालूम हो कि हमारा हकीकी दुश्मन किस मुकाम पर सरगमें अमल है तो फिर हमें अपनी तवानाईयों को इलाके के चप्पे चप्पे में फैलाना पड़ता है। यह अमल हमें इस बात में भी मदद देता है कि हम इस्लाम के अहकाम व फरामीन से एक फर्द मुस्लिम

के तर्ज इस्तिंबात को समझें और उसके जेहन में शक और तजबजुब पैदा करने के लिये ज्यादा वाजेह और ज्यादा तर्क युक्त मतालिब फराहम करें और उसके अकायद को झूठा करार दें। इख़्तेलाफ़ात, तफ़रक़े, गड़बड़ और मुसलमानों के अकायद में हलचल पैदा करने के लिये इस तरह के इक़दामात वे इत्तेहा असरदार पाये जाते हैं। इसके बाद सेक्रेट्री ने मुझे एक हजार सफ़र्हों पर मुश्तमिल एक मोटी किताब मुताला के लिये दी। उस किताब में असली और नकली अफ़राद की गुफ्तगू और बहस के तजज़िया और मुकाबलों के नतायज से मुताल्लिक आदाद व शुमार लिखे थे और मुझे हासिल शुदा नतायज की बुनियाद पर इस्लामी दुनिया में फौजी, माली, तात्बीभी और मजहबी मसायल से मुतअल्लिक हुक्मते बर्तानिया के बनाए गए प्रोग्रामों से वाकफ़ियत हासिल करना थी। बहरहाल मैं किताब घर ले गया और तीन हफ़्ते के अर्से में बड़ी तवज्जोह के साथ शुरू से आखिर तक उसका मुताला किया और मुकर्ररा मुद्दत में मकबूज़ा इलाकों की वज़ारत को वापस दे आया। किताब वाकई बड़ी मेहनत से तैयार की गयी थी। इसमें साहिबाने इल्म, साहिबाने सिवासत और इस्लाम की दीनी शख़िसयतों के अकायद व नज़रियात के बारे में इस खूबी से बहस की गयी थी और नतीजा निकाला गया था कि पढ़ने वाला दंग रह जाता था। सत्तर फीसद बार्त हकीकत पर थे जबकि 30 फीसद में इख़्तेलाफ़ था। किताब के मुताले के बाद मुझे इत्मीनान हो गया कि मेरी हुक्मत यकीनन अपने अमल में कामयाब होगी और इस किताब की पेशगोई के मुताबिक़ सलतनते उस्मानी एक सदी से कम अर्से में बहरहाल खत्म हो जायेगी।

सेक्रेट्री से मिलने के बाद मुझे यह बात मालूम हो गयी कि मकबूज़ा इलाकों की वज़ारत में दुनिया के तमाम मुमालिक के लिये चाहे वह इस्तेमारी हों या नीम इस्तेमारी इस तरह की शबीह साज़ी या नकली रूप का अमल बरुए कार लाया गया है और इनतमाम मुमालिक को पूरी तरह इस्तेमार के शिकंजे में जकड़ने के इत्तेजामात मुकम्मल किये गये हैं।

सेक्रेट्री ने अपनी गुफ्तगू के दौरान मुझे से कहा था कि यह वह पहला राज है जिसे उसने वजीर के हुक्म के मुताबिक मुझे बताया है मगर दूसरे राज को इस किताब की दूसरी जिल्द पढ़ने पर एक माह बाद मुझे बतायेगा।

मैंने दूसरी किताब लेकर उसका मुताला शुरू किया। यह किताब पहली किताब को मुकम्मल करती थी। इसमें इस्लामी मुमालिक से मुताल्लिक नई इत्तेलाआत, जिन्दगी के मुख्तलिफ मसायल में शिया सुन्नी अकायद व अफकार जो हुक्मत की कमजोरी या तवानाई को ज़ाहिर करते थे, और मुसलमानों की गुरबत के असबाब वगैरह पर गुफ्तगू थी। इस किताब में उन मौजूआत पर बड़ी सैर हासिल बहस की गयी थी और मुसलमानों के कमजोर पहलुओं या ताकत के ज़राए को नुमायां किया गया था और इन से अपने हक में फायदा उठाने की तदाबीर समझाई गयी थी। इस किताब में मुसलमानों की जिन कमजोरियों की तरफ इशारा किया गया था वह यह थी -

१. शिया सुन्नी इख्तेलाफ ।

हुक्मरानों के साथ कौमों के इख्तेलाफात।

ईरानी और उस्मानी हुकमतों के इख्तेलाफात।

कयायली इख्तेलाफात।

उलमा और हुक्मत के ओहदेदारों के दर्मियान गलत फहमियां।

२. तकरीबन तमाम मुसलमान मुल्कों में जहालत और नादानी की अधिकता।

३. फिक्री जुमूद और तअस्सुब, रोज़ाना के हालात से बे खबरी, काम और मेहनत की कमी।

४. भौतिक जिन्दगी से बे तवज्जोही, जन्नत की उम्मीद में हद से ज्यादा इबादत जो इस दुनिया में बेहतर जिन्दगी के रास्तों को बंद कर देती थी।

५. घमंडी बादशाहों के जुल्म व सितम।

६. अमन व अमान की कमी, शहरों के दर्मियान सड़कों और रास्तों की कमी, ईलाज मुआलिजे की सहूलतों और हिफजाने सेहत के उसूलों की कमी जिसकी बिना पर ताऊन या इस जैसी छूत की बीमारियों से हर साल आबादी का एक हिस्सा मीत की नजर हो जाता।

७. शहरों की वीरानी, आवपाशी के निजाम की कमी जराअत और खेती बाड़ी की कमी।

८. हुक्मती दफ्तरों में बद इतेजामी और कायदे कवानीन की कमी, कुरआन और अहकामे शरीअत के एहतेराम के बावजूद अमली तौर पर उससे लापरवाही।

९. पस मांदा और गैर सेहतमंदाना मशीयत पूरे इलाके में आम गुरबत और बीमारी का दौर दौरा।

१०. सही तर्बियत याफता फौजों की कमी हथियार और दिफाई साज व सामान की कमी और मौजूदा हथियारों का पुराना पन।

११. औरतों की तहकीर और उनके हुक्क की पामाली।

१२. शहरों और देहातों की गंदगी, हर तरफ कूड़े करकट के अंवार, सड़कों शाहराहों और बाजारों में अशिया-ए- फरोख्त के बे हंगम ढेर, वगैरह।

मुसलमानों के इन कमजोर पहलुओं को गिनवाने के बाद किताब ने इस हकीकत की तरफ भी इशारा किया था कि शरीअते इस्लाम का कानून मुसलमानों की इस तर्ज जिन्दगी से रत्ती बराबर भी मेल नहीं खाता लेकिन यह बात जरूरी है कि मुसलमानों को इस्लाम की हकीकी रूह से बे खबर रखा जाये और उन्हें दीन की सच्चाईयों तक न पहुंचने दिया जाये। इसके बाद किताब ने बसूरते फेहरिस्त उन अयामिर व अहकामात की तरफ भी इशारा किया जो दीने इस्लाम के उसूल व मबानी को जाहिर करते थे और उनकी सूरत यह थी-

१. वहदत, दोस्ती, और भाई चारा की ताकीद और तफरका से दूरी।

२. तालीम व तर्बियत की ताकीद।

३. जुस्तजू और इक्तेकार की ताकीद।

४. माददी जिन्दगी को बेहतर बनाने की ताकीद।

५. जिन्दगी के मसायल में लोगों से राय मशवरे की ताकीद।

६. शाहराहें बनाने की ताकीद।

७. हदीसे नबवी की युनियाद पर तंदरुस्ती और ईलाज की ताकीद।

उलूम की चार किस्में हैं :-

१. इल्मे फिकह, दीन की हिफाजत के लिये।

२. इल्मे तिव, बदन की हिफाजत के लिये।

३. इल्मे नह्व, जुवान की हिफाजत के लिये।

४. इल्मे नुजूम, जमाने की पहचान के लिये।

८. आबादकारी की ताकीद।

९. अपने कामों में नज्म व तत्बीव।

१०. मआशी इस्तेहकाम की ताकीद।

११. जदीद तरीन असलेहा और जंगी साज व सामान से लैस फौजी तंजीम की ताकीद।

१२. औरतों के हुक्क की हिफाजत और उसके एहतेराम की ताकीद।

१३. सफाई और पाकीजगी की ताकीद।

इन अवामिर के तजकिरे के बाद किताब अपने दूसरे बाव में

इस्लाम के ताकत व कुव्वत के सर चश्मों और मुसलमानों की पेशरफत के असबाब पर रौशनी डालती है और उन्हें तबाही से दो धार करने के लिये तरक्की व तकामल की राहों के खिलाफ इकदामात को मकबूजा इलाकों की बजारत का नुक्ताए आगाज करार देती है और वह तरक्की व तकामुल की राहें यह थीं।

१. रंग व नसल, जुबान, तहजीब व तमहुन और कौमी तअस्सुबात को खातिर में न लाना।

२. सूद, जखीरा अंदोजी बंद अमली, शराब और सुअर के गोश्त बगैरह की मुमानिअत।

३. ईमान व अकीदे की बुनियाद पर उलमाए दीन से शदीद मुहब्बत और वाबस्तगी।

४. मौजूदा खलीफा की निसबत आम्मतुल मुस्लेमीन का एहतेराम और यह अकीदा कि वह पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जानशीन और ऊलल अमर है जिसकी बिना पर उसके अहकामात पर अमल करना खुदा और रसूल के अहकामात की बजा आवरी है।

५. कुफ़ार के खिलाफ वुजूबे जिहाद।

६. गैर मुस्लिमों की नापाकी पर मबनी अहले तशीअ का अकीदा।

७. तमाम अदयान और मजाहिब पर इस्लाम के अजीम का यकीन।

८. इस्लामी सरजमीन पर यहूदी और नसरानी इबादत गार्हों की तामीर के बारे में शिया हज़रात की मुमानिअत।

९. जज़ीरतुल अरब से तमाम यहूदियों और नसरानियों को निकालने पर अवसर मुसलमानों का इत्तेफ़ाक।

१०. इश्तेयाक के साथ नमाज़, रोज़ा, और हज़ के फ़रायज़ की अंजामदेही में पाबंदी करना।

११. खुम्स की अदायगी के बारे में अहले तशीअ का अकीदा और

उलमा की तरफ से मुस्तेहकीन को उस रकम की तकरीम।

१२. ईमान व इखलास के साथ इस्लाम के दीनी अकायद से दिलचस्पी।

१३. घरेलू इस्तेहकाम के बुनियादी मकसद के साथ बच्चों और नौजवानों की रिवायती तालीम व तर्बियत और बच्चों के साथ वालिदेन के दायमी ताल्लुक की जरूरत व अहमियत की कच्ची।

१४. औरतों को पर्दा की ताकीद जो उन्हें गैर शरई मेल जोल और बद् अमलियों से रोकती है।

१५. नमाज़ जमाअत का इस्तेहबाब और हर जगह के लोगों का दिन में कई मर्तबा एक मस्जिद में इकट्ठा होना।

१६. पैगम्बरे इस्लाम, अहले बैयत, उलमा और सुलहा की जियारतगारों की ताजीम और उन मकामात को मुलाकात और इज्तेमाअ के मर्कज़ करार देना।

१७. सादात का एहतेराम और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस तरह तजकिरा करना गोया वह अभी ज़िन्दा हैं और दुरुद व सलाम के मुस्तहिक हैं।

१८. शिर्कों की तरफ से एजादारी का इनेकाद खास तौर पर मुहर्रम और सफर के अजीम इजतेमाआत और उनमें उलमा और जाकिरीन की मुनज्जम तकरीरें जो यकीनन मुसलमानों के ईमानी इस्तेहकाम में एक नाकाबिले इंकार असर छोड़ जाती हैं और उन्हें नेक चाल चलन पर उभारती हैं।

१९. इस्लाम के अहम उसूलों के उनवान से अमर बिल मारुफ और नही अनिल मुन्किर का वुजूब।

२०. शादी व्याह, ज़्यादा औलाद और एक से ज़्यादा शादियों का मुस्तहब होना।

२१. काफिरों की हिदायत पर इतना जोर कि अगर कोई किसी

काफिर को मुसलमान करे तो यह काम उसके लिये तमाम दुनिया की दीलत से मुफीद होगा।

२२. नेक अमल अंजाम देने की अहमियत 'जो कोई किसी नेक अमल की पैरवी करेगा उसके लिये दो जजाएं मखसूस हैं। एक खुद उस नेक अमल की अपनी जजा और दूसरे उस नेक अमल को अंजाम देने की जजा।

२३. कुरआन व हदीस का बे इंतेहा पास व एहतेराम और सवाबे आखिरत के लिये उन पर अमल पैरा होने की शदीद जरूरत।

इस्लाम के इन कुच्चत के धारों के तजकिरे के बाद किताब के अगले अबबाब में दयानत के इन मोहकम सतूनों को कमजोर बनाने के अमली रास्तों पर बड़ी मोहकम दलीलों के साथ गुप्तगू की गयी थी। इसके बाद फेहरिस्त में उन इकदामात की ताकीद थी जिनके जरिये इस्लामी दुनिया को कमजोर बनाया जा सकता था और वह यह थी -

१. बदगुमानी और सूए तफाहुम के जरिये शिया और सुन्नी मुसलमानों में मजहबी इख्तेलाफात पैदा करना और दोनों गरोहों की तरफ से एक दूसरे के खिलाफ एहानत आमेज और तोहमत अंगेज बार्त लिखना और निफाक व तफरक के इस सूदमंद प्रोग्राम को अमल में लाने के लिये भारी अखराजात की हरगिज परवा न करना।

२. मुसलमानों को जहालत और ला इल्मी के आलम में रखना। किसी तालीमी मर्कज के कयाम की कोशिश को कामयाब न होने देना। छपाई और नशर व इशाअत पर पाबंदी आयद करना और जरूरत पड़े तो अवामी किताब खानों को नज़रे आतिश करना। बच्चों को दीनी मदारिस में जाने से रोकने के लिये उलमा और मराजेए दीनी पर तोहमतें लगाना।

३. काहिली फैलाने और जिन्दगी की जुस्तजू से मुसलमानों को महरूम करने के लिये मौत के बाद की दुनिया में रंग आमेजी और

जन्नत की ऐसी तारीफ ब्यान करना कि वह मुजरस्सम बनकर लोगों के जेहन व दिल पर छा जाये और वह उसको हासिल करने के लिये अपनी मआशी कोशिशों को छोड़ जाये और मलकुल मौत के इतेजार में बैठे रहें।

४. हर तरफ दरवेशों की खानकाहनों का फैलाव और ऐसी किताबों और रिसालों की तबाअत जो लोगों को दुनिया व आसपास से दूर करके उन्हें लोगों से बेजारी और गोशा नशीनी की तरफ मायल करें। जैसे गजाली की अहयाउल उलूम, मौलाना रोम की मसनवी और मोहीयुद्दीन अरबी की किताबें वगैरह।

५. मुस्तबिद और खुद ख्वाह हुक्मरानों की हक्कानियत के सुबूत में मुख्तलिफ अहादीस की इशाअत मसलन! "बादशाह जमीन पर अल्ताह का साया है।" या फिर यह दावा कि हजरत अबू बकर, उमर, उस्मान और अली बनी उमैय्या और बनी अब्बास सबके सब जबरदस्ती तलवार के जोर से हुक्मत के मनसब पर फायज हुए और बजोरे शमशीर हुक्मरानी की या सकीफा की कार्रवाई को एक तमाशे की सूरत में पेश करना जिस की डोरी हजरत उमर ने थाम रखी हो और इस बारे में दलायल कायम करना जैसे हजरत अली अलैहिस्सलाम के तरफदारों खास तौर पर आपकी जौजा हजरत फातिमा जह्रा अलैहिस्सलाम का घर जलाना नीज यह साबित करना कि -

१. हजरत उमर की खिलाफत ज़ाहिर में हजरत अबू बकर की वसीयत और वातिन में मुखालेफीन को डरा धमकाकर अमल में आयी।

२. हजरत अली अलैहिस्सलाम की मुखालेफत की बुनियाद पर हजरत उस्मान के इतेखाब में एक ड्रामाई मशवरा कमेटी बनाना, जो बिल आखिर मुखालेफत, शोरिश, खलीफ़े सोम के कत्ल और हजरत अली की खिलाफत पर खत्म हुई।

३. मकर व हीला और शमशीर के जरिये मुआविया का हुक्मत में आना और इसी सूरत में उसके जानशीनों का बाकी रहना।

४. अबू भुरिलम की कयादत में सफाह की हथियार बंद दंगा और बजोर शमशीर खिलाफते बनी अब्बास का कयाम।

५. हजरत अबू बकर से लेकर उरमानियों की हुक्मरानी के इस दौर तक तमाम खुलफाए इस्लाम जालिम थे और यह कि -

६. निजामे इस्लाम में हमेशा जाबिरियत का दौर दौरा रहा है।

६. रास्तों में बदअमनी के असबाब पैदा करना, बद अंदेश अफराद की मदद से शहरों और देहातों में फिल्ला व फसाद बरपा करना और गुंडों फसादियों और डाकुओं की पुष्ट पनाही करना और उन्हें असलेहा और रकम फराहम करके उनकी मदद करना।

७. हिफजाने सेहत की कोशिशों के आड़े आना और जबरी और कदरी अफकार को तरजीह देना और यह बताना कि हर चीज अल्लाह की तरफ से है। बीमारी भी अल्लाह की देन है, और इसका ईलाज बे सूद है। इस सिलसिले में यह आयत पेश करना, "वही है जो मुझे खाना देता है और प्यास की हालत में सैराब करता है और जब मैं बीमार होता हूँ तो मुझे तंदरुस्ती अता करता है। "वही मारता है और जिलाता भी है।" शिफा अल्लाह के हाथ में है। मौत और हयात भी उसके कब्जए कुदरत में हैं। बीमारी से शिफायाबी और मौत से रिहाई उसकी मर्जी और उसके इरादे के बगैर कतई नामुमकिन है और यह तमाम रूनुमा होने वाले वाकियात कजाए इलाही हैं।

८. इस्लामी मुमालिक को फाका व फलाकत में बाकी रखना और उनमें किसी किरम का तगय्युर व तबदीली या इस्लाहे अमल को जारी न होने देना।

९. फिल्ला व फसाद और हंगामा आरईयों को हवा देना और इस अकीदे को लोगों में पक्का करना कि इस्लाम महज इबादत और परहेजगारी का नाम है, और दुनिया और इसके उमूर से इसका कोई वास्ता नहीं। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके जानशीनों ने कभी इन मसायल में पड़ने की कोशिश नहीं की और सियासी और इक्तेसादी तंजीम से कोई सरोकार नहीं रखा।

१०. ऊपर दिये हुए कामों पर तवज्जोह, इक्तेसादी बदहाली और गुरबत व बेकारी में इजाफा का बाइस होगी मगर इसके साथ साथ गुरबत में इजाफा करने के लिये जरूरी है कि किसानों के गल्ला के ढेरों को नजरे आतिश किया जाये, तिजारती कश्तियां बुयो दी जायें, तिजारती जहाज और सनअती मराकिज में बड़े पैमाने पर आग भड़काई जाये। दरियाओं के बंद तोड़कर बस्तियां वीरान की जायें और पीने के पानी को जहर आलूब बना दिया जाये ताकि इस लिहाज से इलाके वालों की गुरबत और फकर व फलाकत का सामान फराहम किया जा सके।

११. इस्लामी हुक्मरानों के मिजाज को बदला जाये और उनमें सराब नोशी, जुए बाजी और दीगर अखलाकी बुराईयां पैदा की जायें। कौमी खजाने में खुर्द बुर्द और लूट खसोट की ऐसी सूरत पैदा की जाये कि उनके पास अपने दिफाअ, मुल्की मईशत और तरक्कीयाती कामों के लिये कोई रकम बाकी न रहे।

१२. "मर्द औरतों पर हाकिम हैं" कि आयत या "औरतें बदी का पुतला हैं" की हदीस के सहारे औरतों की तौहीन व तहकीर और कनीजी का प्रचार किया जाये।

१३. इसमें कोई शक नहीं कि मुसलमानों की शहरी और देहाती बस्तियों में गलाजत और गंदगी का सबसे बड़ा सबब इन इलाकों में पानी की कमी है और हमें चाहिये कि हम हर मुमकिन तरीके से गुंजाना आबाद इलाकों में पानी की फरवानी रोक दें ताकि उन इलाकों में ज्यादा कसरत से गंदगी में इजाफा हो।

किताब के एक और बाब में मुसलमानों की कुब्वत व ताकत को तोड़ने और उन्हें कमजोर बनाने के दीगर उसूलों पर भी गुप्तगू की गयी थी जो दिलचस्पी से खाली नहीं।

१. ऐसे अफकार को फैलाना जो कौमी, कबायली और नसली असबियतों को हवा दें और लोगों को गुजिशता कौमों की तारीख, जुबान और सकाफत की तरफ शिद्दत से मायल करें और वह इस्लाम

से पहले की तारीखी शखिसयतों पर फरेफता हो जायें और उनका एहतेराम करें। मिस्र में फिरऔनियत का अहया, ईरान में दीन जर्द तश्त और बेनुन्नहरैन में बाबुल की बुत परस्ती उन ही की मिसालें हैं। किताब के उस हिस्से में एक बड़े नक्शे का भी इजाफा किया गया था जिसमें उन मराकिज की निशानदेही की गयी थी जिनमें पहले के खुतूत पर अमल वरआमद हो रहा था।

२. शराब खोरी, जुए बाजी, बद फेली और शहयत रानी की तरबीज, सुअर के गोश्त के इस्तेमाल की तरगीब इन कारगुजारियों में यहूदी, नसरानी, जरदतुशती और सायबी अकलियतों को एक दूसरे के साथ हाथ बटाना चाहिये और इन बुराईयों को मुस्लिम मुआशरे में ज्यादा से ज्यादा फरोग देना चाहिये जिनके बदले मकबूजा इलाकों की वजारत उन्हें इनाम व इकराम से नवाजेगी। इस काम के लिये बहुत से अफराद की जरूरत है जो किसी भी मौके को हाथ से न जाने दें और शराब जुआ फहशा और सुअर के गोश्त को जहां तक हो सके लोगों में मकबूल बनायें। इस्लामी दुनिया में अंग्रेजी हुकूमत के कारिन्दों का यह फरीजा था कि वह माल व दौलत इनाम व इकराम और हर मुनासिब तरीके से इन बुराईयों की पुश्त पनाही करें और उन पर आमिल अफराद को किसी तरह का नुकसान न पहुंचने दें और मुसलमानों को इस्लामी अहकामात और उसके अवामिर व नवाही से हटने की तरगीब दें क्योंकि एहकाम शरअ से बे तबज्जोही मुआशरे में बद नज़मी और अफरा तफरी का सबब होती है। मिसाल के तौर पर कुरआन मजीद में सूद की शिद्दत से मजम्मत की गयी है और इसका शुमार गुनाहे कबीरा में होता है। पस लाजिम है कि हर हाल में सूद और हराम सीदे बाजी को आम करने की कोशिश की जाये और इक्तेसादी बदहाली को मुकम्मल तौर पर सूरत बनाया जाये। इस काम के लिये जरूरी है कि सूद के हराम होने से मुताल्लिक आयात की गलत तफसीर की जाये और इस उसूल को पेशे नज़र रखा जाये कि कुरआन के एक हुक्म से इंकार इस्लाम के तमाम अहकाम से मुंह मोड़ने की जुरअत का आईनादार होती है।

मुसलमानों को यह समझाने की जरूरत है कि कुरआन ने जिस सूद को मना किया है वह सूद मुरककब (या सूद दर सूद) है यरना आम सूद में कोई बुराई नहीं है। कुरआन कहता है "अपने माल को कई गुना करने की खातिर सूद न खाओ।" इस बिना पर आम हालत में सूद हराम नहीं है।

3-8. उलमाए दीन और अयाम के दर्मियान दोरती और एहतेराम की फिजा को आलूदा करना वह अहम काम है जिसे इंग्लिस्तान की हुकूमत के हर मुताजिम को याद रखना चाहिये। इस काम के लिये दो बातों की अशद जरूरत है-

१. उलमा व मराजेअ पर इल्जाम तराशी करना।

मकबूजा इलाकों की वुजारत से जुड़े बाज़ अफ़राद को उलमाए दीन की सूरत देना और उन्हें अलजहर यूनिवर्सिटी, नजफ़, करबला और इसतंबोल के इलमी और दीनी मराकिज में उतारना, उलमाए दीन से लोगों का रिश्ता तोड़ने के लिये एक रास्ता यह भी है कि बच्चों को मकबूजा इलाकों की वजारत के प्रोग्रामों के मुताबिक़ तरबियत दी जाये। इस काम के लिये ऐसे उस्तादों की जरूरत है जो हमारे तंख्याह दार हों ताकि वह जदीद अलूम पढ़ाने के साथ में नौजवानों को उलमाए दीन और उस्मानी खलीफ़ा से मुतनफ़िर करें और उनकी अखलाकी बुराईयाँ और जुल्म व ज्यादतियों को बड़ी आप व ताव के साथ ब्यान करें और यह बतायें कि वह किस तरह कौमी सरमाए को अपनी अय्याशियों की नज़र करते हैं और उनमें किसी पहलू से इस्लामी झलक नहीं पाई जाती।

५. वाजिब होने के अकीदे में कमजोरी पैदा करना और यह साबित करना कि जिहाद सिर्फ़ सदरे इस्लाम के लिये था ताकि मुखालिफ़ों को ख़त्म की जाये मगर आज इसकी कतअन जरूरत नहीं है।

६. काफ़िरों की पलीदी और नजासत से मुताल्लिक मौजूअ जो ख़ास तौर पर शिया हजरात का अकीदा है उन मसायल में से है जिसे

मुसलमानों के जेहन से खारिज होना चाहिये और इसके लिये कुरआन व हदीस से मदद लेने की जरूरत है। मिसाल के तौर पर यह आयत जिसमें कहा गया है कि "अहले किताब जो खाना खाते हैं वह तुम पर हलाल है और जो तुम खाते हो वह उन पर हलाल है और पाक दामन मोमिन औरतें और पाकदामन अहले किताब (यहूद व नसारा) औरतें तुम पर हलाल हैं।" क्या रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सफिया और मारिया नामी यहूदी और मरीही औरतों से शादी नहीं की थी? और क्या यह कहा जा सकता है कि ना-ऊजूबिल्लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियां नजिस थीं?

७. मुसलमानों को यह बात समझानी चाहिये कि दीन से हजरत खतभी मरतबत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुराद सिर्फ इस्लाम नहीं बल्कि जैसा कि कुरआन हकीम से भी साबित है दीन में अहले किताब यानी यहूद व नसारा भी शामिल हैं और तमाम अदयान के पैरोकारों को मुसलमान कहा जायेगा। कुरआन मजीद में हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम खुदा से दुआ करते हैं कि इस दुनिया से मुसलमान जायें। हजरत इब्राहीम व इस्माईल अलैहिमुस्सलाम की भी यही तमन्ना है कि "परवर्दिगार हम दोनों को मुसलमानों के जुमरे में और हमारे खानदान को उम्मत मुस्लेमा करार दे।" हजरत याकूब अलैहिस्सलाम अपने बेटों से कहते हैं "न मरना मगर हालते इस्लाम में।"

८. दूसरा अहम मौजूअ कलीसाओं और कनीसाओं की तामीरात के असबाब से मुताल्लिक है। कुरआन, हदीस और तारीखे इस्लाम की रीशनी में लोगों को यह बावर कराया जाये कि अहले किताब की इबादतगाहें मोहतरम हैं। कुरआन का इरशाद है कि "अगर खुदा वंदे आलम लोगों को मना न फरमाता तो लोग नसारा के कलीसाओं यहूदियों के कनीसाओं और जर्द तश्तियों के आतिशकदों को तबाह व बर्बाद कर देते हैं। इस आयत से यह हकीकत सामने आती है कि इस्लाम में इबादतगाहें मोहतरम हैं और उन्हें हरगिज नुक्सान नहीं पहुंचाया जा सकता।

६. दीने यहूद से इंकार पर मबनी चंद हदीसें जनाये रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नकल की गयी हैं मसलन यहूदियों को जजीरतुल अरब से बाहर निकाल दो या जजीरतुल अरब में दो मुख्तलिफ अवयान की गुंजाईश नहीं। हमें हर हाल में इन अहादीस की तरदीद करनी चाहिये और यह बताना चाहिये कि अगर यह अहादीस सही होती तो हज़रत खतमी मरतबत कभी यहूदी औरत से शादी न करते।

१०. लाज़िम है कि मुसलमानों को इबादत से रोका जाये और इसके वाजिब होने के बारे में उनके दिलों में शुकूक पैदा किये जायें। खास तौर से इस नुक्ते पर जोर दिया जाये कि खुदावंदे आलम बंदों की इबादत से बे नियाज़ है। हज को एक बेहूदा अमल करार दिया जाये और मुसलमानों को शिद्दत के साथ मक्का जाने से रोका जाये। इस तरह मजालिस और इस सिलसिले के तमाम इज्तेमाआत पर पाबंदी लगाई जाये। यह इज्तेमाआत हमारे लिये ख़तरे की घंटी हैं और इन्हें शिद्दत के साथ रोकना जरूरी है। मसाजिद, आइम्मए दीन (अलैहिमुस्सलाम) के मजारात, इमाम बारगाहों और मदरसों की तामीरात पर भी बंदिश आयद की जाये।

११. खुम्स और गनायमे जंगी की तकसीम भी इस्लाम की तकवियत का एक सबब है। खुम्स का ताल्लुक लेन देन, तिजारती और कारोबारी मुनाफ़ा से नहीं है। मुसलमानों को इस बात से आगाह करने की जरूरत है कि इस मद में रकम की अदायगी पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और इमामों (अलैहिमुस्सलाम) के ज़माने में वाजिब थी लेकिन अब उलमाए दीन को इस का इख़्तियार नहीं है कि वह लोगों से इस रकम को हासिल करें खास तौर पर जबकि यह लोग इस रकम से जाती फायदे हासिल करते हैं और अपने लिये भेड़ बकरियां, गाय, घोड़े, वागात और महलात ख़रीदते हैं। इस एतेबार से शरअन खुम्स की रकम उनके लिये जायज़ नहीं है।

१२. लोगों को बद गुमान करने के लिये यह ज़ाहिर करने की

जरूरत है कि इस्लाम फित्ना व फसाद और अबतरी और इख्तेलाफात का दीन है और इस के सुबूत में इस्लामी मुमालिक में रूनुमा होने वाले वाकियात को पेश करना चाहिये।

१३. अपने आपको तमाम घरानों में पहुंचाकर बाप, बेटों के ताल्लुकात को इस हद तक बिगाड़ा जाये कि बुजुर्गों की नसीहत बे असर हो जायें और लोग आमरियत की तहजीब व तमदुन का शिकार हो जायें। इस सूरत में हम नौजवानों को उनके दीनी अकायद से फेर करके उन्हें उलमा से दूर रख सकते हैं।

१४. औरतों की बे पर्दगी के बारे में हमें बहुत कोशिश की जरूरत है ताकि मुसलमान औरतें खुद पर्दा छोड़ने की आरजू करने लगें। इस सिलसिले में हमें तारीखी दलायल व शवाहिद का सहारा लेकर यह साबित करना होगा कि पर्दे का रिवाज बनी अब्बास के दौर से हुआ और यह हरगिज इस्लाम की सुन्नत नहीं है। लोग रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों को बगैर पर्दा देखते रहे हैं। सदरे इस्लाम की औरतें ज़िन्दगी के तमाम शोबों में मर्दों के शाना बशाना रही हैं। इन कोशिशों के कामयाब होने के बाद हमारे साथियों का यह फर्ज है कि वह नौजवान नसल को गैर शरई जिन्सी ताल्लुकात और अय्याशियों की तरगीब दें और इस तरह बुराईयों को इस्लामी मुआशरे में रिवाज दें। जरूरी है कि गैर मुस्लिम औरतें पूरी बे पर्दगी के साथ अपने आपको मुस्लिम मुआशरे में पेश करें ताकि मुसलमान औरतें उन्हें देखकर तकलीद करें।

१५. जमाअत की नमाज से लोगों को रोकने के लिये जरूरी है कि जुमा व जमाअत के इमामों पर इल्जाम तराशियां की जायें और उनके फिस्क व फुजूर पर मुबनी दलायल पेश किये जायें ताकि लोग बेज़ार होकर उनसे अपना राब्ता तोड़ लें।

१६. हमारी दुश्वारियों में से एक बड़ी दुश्वारी बुजुर्गाने दीन के मज़ारों पर मुसलमानों की हाज़री है। जरूरी है कि मुख्तलिफ दलायल से यह साबित किया जाए कि कब्रों को अहमियत देना और

उनकी आराईशात पर तबज्जोह देना बिदअत और खिलाफे शरअ है और खतमी मरतबत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में मुर्दा परस्ती और इस किस्म की बातें रायज नहीं थीं। आहिस्ता आहिस्ता इन कब्रों को तोड़ करके लोगों को इनकी जियारत से रोका जाये। इस सिलसिले में एक मुफीद प्रोग्राम यह भी है कि इन मराकिज की असलियत के बारे में लोगों को शक में डाला जाये। मसलन यह कहा जाये कि हजरत खतमी मरतबत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मस्जिदे नबवी में मदफून नहीं हैं बल्कि अपना वालिदा गिरामी की कब्र में सो रहे हैं और इसी तरह तमाम बुजुर्गाने दीन के बारे में कहा जाये कि वह उन मकामात पर नहीं हैं जिन मकामात को उनसे मंसूब किया गया है। हजरत अबू बकर व उमर दोनों जन्नतुल बकीअ में मदफून हैं। हजरत उस्मान की कब्र का कहीं पता नहीं है। हजरत अली (अलैहिस्सलाम) की आरामगाह बसरा में है और वह कब्र जो नजफ अशरफ में मुसलमानों की जियारतगाह है दर असल इसमें मुगीरा बिन शोअबा दफन हैं। इमाम हुसैन (अलैहिस्सलाम) का सरे अकदस मस्जिद हनाना में दफन है और आपके जसदे अकदस की तदफीन के बारे में सही इत्तेला नहीं है। काजमीन की मशहूर जियारतगाह में इमाम मूसा काजिम (अलैहिस्सलाम) और इमाम तकी (अलैहिस्सलाम) के बजाए दो अब्बासी खलीफा दफन हैं। मशहद में इमाम रजा (अलैहिस्सलाम) नहीं बल्कि हारून रशीद दफन है। सामरा में भी इमाम नकी (अलैहिस्सलाम) और इमाम हसन असकरी (अलैहिस्सलाम) के बजाए अब्बासी खुलफा दफन हैं। हमें बकीअ के कब्रस्तान के सिलसिले में कोशिश करनी चाहिये कि वह खाक के यकसां हो जाये और तमाम इस्लामी मुमालिक की जियारतगाहें वीरानों में बदल दी जायें।

१७. खानदाने रिसालत से अहले तशीअ की अकीदत व एहतेराम खत्म करने के लिये झूटे और बनावटी सादात पैदा किये जायें और इस काम के लिये हमें चंद तंख्याह दार अफराद की जरूरत है जो काला और हरे अमामों के साथ लोगों में जाहिर हों और अपने आपको औलादे रसूल से निसबत दें। इस तरह वह लोग जो उनकी

हकीकत से वाकिफ हैं आहिस्ता आहिस्ता हकीकी सादात से बदजन हो जायेंगे और औलादे रसूल पर शक करने लगेंगे। दूसरा काम हमें यह करना होगा कि हम हकीकी सादात और उलमाए दीन के सरों से उनके अमामे उतरवायें ताकि पैगम्बरे खुदा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से वाबस्तगी का सिलसिला खत्म हो और लोग उलमा का एहतेराम छोड़ दें।

१८. इमाम हुसैन (अलैहिस्सलाम) की इजादारी के मराकिज को खत्म करके उन्हें वीरान कर दिया जाये और यह काम मुसलमानों की गुमराही की राह रोकने और दीन को बद बख्ती और नाबूदी से बचाने के उनवान से होना चाहिये। अपनी तमाम कोशिशों को इस्तेमाल में लाकर लोगों को मजालिसे इजा में जाने से रोकने की कोशिश की जाये और और इजादारी को आहिस्ता आहिस्ता खत्म किया जाये। इस काम के लिये इमाम बारगाहों की तामीर और उलमा व जाकिरीन के इत्तेखाब की शरायत को सख्त बनाया जाये।

१९. आजाद ख्याली और चून व चिरा वाली कैफियत को मुसलमानों के अजहान में बक्का करना चाहिये ताकि हर आदमी आजादाना तौर पर सोचने के काबिल हो और हर काम अपनी मर्जी से अंजाम दे। अमर बिल मारुफ और नहीं अनिल मुन्कर वाजिब नहीं। अहकामे शरीअत की तरवीज का अमल तर्क होना चाहिये। अगर अमर बिल मारुफ नहीं अनिल मुन्कर को वाजिब समझा जाये तो यह काम बादशाहों का है। अवामुन्नास को इसमें कोई दखल नहीं।

२०. नरल को कंट्रोल किया जाये और मर्दों को एक से ज्यादा बीवी इख्तियार करने की इजाजत न दी जाये। नये कवानीन बना कर शादी के मसले को दुश्वार बनाया जाये मसलन किसी अरब मर्द को ईरानी औरत और ईरानी मर्द को अरब औरत से शादी की इजाजत न दी जाये। इस तरह तुर्क, ईरानियों से शादी नहीं कर सकेंगे।

२१. इस्लामी तालीम की आफाकियत के मसले को मजबूत दलायल से रद्द किया जाये और यह बताया जाये कि इस्लाम

उसूलन दीने हिदायत नहीं है बल्कि इसका ताल्लुक सिर्फ एक कबीला और एक कौम से है जैसा कि कुरआन ने इकरार किया है : "यह दीन तुम्हारी और तुम्हारे कबीले की हिदायत के लिये है।"

२२. मसाजिद, मदारिस, तर्बियती मराकिज और अच्छी दुनियादों पर कायम होने वाली तामीरात से मुताल्लिक इस्लाम की तमाम सुन्नतों को रद्द या कम से कम महदूद कर दिया जाये। इस किसम के कामों का ताल्लुक उलमा से नहीं बल्कि ममलिकत के बादशाहों से है और जब हुकूमतें इस किसम का काम अंजाम देंगी तो खुद ही उनकी दीनी कदर व कीमत जाती रहेगी।

२३. जरूरी है कि मुसलमानों के हाथों में मौजूद कुरआन में कमी बेशी करके लोगों को शक में मुक्तला किया जाये। खास तौर पर कुफ़्कार और यहूद व नसारा के बारे में तौहीन आमेज आयात नीज अमर बिल मारुफ़ और जिहाद से मुताल्लिक आयतों को कुरआन से निकाल दिया जाये और इन कुरआनों को तुर्की और फारसी जुबानों में तर्जुमा करके बाजारों में लाया जाये। गैर अरब मुस्लिम हुकूमतों को तरगीब दी जाये कि वह अपने अपने इलाकों में कुरआन, अजान, और नमाज को अरबी जुबान में पढ़ने से परहेज करें। दूसरा मसला अहादीस व रियायात में शक पैदा करना है और कुरआन की तरह इसमें भी तहरीफ़ व तर्जुमा से काम लेना है।

मुख्तसर यह कि इस दूसरी किताब में भी मुझे बड़ी काम की चीजें दिखाई दीं। इस किताब का नाम "इस्लाम को कैसे सफ़ह हस्ती से मिटाया जाये, रखा गया था। इसमें वह बेहतरीन अमली प्रोग्राम मुरत्तब थे जिन पर मुझे और मेरे दीगर साथियों को काम करना था। इस किताब ने मुझ पर बड़ा असर कायम किया था। किताब के मुताले के बाद मैं उसे वापस करने मकबूजा इलाकों की वज़ारत पहुंचा जहां दूसरी मर्तबा सेक्रेट्री से मेरी मुलाकात हुई। उसने मुझे मुखातब करके कहा-

जिन कामों को तुम्हें अंजाम देना है उसमें तुम अकेले नहीं हो

बल्कि तकरीबन पांच हजार सच्चे और खरे अफराद मुख्तलिफ गरोहों की सूरत में तमाम इस्लामी ममालिक में तुम्हारी मदद के लिये आमादा हैं। मकबजा इलाकों की वजारत का ख्याल है कि वह काम को आगे बढ़ने के साथ साथ इन अफराद की तादाद में इजाफा करके इन्हें एक लाख तक पहुंचा दें। जब भी हमें इस अजीम गरोह बनाने में कामयाबी हुई यकीनन हम तमाम आलमे इस्लाम पर छा जायेंगे और इस्लामी आसार को मुकम्मल तौर पर मिटा देंगे।”

इसके बाद सेक्रेट्री ने अपनी गुप्तगू जारी रखते हुए कहा-

“मैं तुम्हें यह खुशखबरी देता हूँ कि हम आइंदा एक सदी में अपनी मुराद को पहुंच जायेंगे और अगर आज हमारी नस्ल इस कामयाबी को न देख सके तो हमारी औलादें जरूर यह अच्छे दिन देखेंगी और यह ईरानी जरबुल मस्ल कितनी माना खोज है जिसमें कहा गया है, “कल दूसरों ने बोया हमने खाया। आज हम बो रहे हैं। कल दूसरे खायेंगे।” जिस दिन भी अजीम बर्तानिया या (समुंदों की मलिका) को इस्लामी ममालिक पर फतह मंदी नसीब हुई दुनियाए मसीहियत उन तमाम तकालीफ से निजात पा जायेगी जिसे वह बारह सदियों से यदाश्त कर रही है। मुसलमानों ने इस असे में हम पर बड़ी जंगे मुसल्लत की जिनमें सलीबी जंग बतौर मिसाल हैं। यह जंगें बिल्कुल मुगलों की यलगार की तरह वे मकसद थीं कि जहां सियाए कत्ल व गारतगरी, वीरानी व तबाही और लूट मार के कोई मकसद नहीं था लेकिन इस्लाम के खिलाफ हमारी जंग मुगलों की तरह फौजी कार्रवाईयाँ और कत्ल व गारतगरी पर मुनहसिर नहीं है। हमें इस काम में जल्दी भी नहीं है। अजीम बर्तानिया की हुकूमत इस्लाम को मिटाने के लिये पूरे मुताला के साथ आगे बढ़ेगी और बड़े सब्र व तहम्मूल के साथ अपने अजीम कामों को अमल में लायेगी और अपने मकसद में कामयाब होगी। अलबत्ता हम जरूरी मौकों पर फौजी कार्रवाईयाँ से भी पीछे नहीं हटेंगे मगर यह इस सूरत में होगा जब हम इस्लामी हुकूमतों पर पूरी तरह छा जायेंगे और कुछ अनासिर

हमारी मुखालेफत पर कमरबस्ता होकर मैदान में उतर आयेंगे। इस में कोई शक नहीं कि इस्तंबोल के बादशाह बड़ी होशमंदी और फितानत के मालिक हैं और इतनी जल्द हमें अपने प्रोग्रामों में कामयाब नहीं होने देंगे लेकिन हमें अभी से दर्मियाने तबके के बच्चों को उन स्कूलों में तर्बियत देना है जो हमने उनके लिये कायम किये हैं। हमें उन इलाकों में कई चर्च भी बनाने हैं। शराब, जुआ और शहवतज़नी को इस तरह फैलाना है कि नीजवान नस्ल दीन व मज़हब को भूल जाये। हमें इस्लामी ममालिक के हुक्मरानों के दर्मियान इख़्तेलाफ़ात की आग को भी हवा देना है। हर तरफ़ हरज मरज और फ़िल्ना व फ़साद का बाज़ार गर्म करना है। अरकाने हुक्मत और साहबाने सरवत को हसीन व जमील और शौख़ व चंचल ईसाई औरतों के दाम में फंसाना है और उनकी महफ़िलों को इन परीवर्शों से रौनक बख़्शना है ताकि वह आहिस्ता आहिस्ता अपने दीनी और सियासी इक्तेदार से हाथ धो बैठें। लोग उनसे बदज़न हो जायें और इस्लाम के बारे में उनका ईमान कमजोर हो जाये जिसके नतीजे में उलमा, हुक्मत और अवाम का इत्तेहाद टूट जाये और ऐसे हालात में जंग की आग भड़काकर हम उन ममालिक में इस्लाम की जड़ बुनियाद उखाड़ फेंकेंगे।”

(7)

आखिर कार मकबूजा इलाकों की वजारत के सेक्रेट्री ने उस दूसरे राज से भी पर्दा उठाया जिसका उसने मुझसे वादा किया था और मैं शिहत से जिसके इंतैजार में था और यह वह करारदाद थी जो हुकूमते बर्तानिया के आला ओहदेदारों ने मंजूर की थी। पचास सफहात पर मुश्तमिल यह करारदाद मकबूजा इलाकों की वजारत की उस सियासत की आईना दार थी जिसके जरिये इस्लाम और अहले इस्लाम को एक सदी के अंदर अंदर नाबूद करना था। उस रिसाले की पेशेनगोई के मुताबिक इस अर्से के बाद इस्लाम सारी दुनिया से रुखसत हो जायेगा और सिर्फ तारीख में इसका नाम बाकी रह जायेगा। इस बात की सख्ती से ताकीद की गयी थी कि 14 निकालती करारदाद के मजमून को गहरे राज में रखा जाये और यह किसी उनवान से जाहिर न होने पाये क्योंकि इस बात का खतरा था कि मुसलामनों को इसकी खबर हो जाये और वह इसकी चारा जोई में उठ खड़े हों। फिर भी मुख्यतसर तौर पर इसका मवाद कुछ यूं था-

१. ताजकिस्तान, बुखारा, अरमनिस्तान, शुमाली खुरासान और मावरा उन्नहर और रूस के जुनूब में वाकैय मुस्लिम आबादियों पर इख्तैयार हासिल करने के लिये सल्तनते रूस से बड़े पैमाने पर इश्तेराके अमल, इसके अलावा ईरान के सरहदी शहरों तुरकिस्तान और आजर बाईजान पर कब्जा हासिल करने के लिये रूस के साथ इश्तेराके अमल।

२. इस्लामी हुकूमतों को अंदरूनी और बैरूनी एतेबार से पूरी तरह तबाह करने के लिये एक मुनज्जम प्रोग्राम बनाने में रूस और फ्रांस के सलातीन के साथ इश्तेराके अमल।

३. उस्मानी और ईरानी हुकूमतों के पुराने झगड़ों को हवा देना और उनके दर्मियान कौमी और नसली इख्तेलाफात की आग भड़काना। ईराक और ईरान के अतराफ में आबाद कबीलों में कबायली जंगों और गड़बड़ पैदा करना। इस्लाम से पहले के मजाहिब की तबलीग हत्ता

कि ईरान, मिस्र और बैनुन्नहरैन के तर्क किये हुए और मुर्दा अदयान को जिन्दा करना और उनके पैरोकारों को इस्लाम से फिराना।

४. इस्लामी ममालिक के शहरों और देहातों के बाज हिस्सों को गैर मुस्लिम अकवाम के हवाले करना मसलन मदीना यहूदियों को, असकंदरिया ईसाइयों को, यजद पारसियों को, अमारा सावड़ियों को, करमान शाह अलत्लाहियों को, मौसिल यजीदियों को और वूशहर समेत खलीज फारस के आसपास के इलाक़े हिंदुओं को सौंपना। इन दो आखिर में लिये गये इलाक़ों में पहले अहले हिंद को बसाना जरूरी है। इसी तरह लेबनान में बाक़ेय तराबल्स दरोजियों के, कारज अलवियों के और मसकत ख्वारिज के हवाले करना। यही नहीं बल्कि माददी इमदाद, जंगी साज व सामान और फौजी और सियासी माहेरीन के जरिये उन्हें मजबूत बनाना भी जरूरी है ताकि कुछ अर्से बाद यह अकलियतें अहले इस्लाम की आंखों में खटकने लगे और इस्लाम का पैकर आजुरदा हो जाये और इलाक़े में आहिस्ता आहिस्ता इन का असर व नफूज मुस्लिम हुकूमतों की तबाही का सबब बन जाये और इस्लाम की तरक्की पज़ीरी में रुकावट पड़ जाये।

५. हिंदुस्तान की तरह ईरानी और उस्मानी हुकूमतों में भी छोटी छोटी रियासतों का कयाम अमल में आये और फिर फूट डालो और हुकूमत करो या बेहतर अलफाज में फूट डालो और मिटा दो, के कानून पर अमल करते हुए उन्हें एक दूसरे से भिड़ा दिया जाये। इस सूरत में एक तरफ वह आपस में दस्त व गिरेबां होंगे और दूसरी तरफ मर्कज़ी हुकूमत से भी उनके झगड़े का सामान फ़राहम रहेगा।

६. एक सोचे समझे मुनज्जम मंसूबे के तहत इस्लामी दुनिया में लोगों के अफ़कार से हम आहंगी रखने वाले मन घड़त अफ़ायद व मज़ाहिब की तबलीग़ मसलन आइम्मए अहले बैत (अलैहिमुस्सलाम) से बे इंतहा अकीदत व एहतेराम रखने वाले शिष्यों के लिये हुसैन अल्ताही मजहब, इमाम जाफ़र सादिक की जात से मुताल्लिक़ शख़्सियत परस्ती, इमाम अली रज़ा (अलैहिस्सलाम) और इमाम ग़ायब (हज़रत मेहदी मौऊद) के बारे में बड़ा चढ़ाकर बताना और आठ इमामी फिरके

की बढ़ावा देना हर हर मजहब के लिये उसके मुनासिब तरीन मुकाम की यह सूरत होगी, हुसैन अल्लाह फिरका (करबला) इमाम जाफर सादिक की परस्तिश (असफहान), इमाम मेहदी (अलैहिस्सलाम) की परस्तिश (सामरा) और हश्त इमामी मजहब (मशहद)। इन जाली मजाहिब की तबलीग व तरबीज का दायरा सिर्फ शिया मजहब ही तक महदूद नहीं होना चाहिये बल्कि अहले सन्नून के तमाम फिरकों में भी इस किस्म के मजाहिब को बढ़ावा दिया जाना चाहिये और फिर उनमें इख्तेलाफात को हवा देकर नफरत का वह बीज बोना चाहिये कि उनमें का हर फिरका अपने आपको सच्चा मुसलमान और दूसरे को काफिर, भुरतद और वाजिबुल कत्ल समझे।

७. जिना, लवातत, शराब नोशी और जुवा वह अहम उमूर हैं जिन्हें मुसलमानों के दर्मियान रायज करने की जरूरत है। उन बुरी आदतों को मुसलमानों में फैलाने के लिये इलाके के उन लोगों से ज्यादा मदद लेनी चाहिये जो इस्लाम से पहले के मजाहिब से वाबस्ता हैं और खुश किस्म से उनकी तादाद कुछ कम नहीं है।

८. अहम और हरसास ओहदों पर गलत कार और नापाक अफराद का तकर्सर और इस बात पर तबज्जोह कि रियासतों की सरबराही मकबूजा इलाकों की वजारत से वाबस्ता रहनी चाहिये ताकि वह इंग्लिस्तान की हुकूमत के लिये काम करें और उनसे अहकामात वसूल करें। फिर उन असरदार अफराद के जरिये हमारे मकासिद पोशीदा तौर पर कुब्वत के सहारे अमल में आर्ये अलबत्ता उनके चुनाव में मुस्लिम बादशहों का हाथ होगा।

९. गैर अरब मुस्लिम ममालिक में अरबी सकाफत और जुबान के फैलाव की राह रोकना और इसके बजाए संस्कृत, फारसी, करदी, पश्तु, उर्दू और कौमी जुबानों को उन सर ज़मीनों पर रायज करना ताकि इलाकाई जुबानें रिवाज पाकर अरबी जुबान बोलने वाले कबायल में उतर आर्ये और फसीह अरबी जुबान की जगह इख्तोयार करें। इस तरह अहले अरब का कुरआन और सुन्नत की जुबान से रिश्ता टूट जायेगा।

१०. हुकूमत के आफिसों में मुशीरों और माहिरो की हैसियत से बर्तानवी नौकर और जासूसों की तैनाती में इजाफा, इस तरह इस्लामी ममालिक के वजीरों और उमरा के फौजदारी में हमारा रंग शामिल रहेगा। इस मकराद तक पहुंचने के लिये सबसे बेहतर रास्ता यह होगा कि पहले हम जहीन और भरोसे के गुलामों और कनीजों को तालीम व तर्बियत दें और फिर उन्हें हुक्मरानों, शहजादों, वजीरों, अमीरों और अहम दरबारी ओहदों पर फायज या असर अफराद के हाथों बेंच दें। यह गुलाम अपनी सलाहियतों और समझ व फरासत की बुनियाद पर उनके नज़दीक अपना मकाम पैदा करेंगे और आहिस्ता आहिस्ता उन्हें राय देने वाले का मकाम हासिल हो जायेगा। इस तरह मुस्लिम मदों में उनका एक अनमिट नक्श कायम हो जायेगा।

११. मुसलमानों के मुख्तलिफ़ तबकों खास तौर पर डाक्टरों, इंजीनियरों, हुकूमत के माली उमूर से वाबस्ता ओहदेदारों और इन जैसे दीगर रीशन फिक्क अफराद में मसीहियत की तबलीग़ व तरबीज, कलीसाओं खुसूसी स्कूलों और कलीसा से वाबस्ता शिफाखानों की तादाद में इजाफा, तबलीगाती कुतुब व रिसायल की नशर व इशाअत और दर्मियाने तबके के लोगों में इनकी मुफ्त तकसीम, तारीखे इस्लाम के मुकाबले पर तारीखे मसीहियत लिखवाने का एहतेमाम। मुसलमानों के हालात व कैफ़ियात और उनमें हुकूमते बर्तानिया के उम्मात और जासूसों का चुनाव उनका दायराए अमल इस्लामी ममालिक में वाक़ेय मंदिर व कलीसा ही होंगे। इन आलिम नुमा इसाईयों में बाज़ का काम यह होगा कि वह मुस्तशिरक और इस्लाम के जानने वाले बनकर तारीखी सच्चाईयों में तहरीफ़ करें और उन्हें उल्टा दिखाने की कोशिश करें और फिर दलायल की फराहमी और इस्लामी ममालिक से जरूरी इत्तेलाआत हासिल करने के बाद ऐसे मज़ामीन तैयार करें जो इस्लाम के नुक़सान और ईसाईयत के फायदे में हों।

१२. मुसलमान लड़कों और लड़कियों में खुद सरी और मजहब बेज़ारी की तरबीज और उन्हें इस्लाम के उसूल व मबानी की सच्चाई के बारे में बदगुमान करना और यह काम मशीनरी स्कूलों, अख़लाक

खुश करने और इस्लाम दुश्मनी पर मवनी किताबों, ऐश व नोश और खुश बाशी का सामान फराहम करने वाले कलबों और गलत बुनियादों पर इस्त्वार मुस्लिम और गैर मुस्लिम नौजवानों की दोस्ती के जरिये अंजाम पा सकता है। मुस्लिम नौजवानों को फांसने के लिये यहूदी और मसीही नौजवानों की शिराकत से खुफिया अंजुमनों की बुनियाद।

१३. इस्लाम को कमजोर करने, मुसलमानों के इत्तेहाद को तोड़ने और उन्हें ज़िन्दगी के मसायल के बारे में सोचने और तरक्की की राह में आगे बढ़ने से रोकने के लिये इस्लामी ममालिक में अंदरूनी और बरूनी तौर पर झगड़े पैदा करना और मुसलमानों को एक दूसरे या फिर दीगर अदयान के पैरोकारों से भिड़ाए रखना। कौमी दौलत, बाली जखायर और फिक्र व फहम की कुव्वतों को तबाही से दो चार करना, मुसलमानों में रूहे अमल और वलवला अंगेजी को खत्म करना और उनमें इन्तेशार पैदा करना।

१४. इस्लामी ममालिक के इक्तेसादी निजाम को दरहम बरहम करना जिसमें ज़राअत और आमदनी के तमाम ज़राए शामिल हैं। इस मकसद को पूरा करने के लिये बंदों में छेद पैदा करना, दरियाओं में रेत की सतह ऊंची करना, लोगों में सुस्ती, सहल अंगारी और तन आसानी को बढ़ावा देना, पैदावार और तौलीदी उमूर की तरफ से लोगों की बे तवज्जोही को तकवियत देना और अवाम को नशीली चीज़ों का आदी बनाना जरूरी है।

इस बारे में यह वज़ाहत जरूरी है कि नशीली चीज़ों 14 निकात इत्तेहाई तफ़रील के साथ तहरीर में लाये गये थे और इनके साथ नक्शे, अलामतें और तरावीरें भी थीं। मैंने यहां इशारतन इनकी निशानदेही की है।

मुख्तसर यह कि मकबूजा इलाकों की वज़ारत के सेक्रेट्री से इस भरोसे की बुनियाद पर जो उसने मेरी जात से वाबस्ता कर रखी थी और जिसके जेरे असर उसने मुझे इतनी अहम और खुफिया किताब पढ़ने को दी थी मैंने दूसरी बार एहतेराम के साथ इजहारे तशक्कुर

किया और मजीद एक महीने लंदन में रहा। इसके बाद वजीर की तरफ से मुझे ईराक जाने का हुक्म मिला। मेरा यह सफर सिर्फ इस मकसद के लिये था कि मैं मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को नये दीन के इजहार की दावत पर तैयार करूं। सेक्रेट्री ने बार बार मुझे यह ताकीद की कि मैं उसके साथ बड़ी चालाकी और होशियारी से पेश आऊँ और मुकद्देमाते उमूर की आमादगी में हरगिज हटे एतेदाल से आगे न बढ़ूँ क्योंकि ईराक व ईरान से मिलने वाली रिपोर्टों की बुनियाद पर सेक्रेट्री को इस बात का यकीन हो चुका था कि मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब काबिले भरोसा और मकबूज़ा इलाक़ों की वज़ारत के प्रोग्रामों को बअमल में लाने के लिये मुनाशिव तरीन आदमी है।

इसके बाद सेक्रेट्री ने अपनी गुफ्तगू जारी रखते हुए कहा-

“तुम्हें मुहम्मद के साथ बिल्कुल साफ़ और दो टोक अलफाज में गुफ्तगू करनी है क्योंकि हमारे उम्मात असफ़हान में उससे बड़ी सराहत के साथ पहले ही गुफ्तगू कर चुके हैं और वह उनकी बातों को मान चुका है मगर इस शर्त के साथ कि उसे उस्मानी हुकूमत के मकामी उम्मात, उलमा और मुतअस्सिब लोगों के हार्थों आने वाले खतरात से बचा लिया जाये और उसकी हिमायत और तहफ़फ़ुज़ का मरपूर इतेजाम किया जाये क्योंकि उसकी दावत के जाहिर हाते ही हर तरफ से उसे खत्म करने की कोशिश की जायेगी और खतरनाक सूरतों में उस पर हमले किये जायेंगे।”

हुकूमते बर्तानिया ने शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को हथियारों से अच्छी तरह लैस करने के बाद जरूरत के भीके पर उसकी मदद की ताईद की थी और शैख़ ही की मजी के मुताबिक जजीरतुल अरब में याक़ेय नज्द के करीब इलाक़े को उसकी हाकमियत का पहला मकाम करार दिया था।

बहरहाल शैख़ की मुवाफ़िक़त की खबर सुनकर मेरी खुशी की कोई इतेहा न रही और मैंने सेक्रेट्री से सिर्फ़ यह सवाल किया कि मेरी आइंदा की जिम्मेदारियां क्या होंगी? मुझे इसके बाद क्या करना होगा

और शीख से किस किस्म का काम लेना होगा। नीज ये कि मैं अपने फरायज का कहां से आगाज करूं?

सेक्रेट्री ने जवाब दिया : मकबूजा इलाकों की दजारत ने तुम्हारे वजायफ को बड़ी वजाहत से मुतय्यन किया है और वह उन उमूर का इल्का है जिसे शीख को आहिस्ता आहिस्ता अंजाम देना है और वह यह है-

१. उसके मजहब में शामिल न होने वाले मुसलमानों की तकफीर और उनके माल, इज्जत और आवरु की बर्बादी को जायज समझना, इस जिम्न में गिरफ्तार किये जाने वाले मुखालेफीन को गुलाम बेचने वाली की मार्किट में कनीज व गुलाम की हैसियत से बेचना।

बुत परस्ती के बहाने मुमकिन होने पर खाना काबा का इनहेदाम और मुसलमानों को फरीजा-ए-हज से रोकना और हाजिर्यों के जान व माल की गारतगरी पर कबायले अरब को उकसाना।

३. अरब कबायल को उस्मानी खलीफा के अहकामात तोड़ने की तरगीब देना और नाखुश लोगों को उनके खिलाफ जंग पर आमादा करना। इस काम के लिये एक हथियार बंद फौज की तैयारी। हिजाज के बर्दों के एहतेराम और असर व नुफूज को तोड़ने के लिये उन्हें हर मुमकिन तरीके से परेशानियों में मुक्ता करना।

४. पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, उनके जानशीनों और पूरे तौर पर इस्लाम की बड़ी शखिसयतों की तौहीन का सहारा लेकर और इसी तरह शिर्क व बुत परस्ती के आदाब व रुसूम को मिटाने के बहाने मक्का, मदीना और दीगर शहरों में जहां तक हो सके मुसलमानों की जियारत गाहों और मकबरों को खत्म करना।

५. जहां तक मुमकिन हो सके इस्लामी ममालिक में फित्ना व फसाद, झगड़े और बदअमनी का फैलाव।

६. कुरआन में कमी बेशी पर शाहिद अहादीस व रिवायात की रु से एक जदीद कुरआन की नशर व इशाअत।

सेक्रेट्री ने अपने इस छः निकाती प्रोग्राम की तशरीह के बाद जिसे शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को अंजाम देना था अपनी गुप्तगू जारी रखते हुए कहा-

“कहीं इस प्रोग्राम की दुश्वारियां तुम्हें घबराहट में मुब्तला न कर दें। हम सबका यह फर्ज है कि इस्लाम की तबाही का बीज उस सरजमीन में बिखेर दें ताकि हमारी आइंदा आने वाली नरल हमारी इस सह पर आगे बढ़े और किसी फैसला कुन नतीजे पर पहुंच सके। बर्तानिया की हुकूमत हमारी इस सब आजमा लंबी मुदत कोशिशों से वाकिफ है। क्या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अकेले व तंहा अपने उस तवाहकुन इंकैलाब को बरपा नहीं किया। मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब भी (नाऊजूबिल्लाह) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तरह हमारे पेशे नजर इंकैलाब को भड़का सकेगा।”

इस मुलाकात के कुछ दिन बाद मैंने वजीर और सेक्रेट्री से सफर की इजाजत मांगी और फिर घर वालों और दोस्तों को विदाअ किया। घर से बाहर निकलते हुए मेरे छोटे लड़के ने आजिजाना लहजे में कहा, “बाबा जल्दी घर आइयेगा” उसके इस जुमले ने मेरी आंखें छलका दीं और मैं उन अशकों को अपनी बीबी से न छुपा सका। रुखसत के आखिरी रस्में तय करके मैं सफर के लिये तैयार हुआ।

हमारा जहाज बसरा की सन्त रवाना हुआ। बड़े दुश्वार और सख्त सफर के बाद रात के वक्त मैं बसरा पहुंचा और सैय्यद अब्दुल रजा तरखान के घर पहुंचा, वह बेचारा सो रहा था। मुझे देखते ही बहुत खुश हुआ और बड़ी गर्मजोशी से मेरा इस्तिकबाल किया। मैंने रात वहां काटी। दूसरे दिन सुबह मुझे अब्दुल रजा से मालूम हुआ कि शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब कुछ अर्से पहले ईरान से बसरा पहुंचा और अभी चंद दिन पहले किसी ना मालूम मकाम की तरफ खुदा हाफिज कह कर गया है। अब्दुल रजा ने यह भी बताया कि शैख मेरे नाम उसे एक खत भी दे गया है। उस खत में उसने अपना पता नज्द लिखा था।

दूसरे दिन मैं अकेला नज्द रवाना हुआ और बड़ी तकलीफों के

बाद मंजिले मकसूद पर पहुंचा और शैख से उसके घर पर मिला। उसके चेहरे पर थकावट और कमजोरी के आसार नुमायां थे। मैंने इस मौजूअ पर उससे गुफ्तगू मुनासिब नहीं समझी लेकिन जल्द ही मुझे पता चल गया कि उसने दूसरी शादी रचा ली है और जिन्सी रवाबित में ज्यादा काम लेकर अपनी ताकत खो बैठा है। मैंने इस बारे में उसे नसीहतें की और बताया कि अभी हम दोनों को मिलकर बहुत से काम अंजाम देने हैं। इस मंजिल पर हम ने यह तय किया कि मैं अपने आपको अब्दुल्लाह के फर्जी नाम से बतौरे गुलाम पेश करूंगा और बताऊंगा कि शैख ने मुझे गुलाम बेचने वालों के गरोह से खरीदा है। घुनांचे शैख ने लोगों से मेरा इसी उनवान से तआरुफ कराया और बताया कि मैं बसरा में उसके काम से ठहरा हुआ था और अब यहां जद्दा पहुंचा हूँ।

नज्द के रहने वाले मुझे शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब का गुलाम समझते थे। यहां यह भी बताना जरूरी होगा कि इस मकाम पर शैख की दावत का सामान फराहम करने में हमें दो साल का अर्सा लगा। सन 1143 हि० के बीच में मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने जजीरतुल अरब में अपने नये दीन के ऐलान का आखिरी इरादा किया और अपने दोस्तों को इकट्ठा किया जो उसके हम ख्याल थे और उसका साथ देने का वादा कर चुके थे। इब्नेदा में सिर्फ अपने खास असहाब और मुरीदों के दायरा में चंद अंजान और न समझ आने वाले अल्फाज में बड़े इख्तोसार के साथ इस दावत का आगाज हुआ लेकिन कुछ अर्से बाद नज्द के हर तबकए ख्याल के अफराद को बड़े पैमाने पर दायतनामे भेजे गये। आहिस्ता आहिस्ता हमने पैसे के जोर पर शैख के अतराफ इसके अफकार की हिमायत में एक बड़ा मजमा इकट्ठा किया और उन्हें दुश्मनों से टक्कर लेने की तलकीन की। यह बात भी काबिले जिक्र है कि जजीरतुल अरब में शैख की दावत के फैलने के साथ साथ उसके दुश्मनों और मुखालिफों की तादाद भी बढ़ने लगी।

जल्द ही रुकावटों और दुश्मनियों का सिलसिला इस मंजिल तक

पहुँचा कि शीख के पांव उखड़ने लगे। खास तीर पर नज्द में उसके खिलाफ बड़ी खतरनाक बातें फैली हुई थी। मैंने बड़ी हिम्मत के साथ उसे जमे रहने की तरगीब दी और उसके इरादे को सुरस्त नहीं होने दिया। मैं हमेशा उससे कहता था "बेअसते के इब्बोदाई दिनों में अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लिम) के दुश्मन तुम्हारे दुश्मनों से बहुत ज्यादा ताकतवर थे मगर आप उनके पैदा कर्दा दुश्वारियों और मुसीबतों को बड़े सब्र के साथ झेलते रहे। उन अज़ीयतों, तोहमतों और गालियों को सुने बगैर किसी बड़ी राह पर घामज़न होना और बुलंदियों को छूना नामुमकिन है। कोई पेशवा और कोई रहबर इन दुश्वारियों से दामन छुड़ा न सका।

इस तरह हमने अपनी जद्दो ज़ेहद का आगाज़ किया और खतरनाक दुश्मनों के मुकाबिल आये। जंग व गुरेज़ इस काम में हमारी हिकमते अमली थी। हमारे कामयाब प्रोग्रामों में से एक प्रोग्राम शीख के दुश्मनों को पैसे के ज़रिये तोड़ना था। हमारे यह तन्ख्याहदार अब मुखालेफीन की सफ़ में रहकर हमारे लिये जासूसी करते थे और उनके इरादों से हमें आगाह रखते थे। हम अपने इन बज़ाहिर दुश्मन साथियों की इत्तेलआत के ज़रिये मुखालिफों की तमाम स्कीमों को फेल किया करते थे। मसलन एक बार मैंने सुना कि चंद आदमियों के एक गरोह ने शीख को क़त्ल करने का इरादा किया है। मैंने फौरी इक़दामात के ज़रिये इस क़त्ल की साजिश को नाकाम बना दिया और उस गरोह को इतना रुसवा किया कि बात शीख के हक़ में तमाम हुई और लोगों ने दहशत गर्दों का साथ छोड़ दिया।

आखिरकार शीख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने मुझे यह इत्मीनान दिलाया कि वह मकबूज़ा इलाकों की वज़ारत के छः निकाती प्रोग्राम को अमल में लाने में अपनी पूरी कोशिश करेगा। फिर भी उसने दो निकात के बारे में ठीक ठाक जवाब नहीं दिया। उनमें से एक मक्का पर कब्ज़ा हासिल करने के बाद खाना काबा का इनहेदाम था। शीख के नज़दीक यह एक बेहूदा और खतरनाक काम था क्योंकि अहले

इस्लाम इतनी जल्दी उसके दावे को तसलीम करने वाले नहीं थे और यही सूरत हज को बुत परस्ती करार देने की थी और दूसरा अमर जो उसके बस से बाहर था वह एक जदीद कुरआन का लिखना था। वह कुरआन के मुकाबिल नहीं आना चाहता था इसके साथ साथ वह मक्का और इसतंबोल के हुक्काम बहुत डरता था और कहता था कि अगर मैंने काबा को ढा दिया और नये कुरआन को लिखा तो इस बात का खतरा है कि उस्मानी हुक्मत एक बड़ी फौज मेरे खात्मे के लिये अरबस्तान भेजे और हम उस पर पूरे न उतर सकें। मैंने उसके बहाने को माकूल समझा और अदांजा लगाया कि इस दौर की सियासी और मजहबी फिजा इस बात को बर्दाश्त नहीं करेगी।

मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब की दावत के बरसों बाद जब छः निकाती प्रोग्राम कामयाबी की पूरी मंजिलें तय कर चुका तो मकबूज़ा इलाकों की वजारत ने इरादा किया कि अब सियासी ऐतेबार से भी जजीरतुल अरब में कोई काम होना चाहिये। यही वजह थी कि उसने अपने उम्माल में से मुहम्मद बिन सऊद को मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब के साथ इश्तेराके अमल पर मामूर किया और इस काम के लिये मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब के पास खुफिया तौर पर एक नुमाइंदा भी भजा ताकि वह उसके सामने हुक्मतें बर्तानिया के मकासिद की तौजीह करे और मुहम्मदैन के मिलकर काम की ज़रूरत पर जोर दे और ताकीद करे कि दीनी उमूर के फ़सले पूरे तौर पर मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब के हाथ में होंगे और सियासी कामों की निगरानी मुहम्मद बिन सऊद की ज़िम्मेदारी होगी। मकबूज़ा इलाकों की वजारत का हदफ़ मुसलमानों के जिस्म व जान दोनों पर अपना असर कायम करना था और तारीख़ इस बात की गवाह है कि सियासी हुक्मतों से देनी हुक्मतें ज़्यादा देरपा और ताक़तवर रही हैं।

इस तरह दीनी और सियासी शख़्सियतों के इत्तेहादे अमल के नतीजे में अंग्रेज़ों का भला हो रहा था और हर आने वाला दिन इस भलाई में इज़ाफ़ा कर रहा था। इन दोनों रहबरों ने नज्द के करीब

“दरअया शहर” को अपना पाया तख्त बनाया। मकबूजा इलाकों की बज़ारत खुफिया तौर पर जी खोलकर उनकी माली मदद कर रही थी। यह बज़ारत की प्लानिंग के तहत हुकूमत को बजाहिर कुछ गुलाम खरीदने थे जो दरअसल मकबूजा इलाकों की बज़ारत ही के कुछ आदमी थे जिन्हें अरबी जुबान पर उबूर हासिल था और जो सेहराई जंगों के फुनून से भी बाकिफ थे। इन तमाम बातों का इंतैजाम भी हमारी हुकूमत ने किया था। मैंने उन अफराद के मिलकर काम करने से जो तादाद में ग्यारह थे इस इस्लामी हुकूमत की दीनी और सियासी राहें मुअय्यन कीं। दोनों मुहम्मद अपने फरायज़ से अच्छी तरह बाकिफ थे और उन तय की जाने वाली राहों पर नपे तुले कदमों से आगे बढ़ रहे थे। यहां यह बात भी काबिले जिक्र है कि कभी कभार उन दोनों के दर्मियान जुजवी तौर पर कशमकश हो जाया करती थी और वहीं उसी वक्त फैसला भी हो जाया करता था और मकबूजा इलाकों की बज़ारत को इसमें दखल की जरूरत पेश नहीं आती थी।

हमने नज्द के अतराफ की लड़कियों से शादियां कीं। हमें इस बात का ऐतेराफ है कि मुसलमान औरतों में मुहब्बत, खुलूस और शौहरदारी की सिफत याकई हैरतअंगेज और काबिले तारीफ है। हम इन रिश्तों के जरिये अहले नज्द के साथ दोस्ती, हम दिली और ताल्लुकात को और ज़्यादा मज़बूत बना सके।

इस वक़्त हम उनके साथ अपनी दोस्ती की मेराज पर हैं। मर्कज़ी हुकूमत तमाम जज़ीरतुल अरब में अपना असर व नफूज कायम करने में कामयाब हो चुकी है। अगर कोई नागवार हादसा रूनुमा न हुआ तो बहुत जल्द इस्लामी सर ज़मीनों पर बिखेरे हुए यह बीज तनावर दरख्तों में तबदील हो जायेंगे और हमें इन से अपने मतलूबा फल हासिल होंगे।



RAZAVI KITAB GHAR

423, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6

Ph.: 011-23264524, Mob.: 9350505879

E-mail : razavikitabghar@gmail.com